राज
कॉमिक्स विशेषांक
संख्या 0127
दुश्मन
सुपर कमांडो ध्रुव
DHEERAJ.
by अनुपम
RAJ COMICS
राज कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA
संस्थापक
श्रद्धांजलि
वर्ष 2021
NAG RAJ
ACTION YEAR

हंसी- किसी के गले से निकले तो दिल को गुदगुदा दे, और किसी के गले से निकले, तो खून को जमा दे-
हा हा हा हा, ध्रुव! ले आया तू वह करोड़ों की पेंटिंग! बहुत अच्छे! बहुत अच्छे! तूने अपनी बहन की जान बचा ली! ला, दे दे मुझे यह पेंटिंग! दे दे!
नहीं, ध्रुव! यह कभी मत करना! क्योंकि अगर तुमने ऐसा किया तो चंडिका हमेशा के लिए बन जाएगी तुम्हारी...
दुश्मन
कथा: जॉली सिन्हा
अनुपम सिन्हा
कांबले
सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

राजनगर के एक छोर पर, आबादी से दूर स्थित यह मानसिक चिकित्सालय, एक हाई सिक्योरिटी जोन में आता है-

क्योंकि इस चिकित्सालय में उन मानसिक रोगों से ग्रस्त कैदियों को रखा जाता है, जिन पर जघन्य हत्याओं का आरोप लगा होता है-

और कानून इनको चाहकर भी कोई सजा नहीं दे सकता है-

जबसे आपको राजनगर के इस मेंटल हॉस्पिटल में शिफ्ट किया गया है, बॉस...

... तबसे हमने भी राजनगर को ही अपना अड्डा बना लिया है! पर यहां का माफिया हमको टिकने नहीं दे रहा है। पिछले हफ्ते हमारे दो आदमी भी मारे जा चुके हैं!

इनकी शिनाख्त करने में पुलिस को पूरे दो दिन लगे हैं! दरअसल ये राजनगर के गुंडे नहीं हैं! कहीं बाहर से आए हैं! और यही बात सारे झगड़े की जड़ लग रही है!

मैं समझ गया! यानी कि राजनगर में बाहर से कोई गिरोह आ गया है। और यहां के गिरोह उसको टिकने देना नहीं चाहते हैं। वही तो मैं सोचूं कि मेरी इतनी कोशिश के बावजूद भी अपराध की वारदातें बढ़ क्यों रही हैं!

NAGAR

मैंने तुमको इसी नई स्थिति को बताने के लिए पुलिस हैड-क्वार्टर बुलाया था...

...ताकि पुलिस फोर्स के साथ साथ तुम भी इन गुंडों से निपटने के लिए कमर कस लो!

मैं आज ही शहर के सारे पशु और पक्षियों से हर जगह नजर रखने के लिए कह देता हूं, ताकि किसी भी वारदात की खबर मुझ तक तुरंत पहुंच जाए!

मैं इन कीड़ों को राजनगर में तो क्या, कहीं पर भी नहीं पनपने दूंगा पापा!

राजनगर में आए इस भूचाल को लाने वाले ही इस भूचाल से बचने की कोशिश कर रहे थे-
तुम्हारे इस तरह असफल होने का क्या कारण है, हारून शाह ? तुम एक मामूली गिरोह को काबू में नहीं कर पा रहे हो! अब तक हम राजनगर में शांति से अपने धंधे चलाते आ रहे हैं! इस खून-खराबे से हम पुलिस और ध्रुव की नजर में आ जाएंगे! और फिर तुम जानते ही हो कि क्या होगा? हम ध्रुव से टकराना नहीं चाहते!...

मैं तुमको यह समस्या सुलझाने के लिए एक मौका और देती हूं! उसके बाद इस समस्या से सीधे हम निपटेंगे!

थैंक... थैंक्यू मैडम नताशा! थैंक यू... इस समस्या को तो मैं बहुत पहले निपटा लेता, पर यह पता नहीं चल पा रहा है कि इस गैंग का लीडर कौन है?
अभी हम इस गिरोह के आदमियों को मारकर इस पेड़ की सिर्फ डालें तोड़ रहे हैं। एक बार इसके मुखिया का पता चल जाए तो उसको मारकर हम पेड़ को जड़ से ही काट सकते हैं! म...मैं जल्दी ही उस जड़ का पता लगा लूंगा!

अगर पता लगाकर उसे खत्म कर दोगे तो अपनी जिन्दगी को बढ़ा लोगे हारून...
...अब जाओ! तुम्हारे पास सिर्फ दो दिनों का वक्त है!
ओ थैंक्यू! थैंक्यू मैडम!

हारून शाह को मुखिया को ढूंढ़कर मारने का मौका जल्दी ही मिलने वाला था—
क्योंकि वह मुखिया अब छिपकर रहने का इरादा छोड़ चुका था—
डॉक्टर चड्ढा! आ गया आपका मरीज!
मरीज नंबर वन बोलो गॉर्ड! मैं डॉक्टर साहब का चहेता मरीज हूं न! इसीलिए तो इन्होंने मुझे यहां बुला लिया है, अपने पास! है न डॉक्टर साहब?
हुम! शटअप!
इसको बिजली के झटके देने पड़ेंगे गॉर्ड! पता नहीं कानून ऐसे पागल कातिलों को जिन्दा क्यों छोड़ देता है?
ये अपराध करने के लिए जिन्दा रहते हैं और इलाज हम को करना पड़ता है!
इसको बेड पर बांध दो!
गॉर्ड, बंधे विदूषक को लेकर जैसे ही आगे बढ़ा—
विदूषक चौंक उठा—
अरे! गॉर्ड साहब! ये देखो! नीचे क्या हो रहा है?
क्या हो रहा है?
कहां कुछ हो रहा है? मुझे तो कुछ नहीं दिख रहा!
देखो! नीचे देखो!...
...और देखते रहो! देखते रहो! देखते रहो!
गर्दन खिड़की के बीच में दबते ही गॉर्ड की सांस की नली दब चुकी थी।
आऽऽऽ अक्!

विदूषक की यह हरकत देखते ही डॉक्टर चढ्ढा तेजी से दरवाजे की तरफ लपके-
लेकिन उनको बीच में ही रुक जाना पड़ा-
विदूषक गॉर्ड के होलस्टर से पिस्तौल निकाल चुका था-
न न न! भागना मत डॉक्टर साहब! नहीं तो मेरा निशाना चूक जाएगा! भागना मत!

कुछ ही पलों में विदूषक अपने आपको हथकड़ी से आजाद करा चुका था-
भा... भागने की कोशिश मत करना विदूषक!
ये हाई सिक्योरिटी अस्पताल है! तुम... तुम यहां से कभी भाग नहीं पाओगे!
मैं भागूंगा ही नहीं! ही ही ही ही! धीरे-धीरे चल-कर जाऊंगा! ...
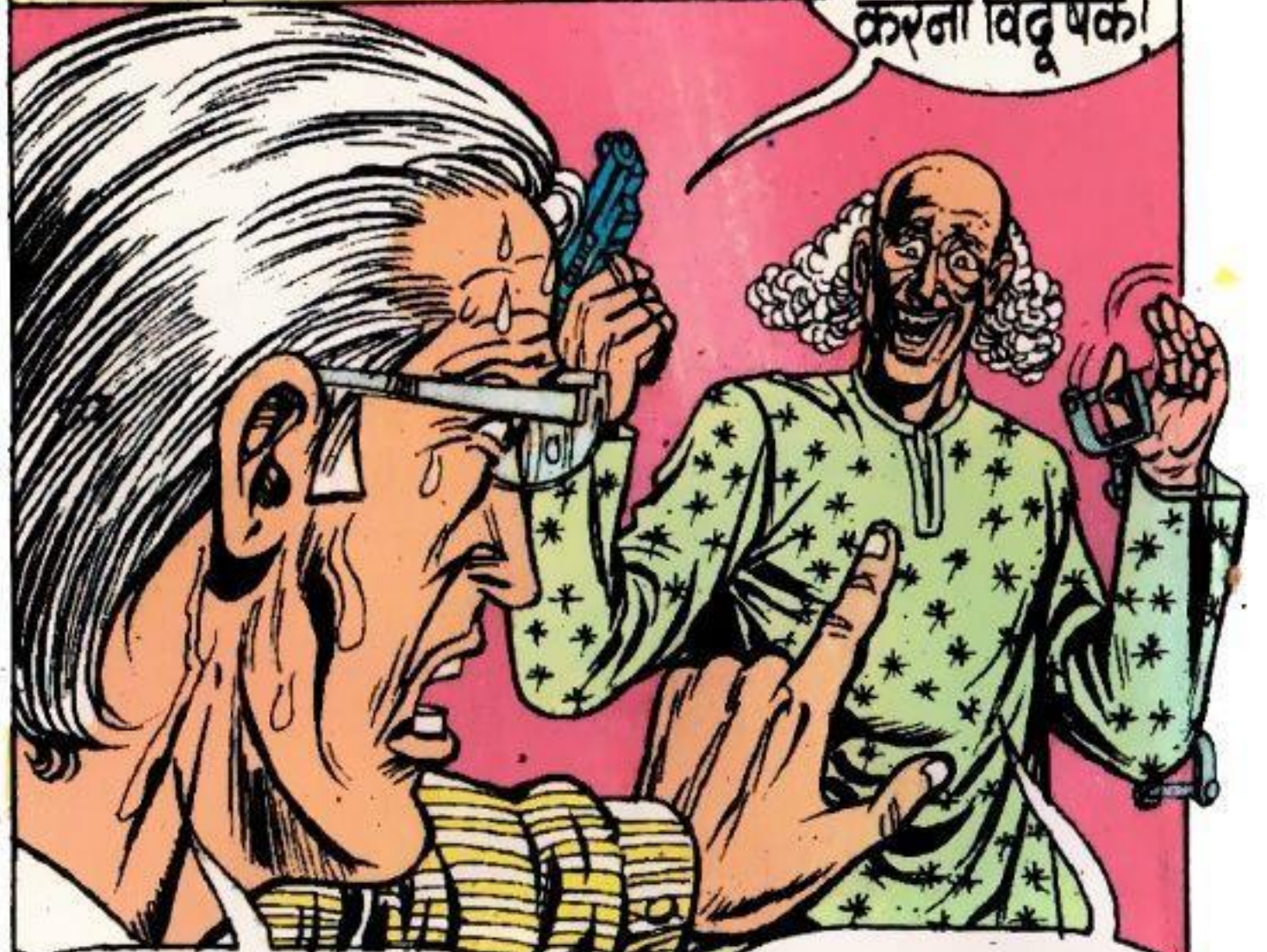
... हुम! अब मैं क्या करूं? क्या करूं? हां हां! ये इंजेक्शन! इसे अगर तुझे लगा दूं तो?
न... नहीं, नहीं! इसे अगर ठीक ठाक इन्सान को लगा दिया जाए तो वह पागल हो सकता है!
तो तू इसे मुझे क्यों लगाने जा रहा था?
मुझे पागल करना चाहता था क्या?

अच्छा, देखते हैं कि तू सच बोल रहा है या झूठ! इंजेक्शन लगाकर देखते हैं!
आऽऽऽह! नहीं!
घच्चप

हां! तू सच कह रहा था! मुझे लग रहा है कि तू थोड़ा-थोड़ा पागल होता जा रहा है! ... अब मैं तेरा क्या करूं? आहा! ये रुई! और ये टेप! समझ गया!
सबसे पहले ये उस्तरा चलेगा!
उस्तरा! उस्तरा!
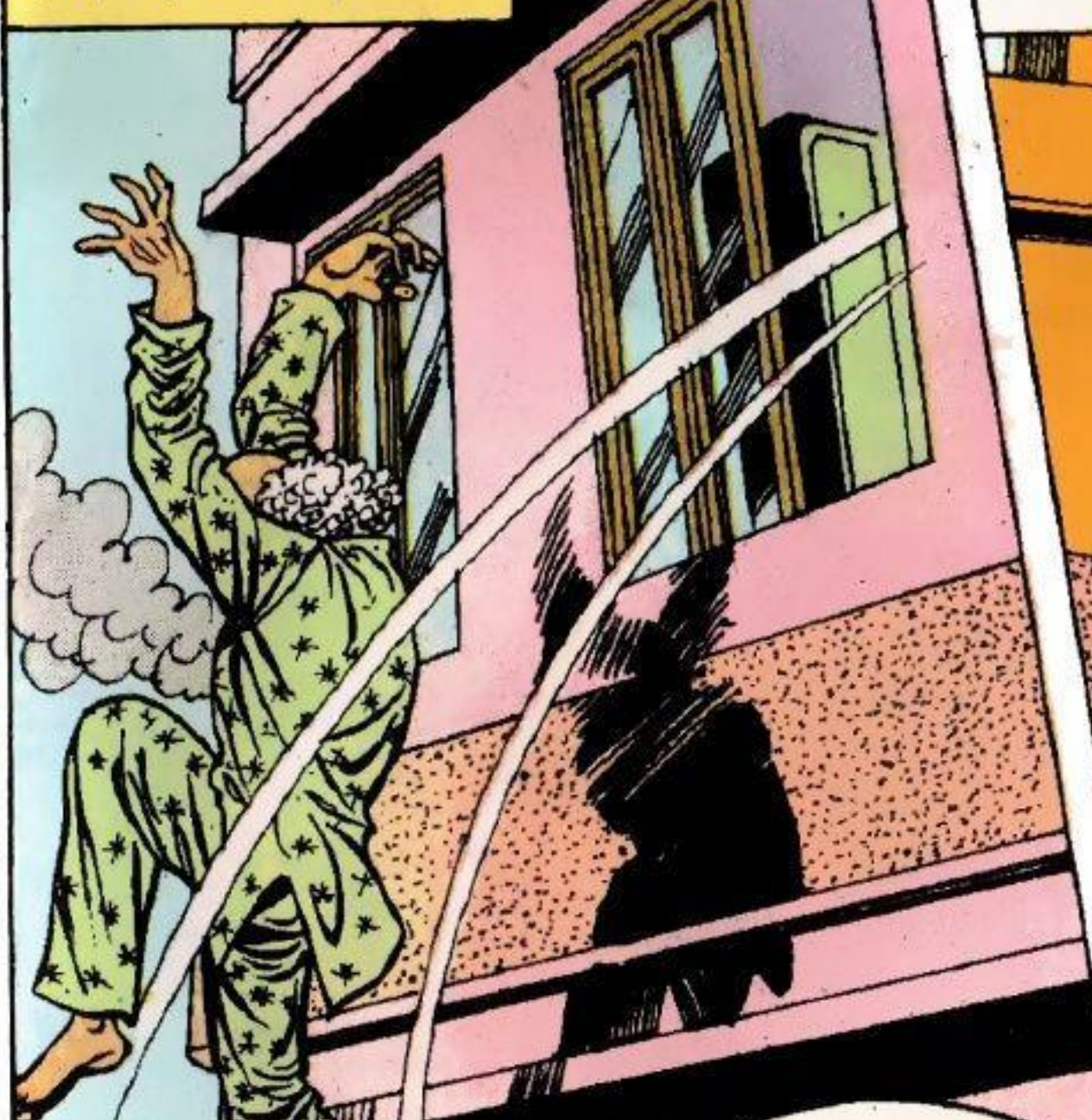
और फिर थोड़ी देर बाद जब विदूषक खिड़की से बाहर कूदा तो सतर्क गॉर्डों की आंखों से बच नहीं पाया-
रफीक! उधर देख! डॉक्टर चड्ढा के क्लीनिक की खिड़की से कौन बाहर कूद रहा है?
यह तो विदूषक लग रहा है! और... और ये भागने की कोशिश कर रहा है!
रुक जाओ, विदूषक! वरना हम कुत्ते छोड़ देंगे!
छोड़ दो! मैं छूट गया! उनको भी छोड़ दो!
विदूषक, चेतावनी सुनकर भी नहीं रुका-
और कुत्ते उसके पीछे लपक पड़े-
वाऊऊ
चारदीवारी के पास पहुंचते-पहुंचते कुत्तों ने भागते विदूषक को धर दबोचा-
और गॉर्डों के पहुंचने तक उसको भंभोड़कर उसका बुरा हाल कर दिया-
हटो, हटो कहीं यह मर न जाए!
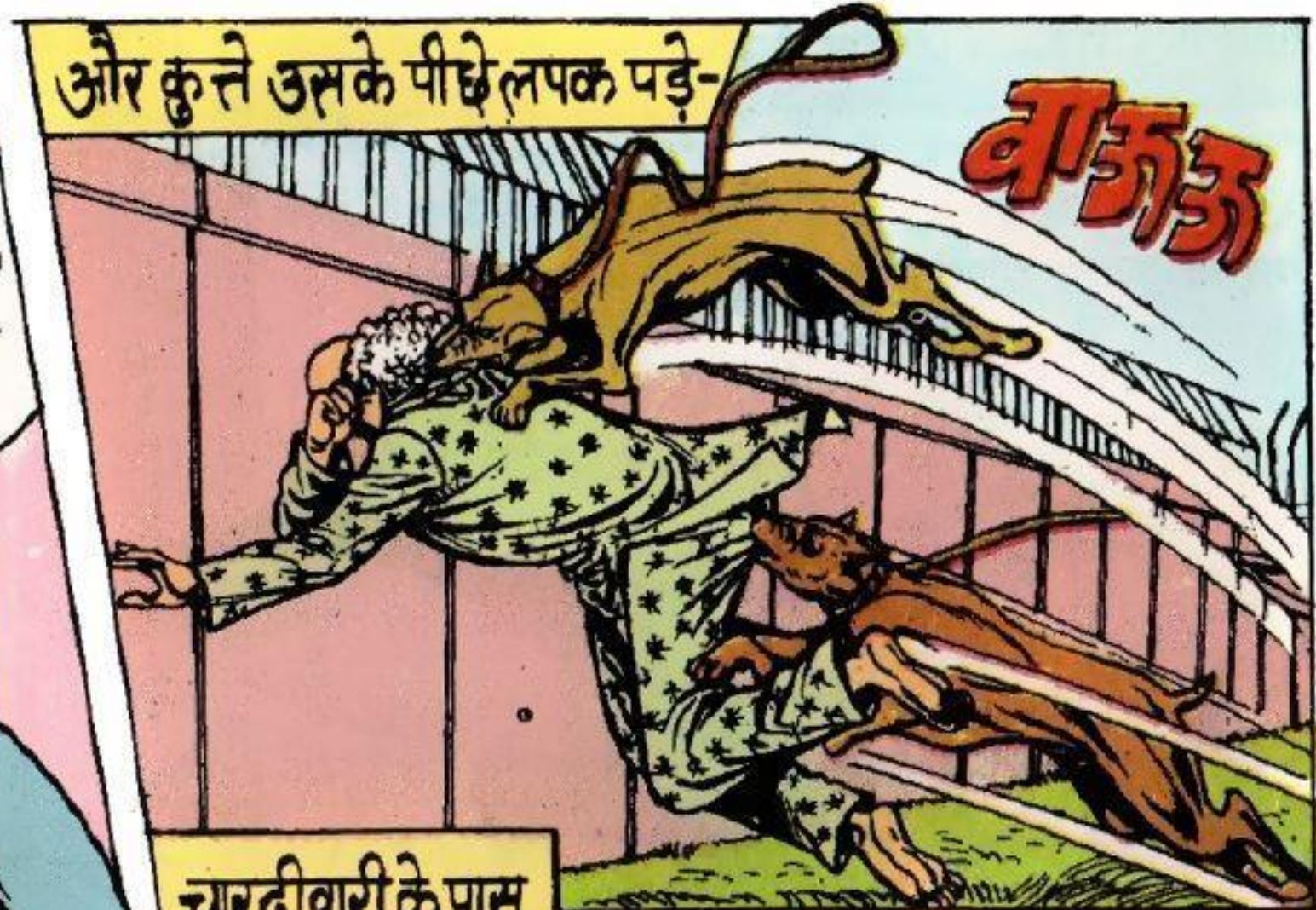
देख, रफीक! ये जिन्दा है... या मर गया?
पलटकर देख इसे!
रफीक ने बालों को जैसे ही हाथ लगाया वह चौंक उठा-
जिन्दा है, पर...
इसके बाल तो... बाल नहीं हैं! रूई है!

रूई से बने नकली बाल! यानी ये विदूषक नहीं है! फिर कौन है ये?
अभी पता चल जाता है!
रफीक ने औंधे पड़े उस व्यक्ति को पलटा-

और दोनों चौंक उठे-
ये तो डॉक्टर चड्ढा हैं! किसी ने उस्तरे से इनके बाल साफ करके उस पर रूई के बाल लगा दिए हैं। विदूषक जैसे!
ओह! पर...पर ये विदूषक के भेष में क्यों भाग रहे थे? हमारी चेतावनी सुनकर भी रुके क्यों नहीं...
... यह जरूर विदूषक का ही किया धरा है!
चेक करो कि वह अपने सेल में है या नहीं! और अगर नहीं हो तो खतरे का अलार्म बजा दो!

विदूषक के तो अपने सेल में होने का सवाल ही नहीं था। कुछ ही देर में पूरे अस्पताल परिसर में सायरन की आवाज गूंज रही थी। मेन गेट पर भी-
ये सायरन! कोई पागल सेल से भाग गया है क्या?
ओह! पता नहीं ये पागल भागने की कोशिश क्यों करते हैं!

इतने सुरक्षित इलाके से भाग पाना असंभव है! वैसे तुम कहां जा रहे हो?
चीफ मेडिकल ऑफीसर की बीवी ने कुछ सब्जी मंगाई है! वही खरीदकर देने जा रहा हूं!
जा भईजा! बहुत जरूरी काम है!

पर ये गॉर्ड था कौन? शक्ल तो जानी-पहचानी लग रही थी...
...पर नाम याद नहीं आ रहा है!
खैर, जाने दो, याद आ जाएगा!
विदूषक आजाद हो चुका था-
VOLVO VAN

और राजनगर पर एक नया खतरा मंडराने लगा था-
बॉय, श्वेता! याद रखना! शाम की पांच बजे!
याद है, याद है! ओ० के० बॉय शांतनु!
?

हो ऽऽऽ कोई न रोको दिल की उड़ान कोऽऽऽ दिल वो चला... अहाऽऽऽ
श्वेता!

ओ भइयाऽऽऽ आज तुम घर पर ही हो? नो वर्क आज?
वह लड़का कौन था, जो तुझे छोड़ने आया था?

वो... वो शांतनु है भइया! मेरे ही कॉलेज में पढ़ता है! बी.ए. थर्ड इयर में! मेरा... मेरा फ्रेंड है वो!

श्वेता, अब तू कॉलेज में पहुंच गई है! तेरी जिन्दगी का एक नया दौर शुरू हो गया है! और... इस दौर में मस्ती करने के साथ-साथ, दोस्त चुनने में सावधानी बरतने की भी जरूरत है!

टपटप

मैं जानती हूं भइया! अब मैं बच्ची नहीं रही कि मुझमें दोस्त चुनने की भी तमीज न हो! शांतनु बहुत अच्छा लड़का है!

यह तो उसकी शक्ल से ही लगता है! मुझे वह लड़का अच्छा नहीं लगा श्वेता!

पर मुझे अच्छा लगा! बहुत अच्छा लगा! और कान खोलकर सुन लो, मिस्टर भइया, तुमको मेरे दोस्तों पर कमेंट करने की कोई जरूरत नहीं है! मुझे जो अच्छा लगेगा, मैं वही करूंगी। ऐंड दैट्स इट!

हैं?

ओहो! बात समझने की कोशिश कर श्वेता...

ध्रुव बिना कोई वक्त खोए राजनगर की सीमा पर स्थित मेंटल हॉस्पिटल की तरफ बढ़ चला-

हां, करीम! अब बताओ कि यह विदूषक कौन है? सिर्फ एक अपराधी के भाग निकलने से इतना हंगामा कैसे खड़ा हो गया?

और अगर ये इतना खतरनाक अपराधी है तो मैंने पहले कभी इसका नाम क्यों नहीं सुना?
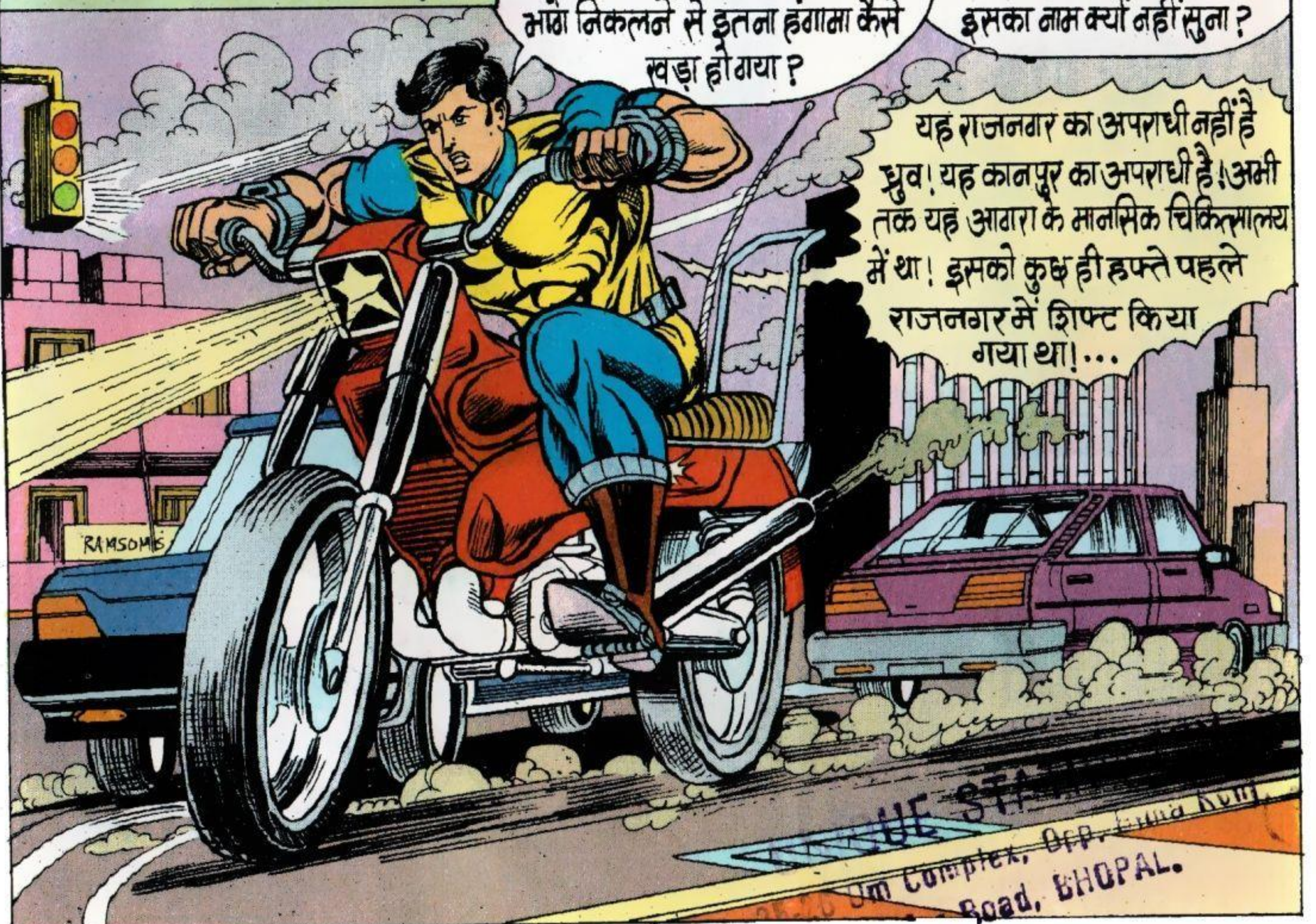
यह राजनगर का अपराधी नहीं है ध्रुव! यह कानपुर का अपराधी है! अभी तक यह आगरा के मानसिक चिकित्सालय में था! इसको कुछ ही हफ्ते पहले राजनगर में शिफ्ट किया गया था!...

... इसकी पांच लोगों की नृशंस हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। पर इसने अपने को गिरफ्तार करने गई स्पेशल पुलिस टीम को ही बम से उड़ा दिया! उसी धमाके में यह भी घायल हो गया और संयोगवश पकड़ लिया गया!
ओह! मुझे अब जरा इसके अपराध करने का तरीका भी बताओ? किस टाइप के अपराध करता है यह विदूषक?

मेरे कंप्यूटर में इसकी पूरी फाइल है, ध्रुव! यह पहले मेलों में कॉमेडी शो किया करता था! पर ज्यादा सफलता नहीं मिली! तब इसने क्लबों, सर्कसों और टी॰वी॰ शोज में कोशिश की! एक टी॰वी॰ प्रोड्यूसर ने प्रोग्राम न बिक पाने के कारण इसको पैसा नहीं दिया तो इसने उसकी हत्या कर दी!
यहीं से इसका अपराध सफर शुरू हुआ! और फिर यह धीरे-धीरे अंडरवर्ल्ड का बादशाह बन गया! यह एक कुशल कलाकार और विक्षिप्त दिमाग वाला इन्सान है! इसके अपराध जोकरों की तरह होते हैं। और यह लाफिंग गैस का इस्तेमाल करता है!
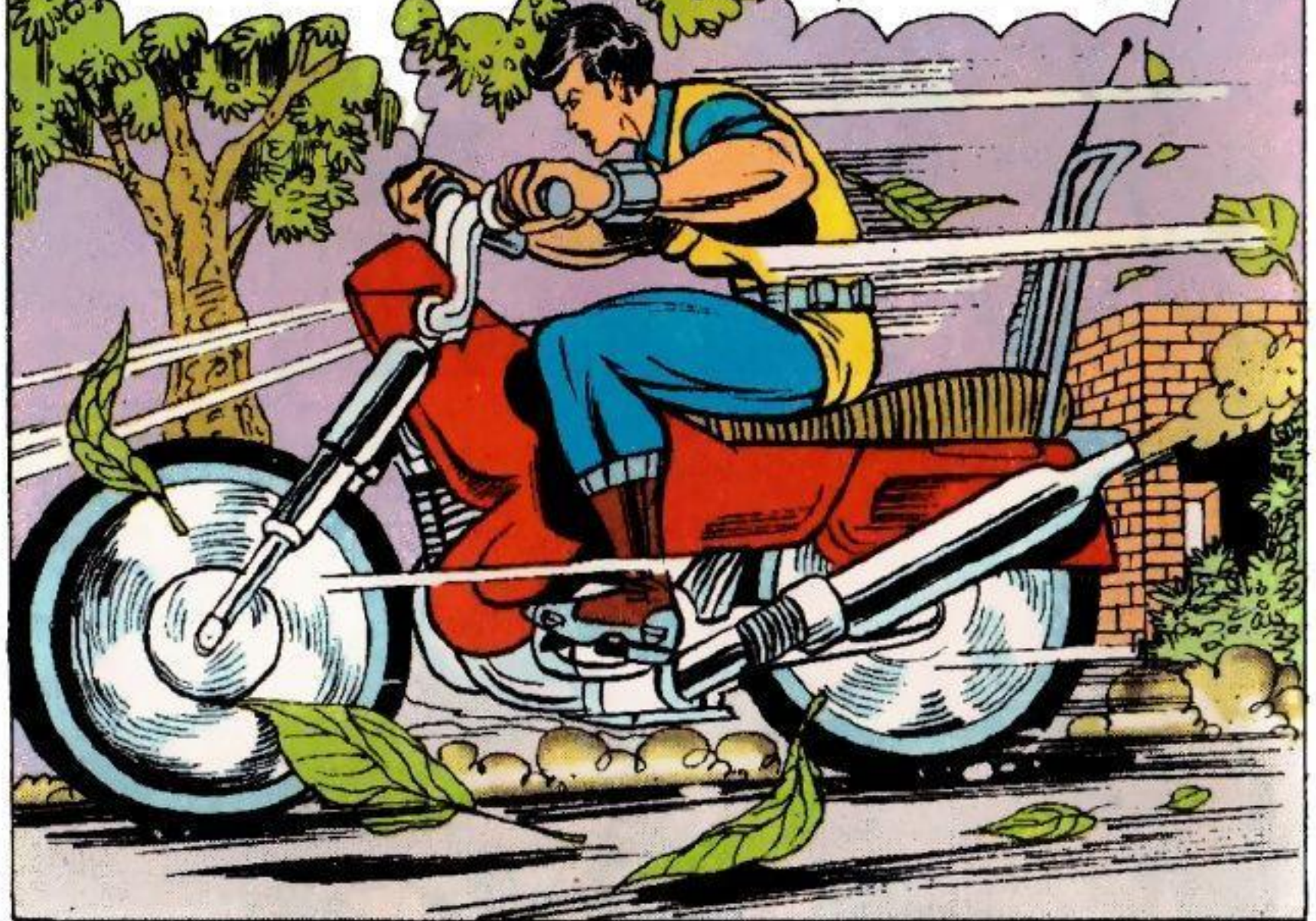
बस, इतना काफी है करीम! बाकी मैं खुद पता कर लूंगा! अब मैं मेंटल एसाइलम वाली सड़क पर पहुंच गया हूं! ओवर!
सामने से राजनगर मेंटल एसाइलम' की एक जीप आ रही है! इसमें बैठे लोगों से पता चल सकता है कि एसाइलम में क्या हुआ था?
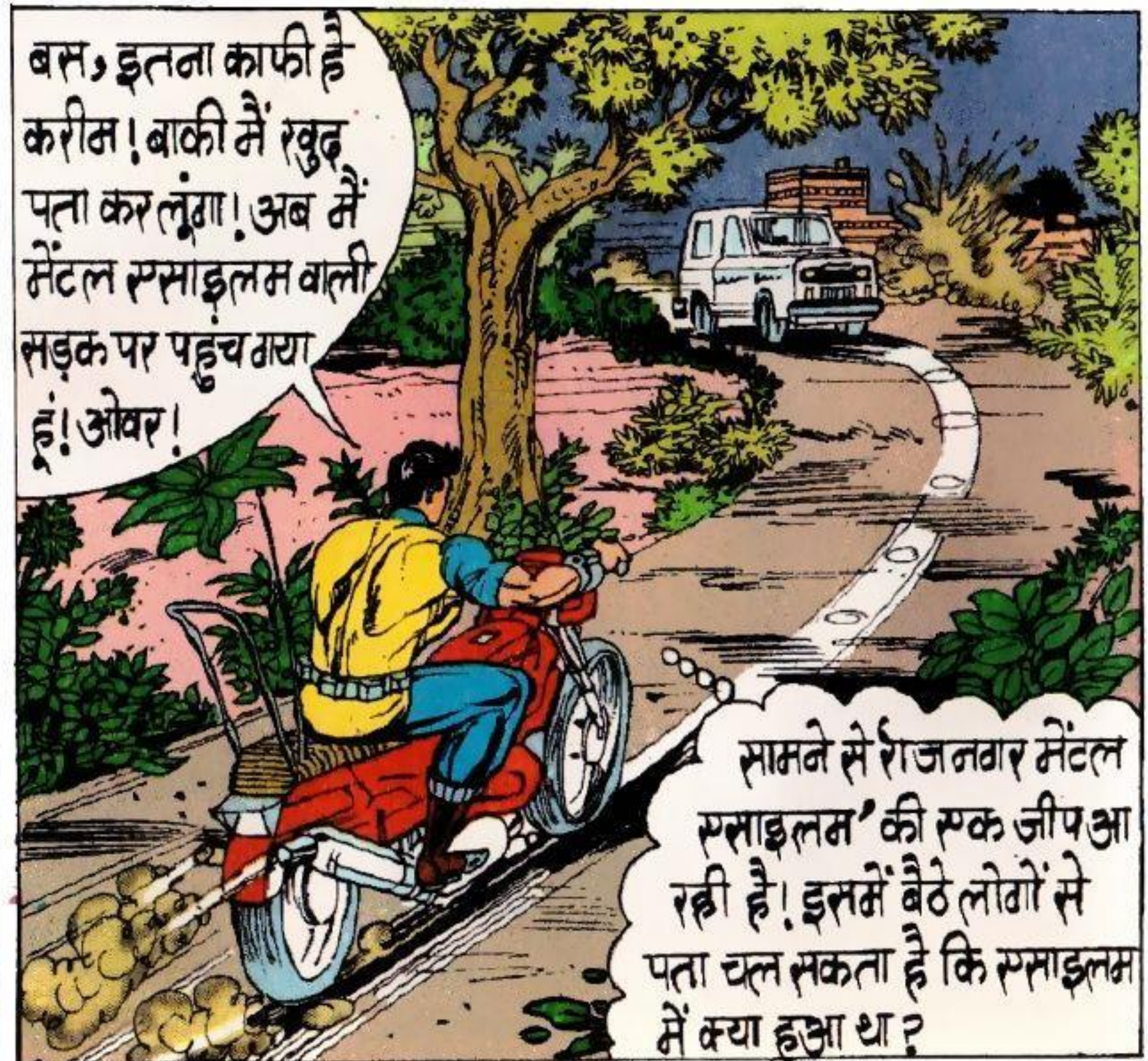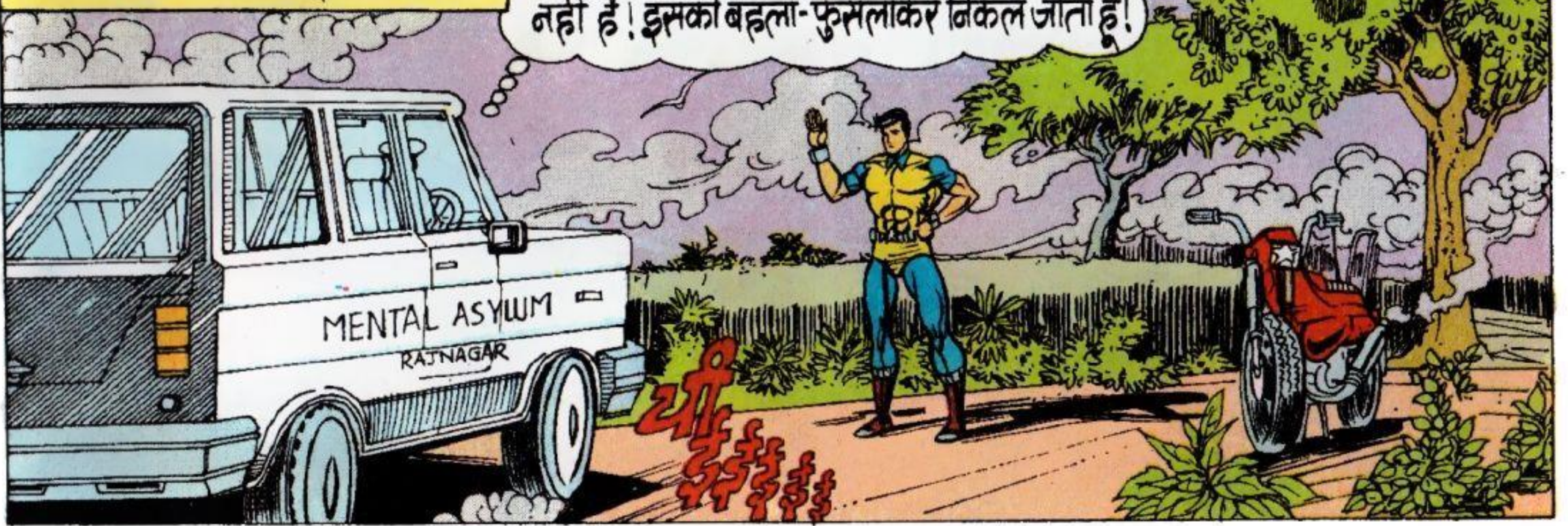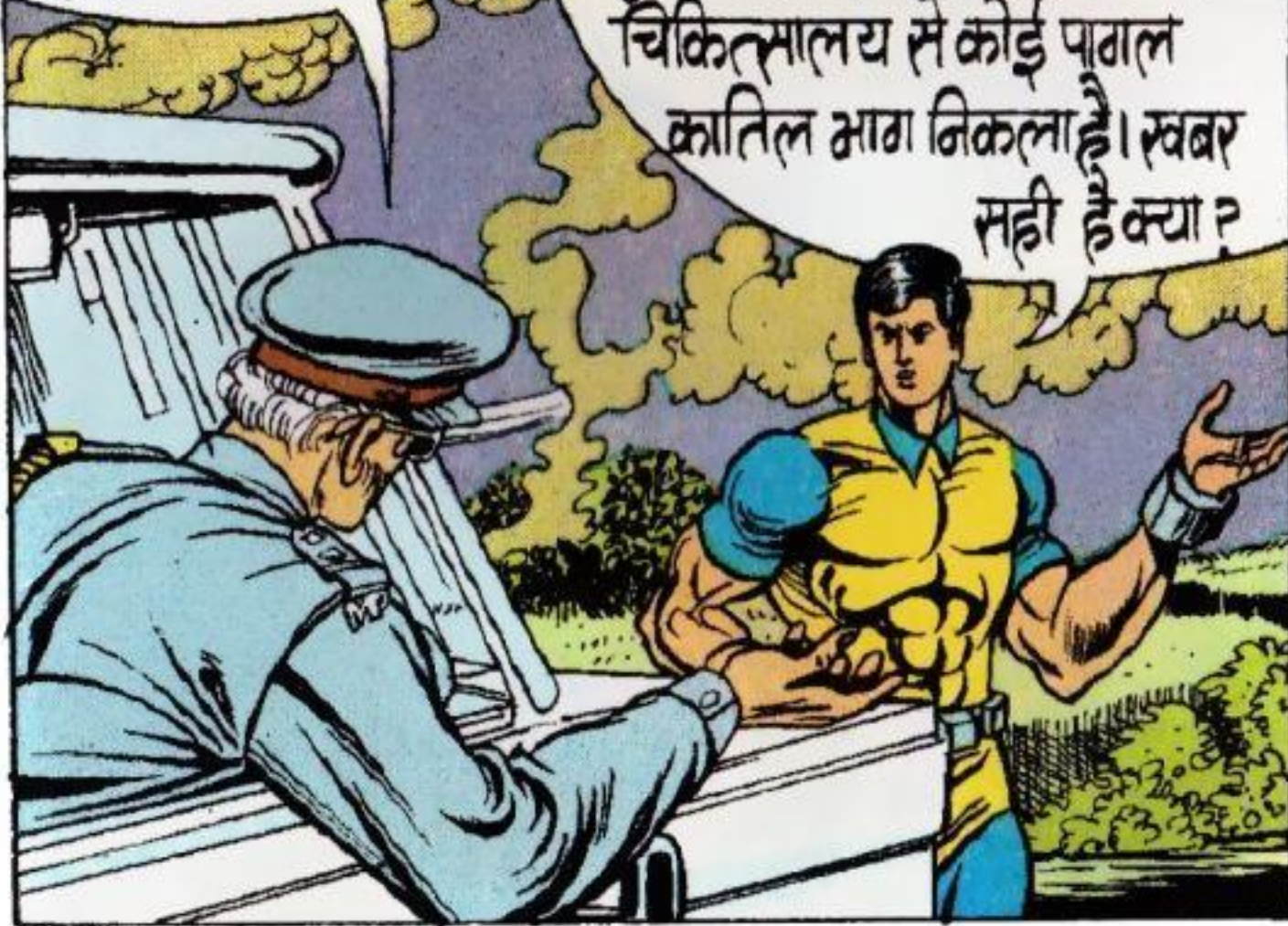
सुपर कमांडो ध्रुव है ये? बाप रे बाप! अच्छा हुआ मैंने इसको टक्कर नहीं मारी! इसे पहली बार देख रहा हूं, पर इसके बारे में बहुत सुन रखा है! इससे दूसरी तरह से निपटना होगा!

सॉरी, ध्रुव! मैं तुमको पहचानता नहीं हूं न! खबर एकदम सही है! मैं भी उसी काम के लिए पुलिस हैडक्वार्टर जा रहा हूं!

पुलिस हैडक्वार्टर? पर क्यों? पुलिस को तो खबर हो चुकी है! पुलिस अब आती ही होगी!

मालूम है! पर मैं तो पुलिस को बुलाने नहीं, बल्कि कमिश्नर साहब से मिलने जा रहा हूं!

ध्रुव ने बॉक्स को खोलना तो बहुत सावधानी से चाहा था-
लेकिन उसके हाथ लगाते ही बॉक्स की 'लिड' एक झटके से खुल गई-
कट
और अगले ही पल, ध्रुव के जबड़े से एक स्प्रिंग से जुड़ा घूंसा आ टकराया-
वार एक तो जोरदार था, और दूसरे अप्रत्याशित था-
इस कारण ध्रुव का दिमाग कुछ पलों के लिए अंधेरे में डूब गया-
और विदूषक को भागने का साफ रास्ता मिल गया-
हा हा हा! गुड बाय ध्रुव! अच्छा हुआ कि मैं भागते वक्त स्टोर रूम से अपने वे कपड़े और यंत्र भी लेता आया जो मैंने अपनी गिरफ्तारी के समय पहने हुए थे!
और जो हर उस 'मेंटल हॉस्पिटल' में ट्रांसफर कर दिए जाते हैं जहां पर मुझे शिफ्ट किया जाता है!
MENTAL
पर मुझे एक बात का बहुत अफसोस है, ध्रुव! और वह ये कि तेरे जैसे महान क्राइम फाइटर से मेरी पहली मुलाकात तेरी आखिरी मुलाकात बन जाएगी!
ही ही ही ही! वेरी सॉरी, वेरी सॉरी, वेरी सॉरी भई! वेरी सॉरी!
क्या मतलब था विदूषक की इस बात का?
अह!
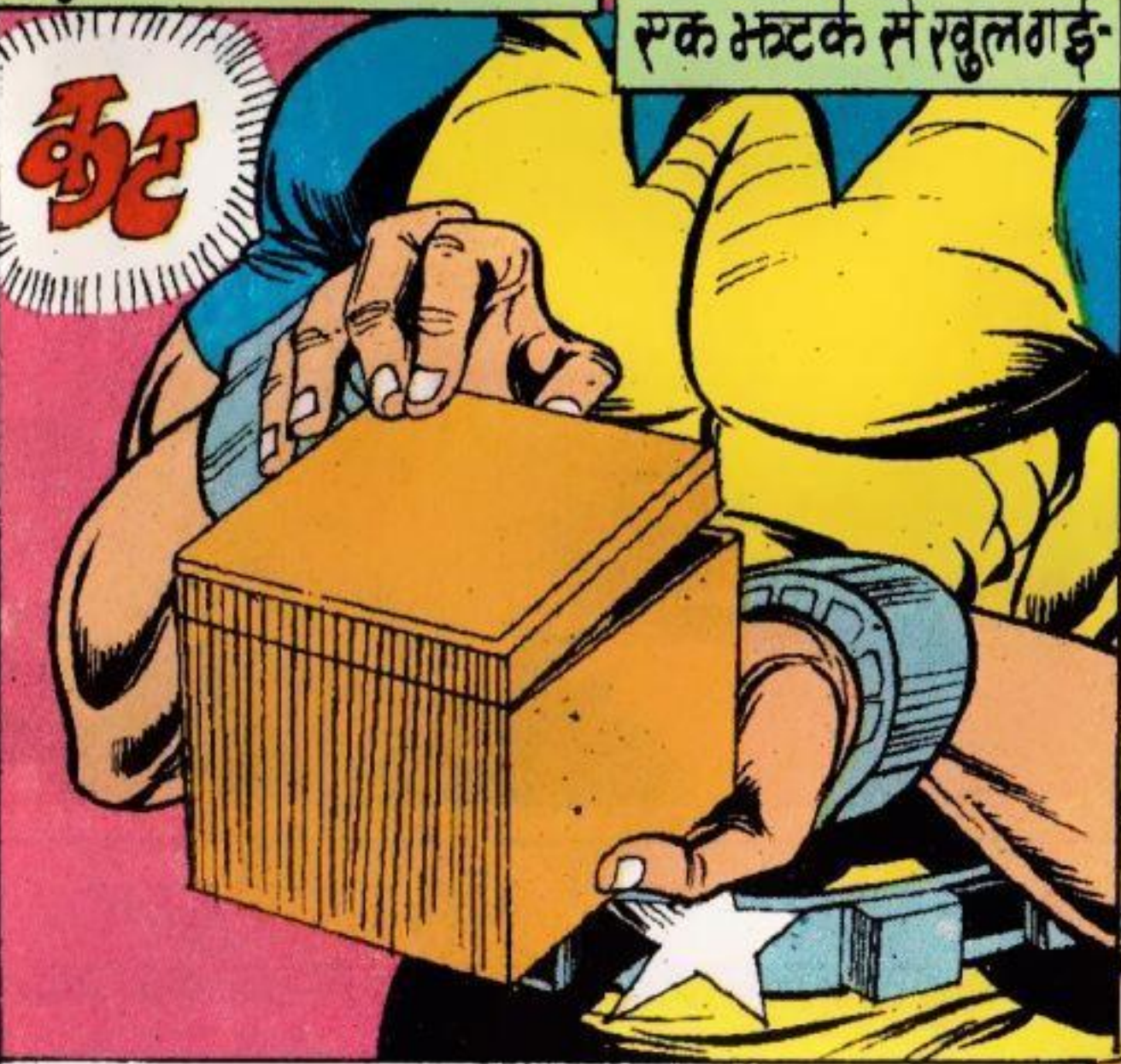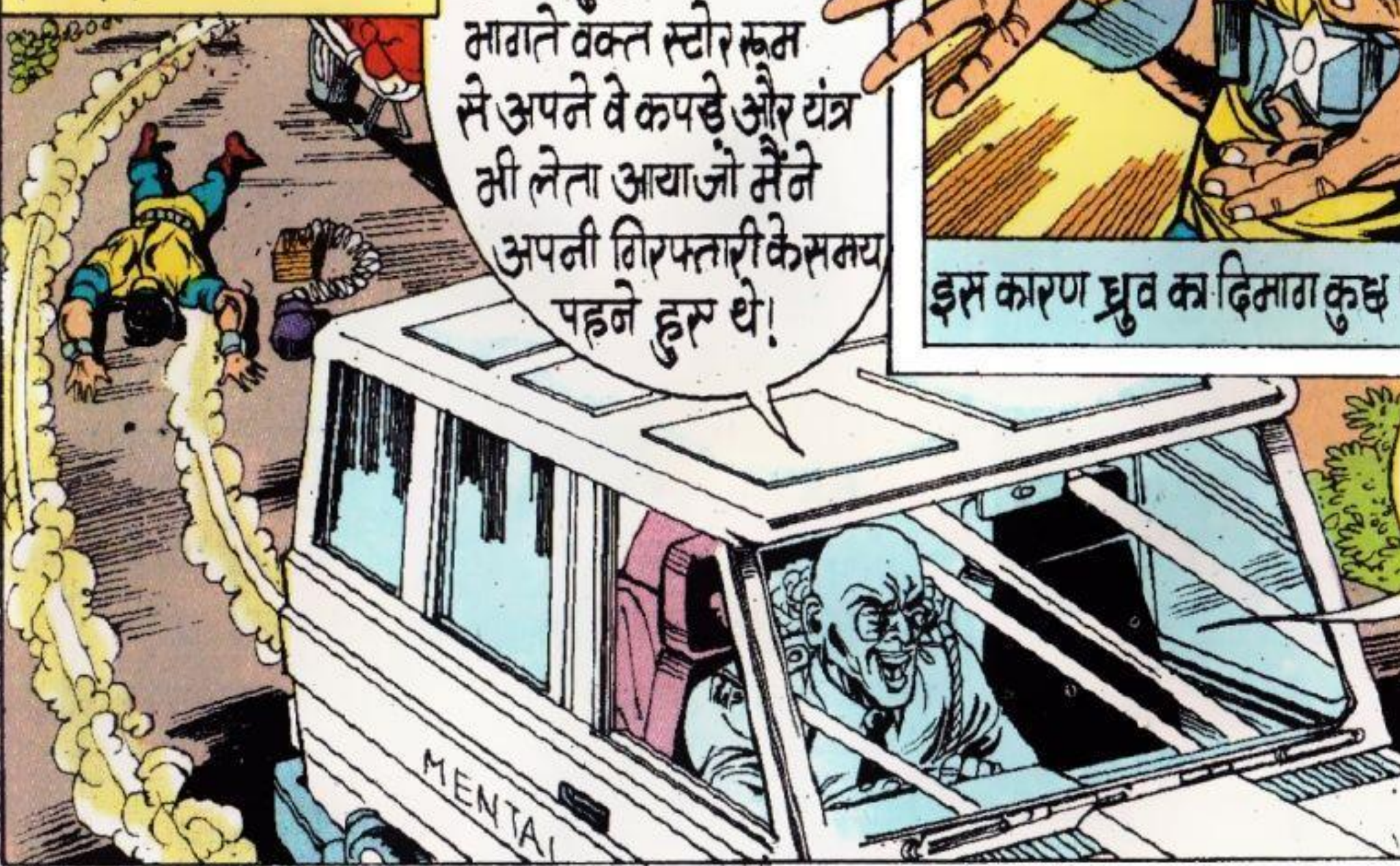
मतलब जो भी था वह ध्रुव को जल्दी ही समझ में आने वाला था-
आह!... अभी भी सर चकरा रहा है! मुझे पहले ही भांप लेना चाहिए था कि वह गॉर्ड के रूप में विदूषक ही होना चाहिए था! खैर, अभी भी मैं मोटरसाइकल पर उसका पीछा...
टिक टक टिक टक
... अरे... घड़ी की 'टिक-टॉक' की आवाज कहां से आ रही है? मैं घड़ी तो पहनता नहीं!
आवाज इस 'ग्लव' के अन्दर आ रही है। यानी इस ग्लव में...
टिक टॉक टिक टॉक टिक टॉक
...बम है!
ध्रुव को इतना ही वक्त मिल पाया कि वह किसी चीज की आड़ को ढूंढ़ सके-
इस धमाके ने ध्रुव के शरीर को हवा में उछालकर कसकर पेड़ से टकरा दिया-
ओफ़ऽऽऽ
लेकिन इससे पहले कि वह पूरी तरह से सुरक्षित हो पाता बम एक कर्णभेदी धमाके के साथ फट पड़ा-

कुछ ही पलों बाद ध्रुव अपनी मोटर साइकल पर विदूषक के पीछे उड़ा जा रहा था-

शुक्र है कि धमाके ने मेरी मोटर साइकल को ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचाया था।
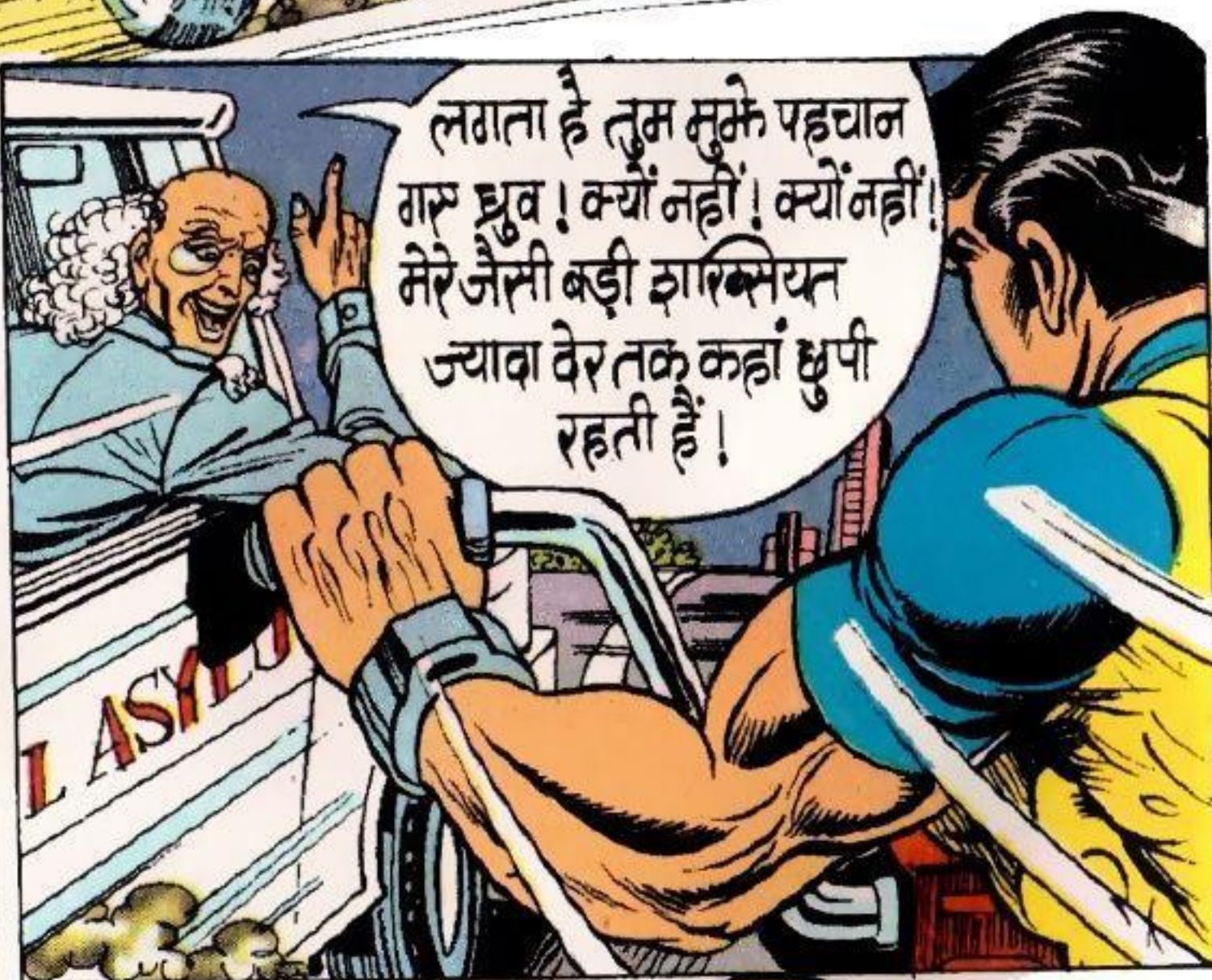
वह अभी ज्यादा दूर नहीं पहुंचा होगा। इससे पहले कि वह आबादी वाले इलाके तक पहुंचे मुझे उसे पकड़ लेना होगा।

विदूषक को यह उम्मीद कतई नहीं थी कि ध्रुव उसके वार से जिन्दा बच गया होगा-

अरे! मैं बेकार ही शोक मना रहा था। यह तो बच गया। ही ही ही। मजा आ गया। मैं तो इसे एक इनिंग वाला वन-डे मैच समझ रहा था। यह दो-दो इनिंग वाला टेस्ट मैच निकला।

लगता है तुम मुझे पहचान गए ध्रुव! क्यों नहीं! क्यों नहीं! मेरे जैसी बड़ी शख्सियत ज्यादा देर तक कहां छुपी रहती हैं।

बताओ! मेरे पीछे भिखमंगे की तरह क्यों लगे हो?

कहानी 19 पेज से जारी
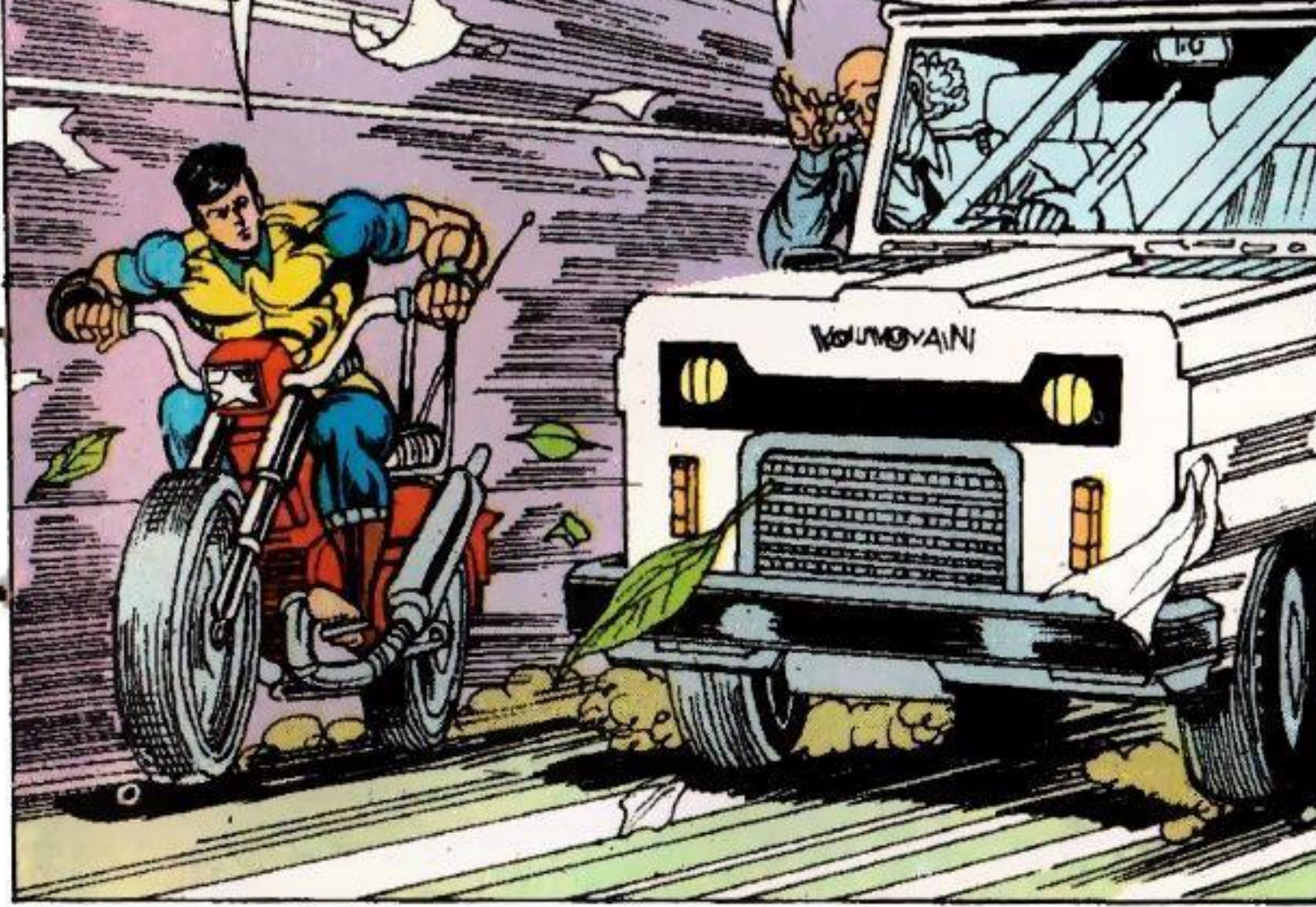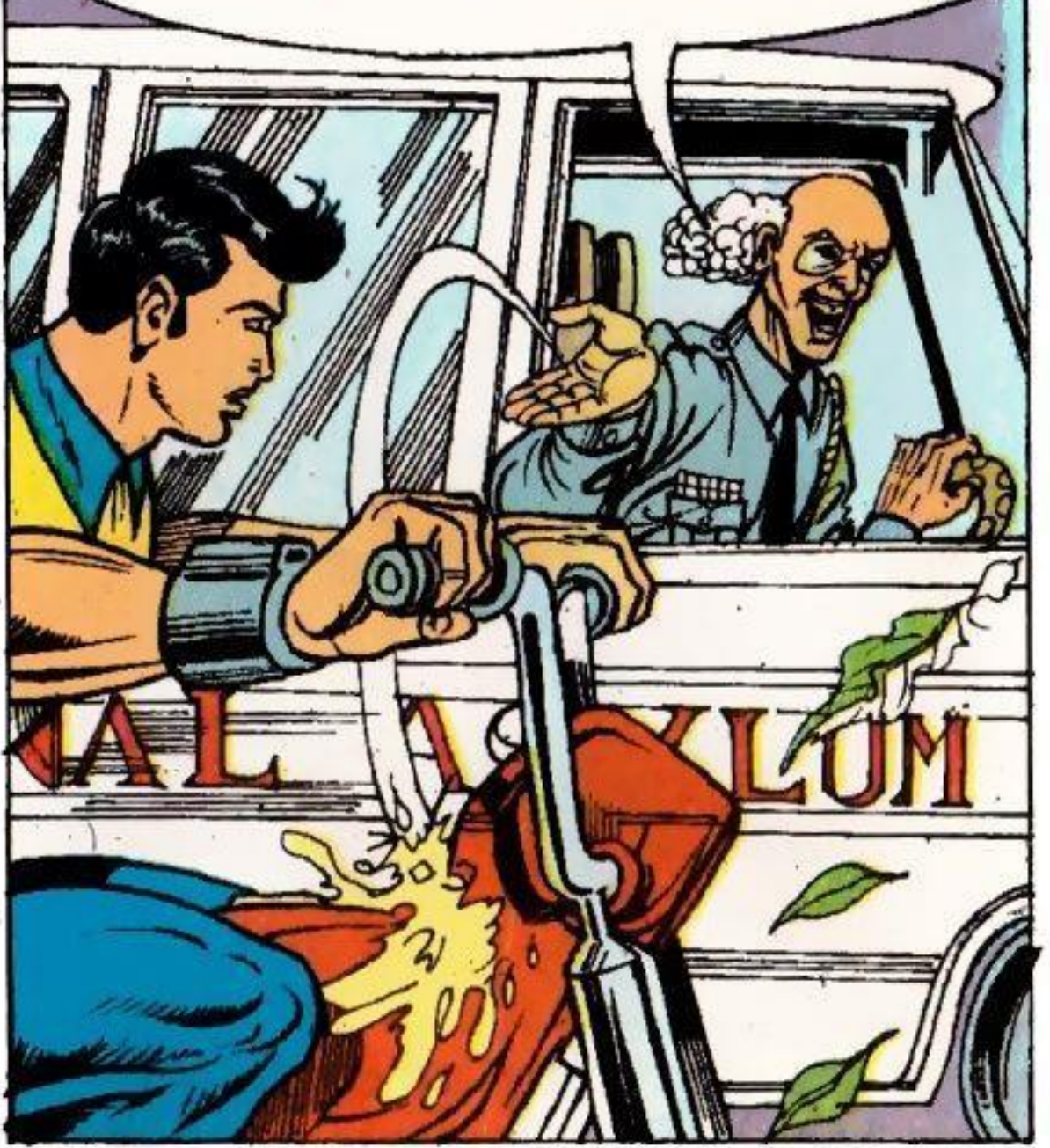
मोटर साइकल पर गिरते ही तेल आश्चर्यजनक तेजी से फैलने लगा-

?

और ध्रुव की चलती मोटरसाइकल के सभी पेंच खुलकर गिरने लगे-

अरे!

ही ही ही ही! देखा, ध्रुव? अब तुम्हारी मोटर साइकल बिल्कुल भी आवाज नहीं कर रही है। फिर कोई तकलीफ हो तो 'विदूषक गैराज' में आ जाना! फिर मिलेंगे!

MENTAL ASYLUM

मुझसे पीछा छुड़ाना इतना आसान नहीं है विदूषक! तुम्हारा पीछा तो मैं दुनिया के दूसरे छोर तक नहीं छोड़ूंगा!

ध्रुव ने अपने जूतों में फिट स्केट्स के पहिए बाहर निकाले-

और विदूषक का पीछा एक बार फिर शुरू हो गया-

जीप के कुछ ही दूर पहुंचते ही उसका टायर पंचर हो चुका था-

अब तू मुझे गुब्बारों से रोकेगा, विदूषक? तेरा दिमाग सचमुच चल गया है! तुझे तो पागलखाने पहुंचाना ही पड़ेगा!

ये गुब्बारा भी मेरी ही तरह पागल हो गया है ध्रुव!...

...क्योंकि इसमें मैंने दो खास केमिकल गोलियां डाल दी हैं। उन दोनों केमिकलों के मिलने से एक गैस बनती है...

...बहुत तेजी से बनती है! और सुपर इलास्टिक 'प्लास्टो-रबर' से बने इस गुब्बारे में भरती जाती है, भरती जाती है, भरती जाती है!

और हां! इससे लड़ने की बेकार कोशिश मत करना! यह बुलेटप्रूफ भी है और एसिड प्रूफ भी!

यह तो मैंने भी चेक करके देख लिया कि यह सच बोल रहा है!

इस गुब्बारे ने तो ऊपर तक का भी रास्ता घेर लिया है! दूसरे रास्ते से घूमकर जाने में काफी वक्त लगेगा, और उतनी देर में विदूषक रफूचक्कर हो चुका होगा!

इस गुब्बारे को रास्ते से हटाने का कोई तो तरीका होगा!

हां, हां! है न! एक बहुत सिम्पल तरीका है!
गुब्बारे में लगी गांठ मेरी तरफ ही है! इसको खोल दूं तो वैसे ही काम हो जाएगा!
ध्रुव को गांठ खोलने में थोड़ी मेहनत तो जरूर करनी पड़ी-
आऽऽह!
लेकिन गांठ खुलते ही उसमें से तेजी से गैस बाहर निकलने लगी-
और उस गैस का विपरीत धक्का लगते ही-
'जेट प्रभाव' से विशाल गुब्बारा भागते विदूषक की तरफ लपका-
और विदूषक टक्कर खाकर दूर जा गिरा-
अब, विदूषक! अब कहां भागोगे?
अब कहां भागना है ध्रुव? अब तो मैं पकड़ लिया गया!
अब बस, एक सिगरेट पी लूं! वरना अस्पताल में तो वह भी नहीं मिलेगी!
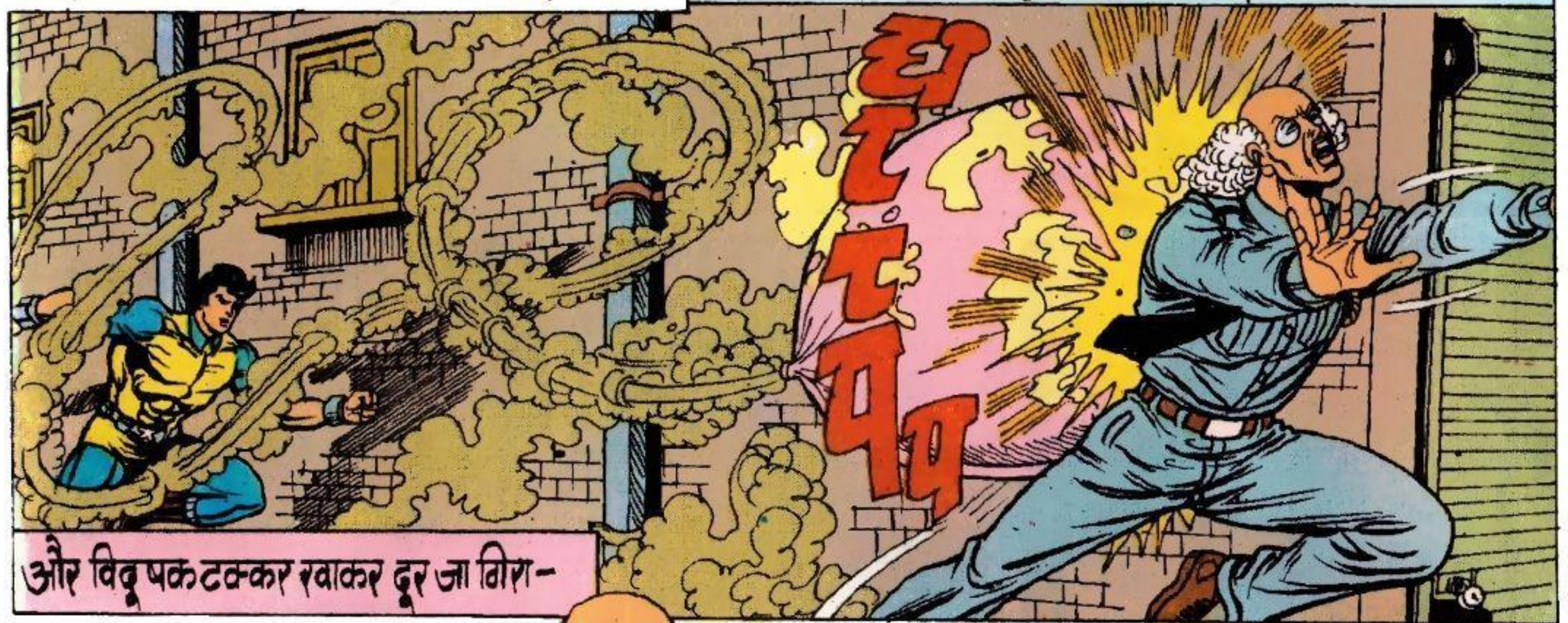
वैसे मैं तुमको एक बात बताना भूल गया। वो... तुम जिस गली में खड़े हो न, वह गुब्बारे से निकली गैस से भरी हुई है। और वह गैस... ही ही ही ही...
...ज्वलनशील है। ही ही ही ही!
ध्रुव अगर एक सेकंड पहले विदूषक का इशारा समझ न गया होता-
तो उसी गली में उसकी चिता बन जाती-
लेकिन एक पल पहले कूदकर उसने अपनी मौत को टालकर मामूली सा घायल होने से काम चला लिया था-
तभी-
बॉस! इधर! आपने जबसे हमको अस्पताल से कॉन्टेक्ट किया है, तब से हम आपको पूरे रास्ते, न जाने कहां-कहां ढूंढते आ रहे हैं!
ही ही ही! अरे, मुझे रिसीव करने आने की क्या जरूरत थी? मैं अपने-आप आ जाता!

ध्रुव के देखते ही देखते विदूषक घटनास्थल से रवाना हो गया-
घटाप
बाय, बाय ध्रुव!
फिर हसेंगे! ही ही ही ही!
ओह! विदूषक भाग रहा है! और मैं उसके पीछे नहीं जा पा रहा हूं!
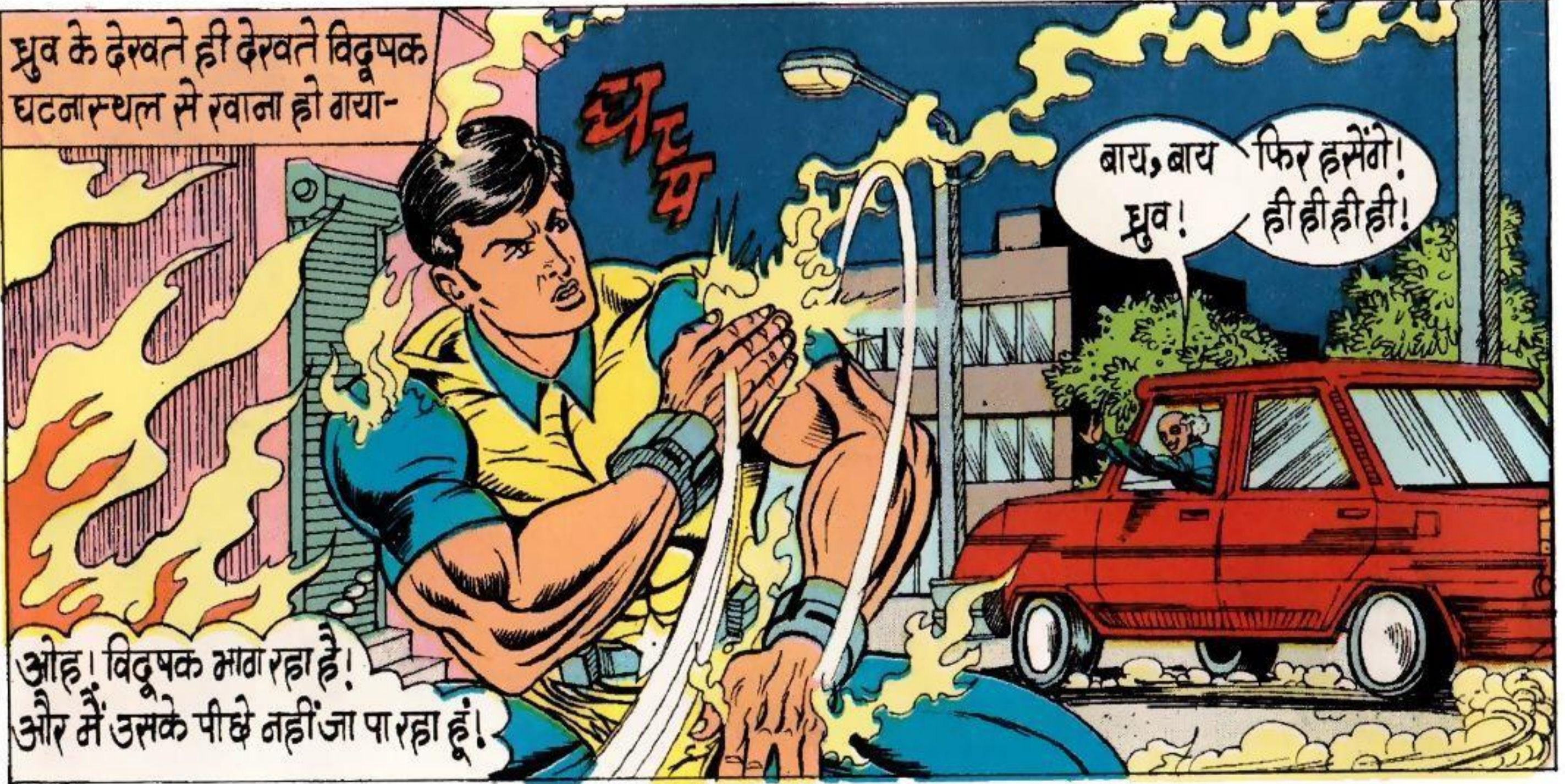
हमारी पहली मुलाकात विदूषक के नाम रही! विदूषक मेरे हाथों से निकल भागने में सफल हो गया! खैर, फिल-हाल वह शहर से बाहर तो नहीं जा सकता! क्योंकि पुलिस ने सारे शहर की नाकेबन्दी कर दी होगी!
घटाप
मुझे विदूषक के अगले कदम का इन्तजार करना होगा! और उसके लिए तैयारी भी करके रखनी होगी!

विदूषक हाथ पर हाथ रखकर बैठने वालों में से नहीं था! वह अगली चाल जल्दी ही चलने जा रहा था-
आऽऽऊऽऽऽ! मेंटल हास्पिटलों में कितना आराम लगता है! वहां से यहां आकर ऐसा लगता है जैसे कि घर से निकलकर ऑफिस आ गया हूं! खैर, काम तो करना ही है! बताओ, पोजीशन क्या है?
हमारे आदमियों को जिस गैंग ने मारा था, उसका पता चल गया है बॉस! किसी हारून शाह का गैंग है!
वैसे तो इस वक्त वह इस शहर का सबसे बड़ा डॉन है। लेकिन यह भी पता चला है कि वह भी किसी और के लिए काम करता है!

किसी और के लिए ? यानी उससे भी बड़ा कोई डॉन राजनगर में मौजूद है। कौन है वो ?
यह तो पता नहीं चल पाया बॉस ! लेकिन एक बार हारून शाह हमारे हाथ आ जाए तो उससे ही इस सवाल का जवाब पूछ लेंगे !
कहां मिलेगा ये हारून शाह !
यह तो पता नहीं बॉस ! क्योंकि वह किसी एक जगह नहीं टिकता ! उसके दो-तीन मेन ठिकाने हैं ! वहां पर जाकर उसको ढूंढ़ा जा सकता है !
हुम ! मुझे उसके सारे ठिकाने बताओ !
वह छुपेगा और मैं ढूंढूंगा ! मुझे छुपन-छुपाई खेलने में बड़ा मजा आता है !
उस शाम- कई लोगों ने अपने-अपने प्रोग्राम पहले से तय कर रखे थे-
राजनगर का सूर्यास्त तो मैंने कई बार देखा है शांतनु ! लेकिन इस 'यॉट' से सूर्यास्त देखने का तो मजा ही कुछ और है !
ब्यूटीफुल !
SEA HARRIER
मुझे यह तो पता था कि तुम काफी अमीर हो शांतनु ! पर यह नहीं पता था कि इतने अमीर हो कि 'लक्जरी यॉट' खरीद सकते हो...
...वैसे बताओ कि तुम मुझे यहां पर क्यों लाए हो ? अपनी यॉट दिखाकर इम्प्रेस करने के लिए !
न...नहीं, श्वेता ! ओ... दरअसल ये यॉट तो हमारी है भी नहीं ! यह तो डैडी के एक फ्रेंड की है ! किसी हारून शाह की ! मैं तो तुमको यहां सिर्फ घुमाने के लिए लाया हूं !
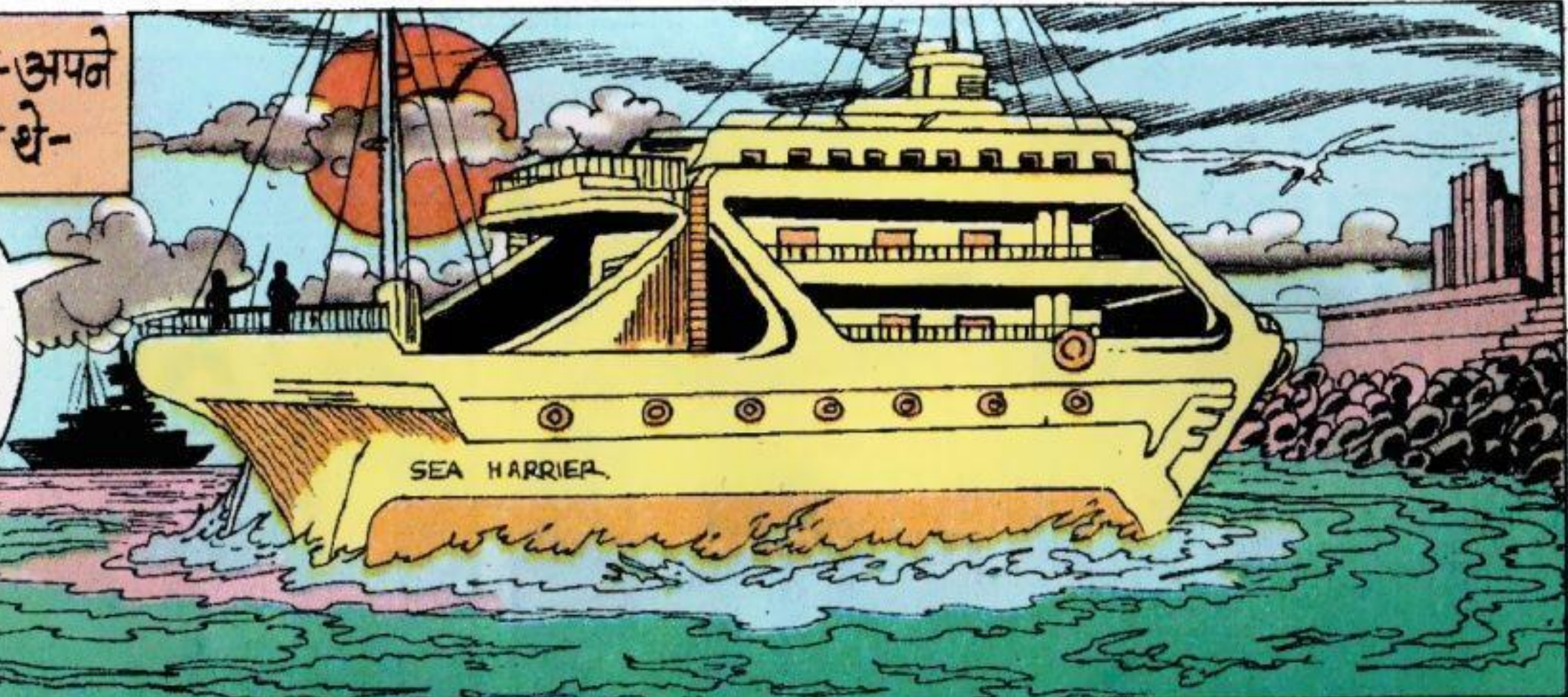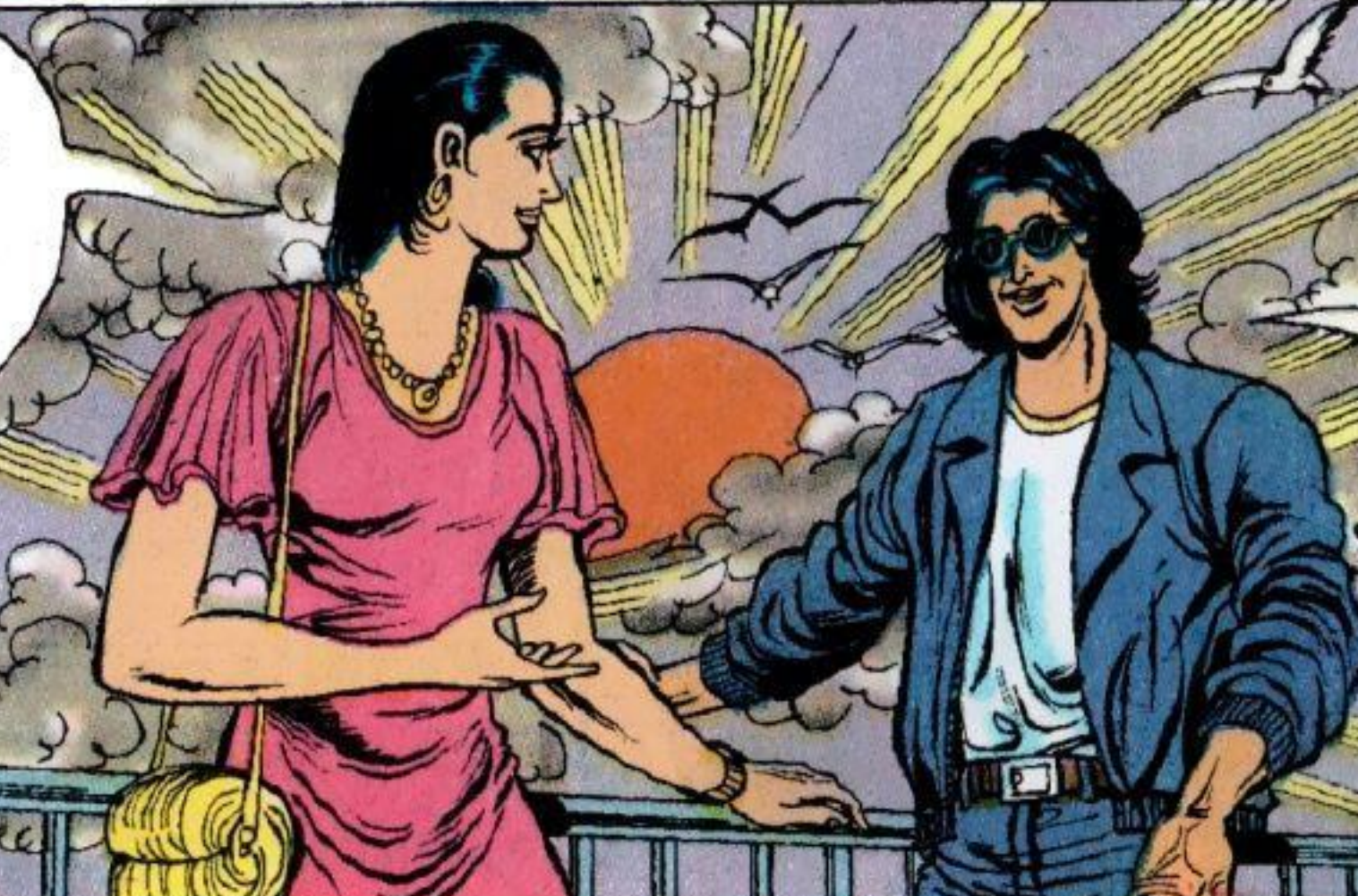
मैंने सोचा कि राजनगर की वही पुरानी जगहें देख-देखकर तुम बोर हो गई होगी! इसीलिए तुमको यहां ले आया!
और आज डैडी भी यहां पर हैं! मैंने सोचा कि तुम उनसे भी मिल लोगी!
ओऽऽ! तुम्हारे डैडी भी यहीं पर हैं! यह मुझे पता नहीं था!
हां! हैं न? आओ, मैं तुमको उनसे मिलवाता हूं!

चारों तरफ हथियारबंद लोग क्यों तैनात हैं? क्या तुम्हारे डैडी को किसी से खतरा है?
मेरे डैडी को? मेरे डैडी को किसी से खतरा नहीं है! ये लोग तो इस यॉट की सिक्योरिटी के लिए हैं! इनको हारून अंकल ने रखा है!
खैर, छोड़ो ये सवाल, आओ डैडी ऊपर हैं!

यॉट पर घटी शंका पैदा करने वाली इस घटना से श्वेता, शांतनु भी अंजान थे और शायद शांतनु के डैडी भी-

श्वेता इस बात से बेखबर थी कि इसी वक्त, यॉट के दूसरी तरफ कुछ और घट रहा था-
खींचो! जल्दी खींचो!
ये रही तुम्हारी पेमेंट! अब निकल लो फटाफट!

डैडी!
ओ, शांतनु! तो तुम भी यॉट पर ही थे!
हां, डैडी! हम यॉट चलने से पहले ही आ गए थे! आप ऊपर थे, इसलिए आपको पता नहीं चला!
हां! मैं तो काम में बिजी था! पर तुम्हारे साथ ये कौन है?

डैडी, ये श्वेता है। मैंने बताया था न आपको इसके बारे में?
हां, हां! कमिश्नर साहब की बेटी! जो तुम्हारे कॉलेज में ही पढ़ती है। वेलकम बेटा वेलकम!
थैंक्यू अंकल!
आप क्या अक्सर इस यॉट पर आते हैं, अंकल? तट से दूर बीच समुद्र में!
कभी-कभी बेटा! मैं एक ओशनोलाजिस्ट हूं। एक समुद्र विज्ञानी! इस यॉट के मालिक हारून शाह मेरे दोस्त हैं। बस कभी-कभी उनसे ही उधार ले लेता हूं यह यॉट! समुद्र की खाक छानने के लिए!
इतना झूठ मत बोल हारून शाह! वरना जितने झूठ बोलेगा...
कौन?
ऊपर जाकर इतने ही डंडे खाने पड़ेंगे।
क... कौन हो तुम भाई, और अन्दर तक कैसे आ गए?
कमाल है! तू मुझे नहीं पहचानता? यानी न तो तू कभी मेले गया न ही मेरे कॉमेडी शो देखे और न ही टी॰ वी॰ देखता है!
अरे, मैं सुपर कॉमेडियन विदूषक हूं! सारे टी॰ वी चैनेल आज सुबह से मेरी ही फोटो तो दिखा रहे हैं!
विदूषक! मेंटल हॉस्पिटल से भागे हुए वह पागल अपराधी तुम हो! पर तुम यहां क्या कर रहे हो?

ये सवाल तो हारून शाह को मुझसे पूछना चाहिए था! क्योंकि इसने मेरे दो आदमियों को मार डाला है! और मैं अपने हर आदमी का एक करोड़ का बीमा करके रखता हूं!

और वह एक करोड़ रुपया मैं उससे वसूलता हूं जो मेरे आदमियों को मारता है! इसलिए हारून शाह मुझे दो करोड़ रुपए दे दे तो मैं चुपचाप चला जाऊंगा!

तु... तुमको कुछ गलतफहमी हो गई है विदूषक! ये यॉट जरूर हारून शाह की ही है, पर मैं हारून नहीं हूं। मैं तो डॉक्टर प्रकाश पारिख हूं! एक समुद्र विज्ञानी! ये यॉट तो मैंने सिर्फ आज के लिए ली है! समुद्र की छानबीन करने के लिए! मैं... मैं हारून तक तुम्हारा मैसेज पहुंचा दूंगा!
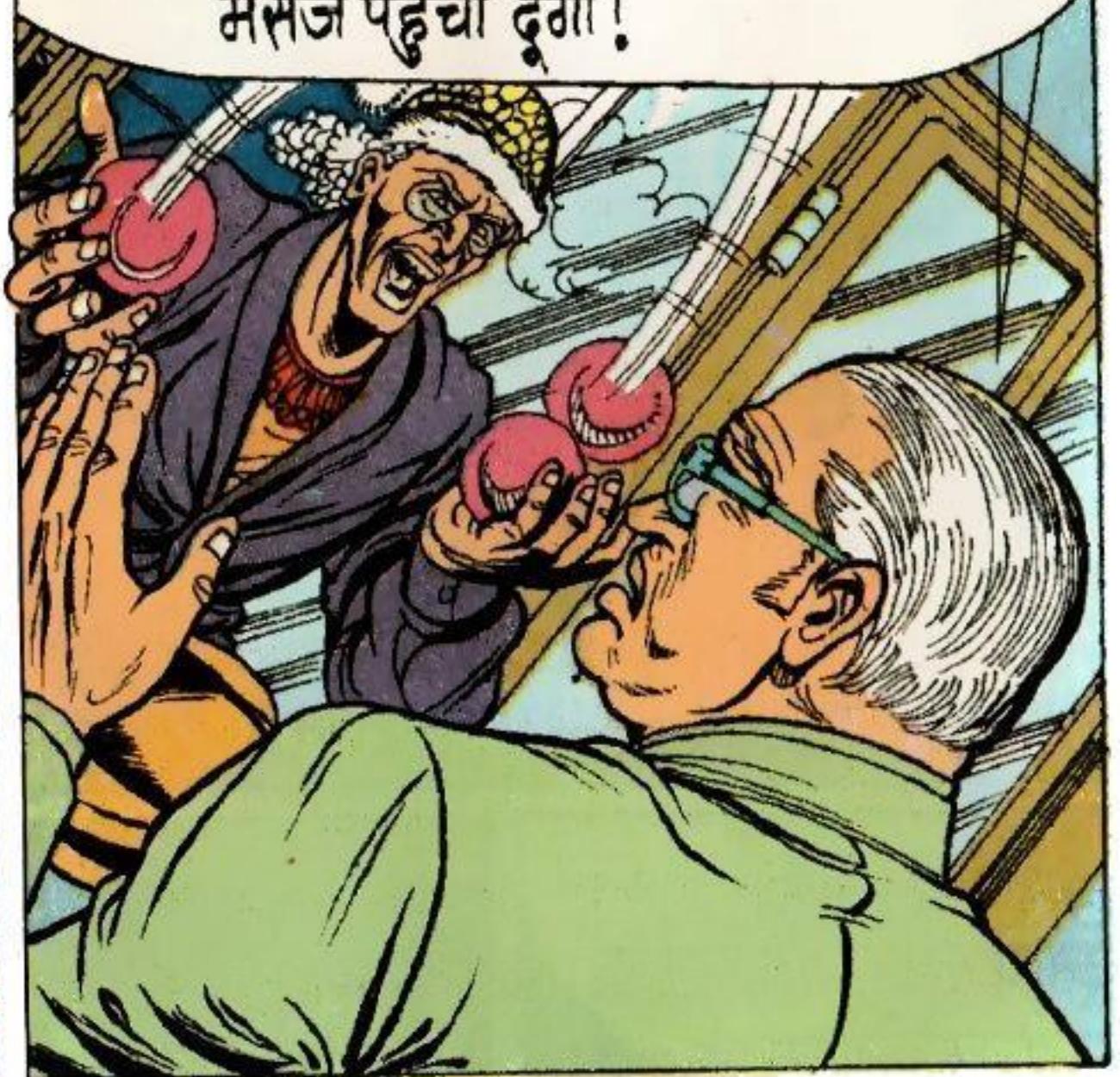
तू मेरी आंखों में धूल नहीं झोंक सकता हारून! या तो मुझे पैसे दे और या मैं तेरे बदन का सारा खून बेचकर वह पैसा वसूल कर लूंगा... तूने अभी-अभी दो करोड़ की एक अंतर्राष्ट्रीय पेंटिंग का सौदा किया है। वही चोरी की पेंटिंग, जिसे स्मगल किया गया है! वह पेंटिंग मुझे दे दे, मैं चला जाऊंगा!

क... कैसी पेंटिंग? कौन सी पेंटिंग?

मुझे गुस्से से पागल मत कर हारून! वरना... वरना दो करोड़ के एवज में मैं तेरी पचास करोड़ की यॉट तोड़ दूंगा!

ओह! ये इतनी देर से बमों की जगलिंग कर रहा था!

इस धमाके की आवाज यॉट में मौजूद हथियारबंद आदमियों के कानों तक पहुंचने के साथ-साथ-
बडांमम

वातावरण में भी फैल गई! और वहां पर भी उस धमाके को सुनने के लिए ऐसे कान मौजूद थे जो यह जानते थे कि ऐसे हादसों की खबर किसको देनी चाहिए-
क्रिंयाऽऽऽ
आवाज सुनते ही वह चिड़िया, तेजी से राजनगर की तरफ बढ़ चली-

यॉट में हालत बद से बदतर होने वाले थे-
ये कौन है? यॉट में कैसे आ गया?
प...पता नहीं! हारून साहब को ढूंढता हुआ आया है! नहीं मिले तो गुस्सा होकर बम दागने लगा!
घबराइए नहीं, पारिख सर! हम इससे निपट लेंगे!
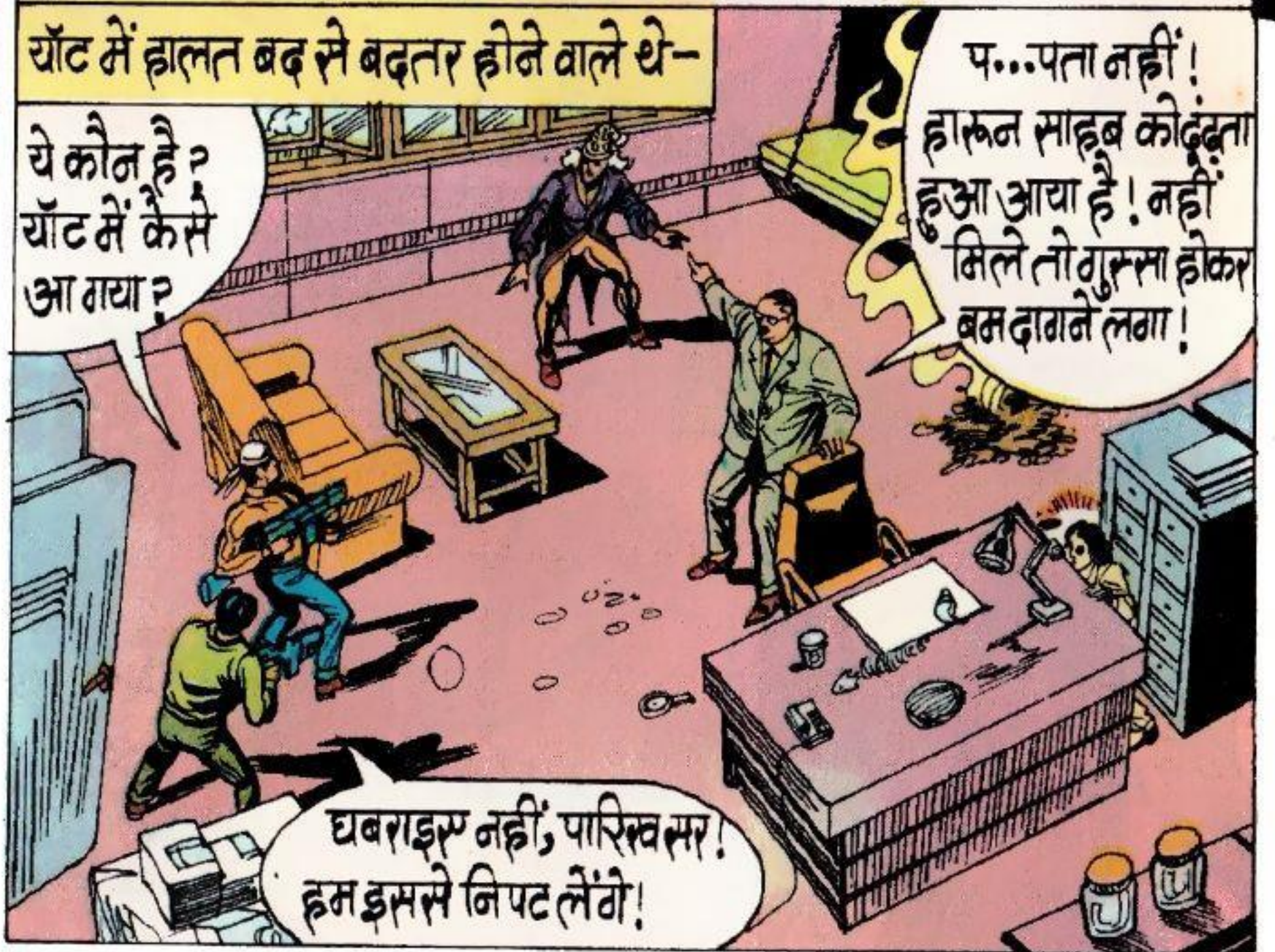
यह मैं कहां फंस गई? मैं तो शांतनु से गहरी दोस्ती का नाटक सिर्फ इसीलिए कर रही थी, क्योंकि इसकी बेशुमार दौलत देखकर मुझे इसके परिवार के दौलत कमाने के तरीके पर शक हो गया था। पर इससे यह तो पता चला कि इसके पिता के हारून शाह जैसे कुख्यात तस्कर से संबंध हैं। खैर इस वक्त तो मेन विलेन यह विदूषक है! इससे निपटने के लिए मुझे चंडिका बनना होगा!
और चंडिका बनने के लिए मुझे इस दरवाजे से चुपचाप निकलना होगा!
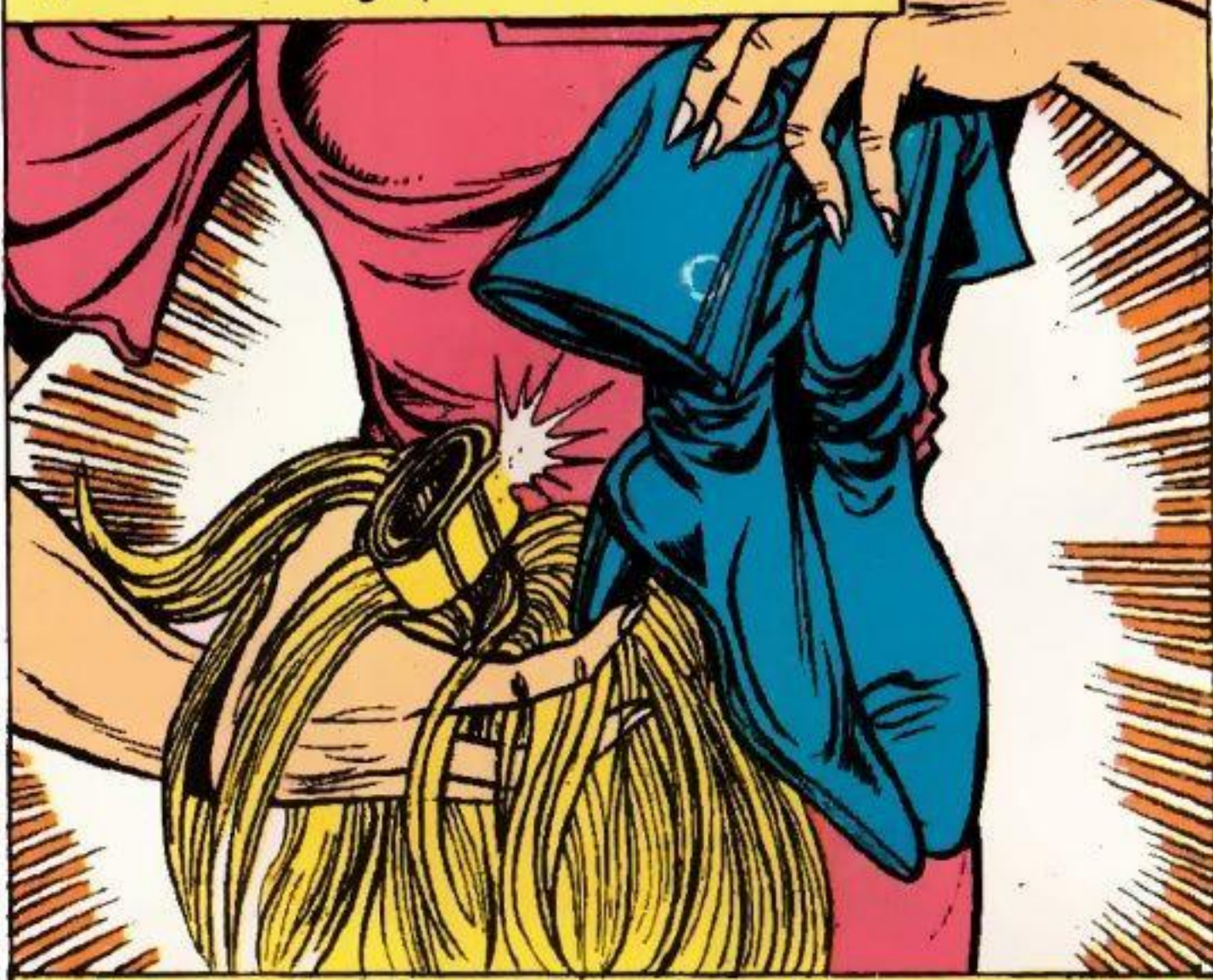
और जूतों के अन्दर रखी थी चंडिका की बैंगनी ड्रेस-

कुछ ही पलों बाद श्वेता के स्थान पर चंडिका उस केबिन से निकल रही थी-

लेकिन तब तक चंडिका का काम सिक्योरिटी गार्ड खुद ही पूरा कर देने वाले थे-

धम्म्म्म म्म्मम
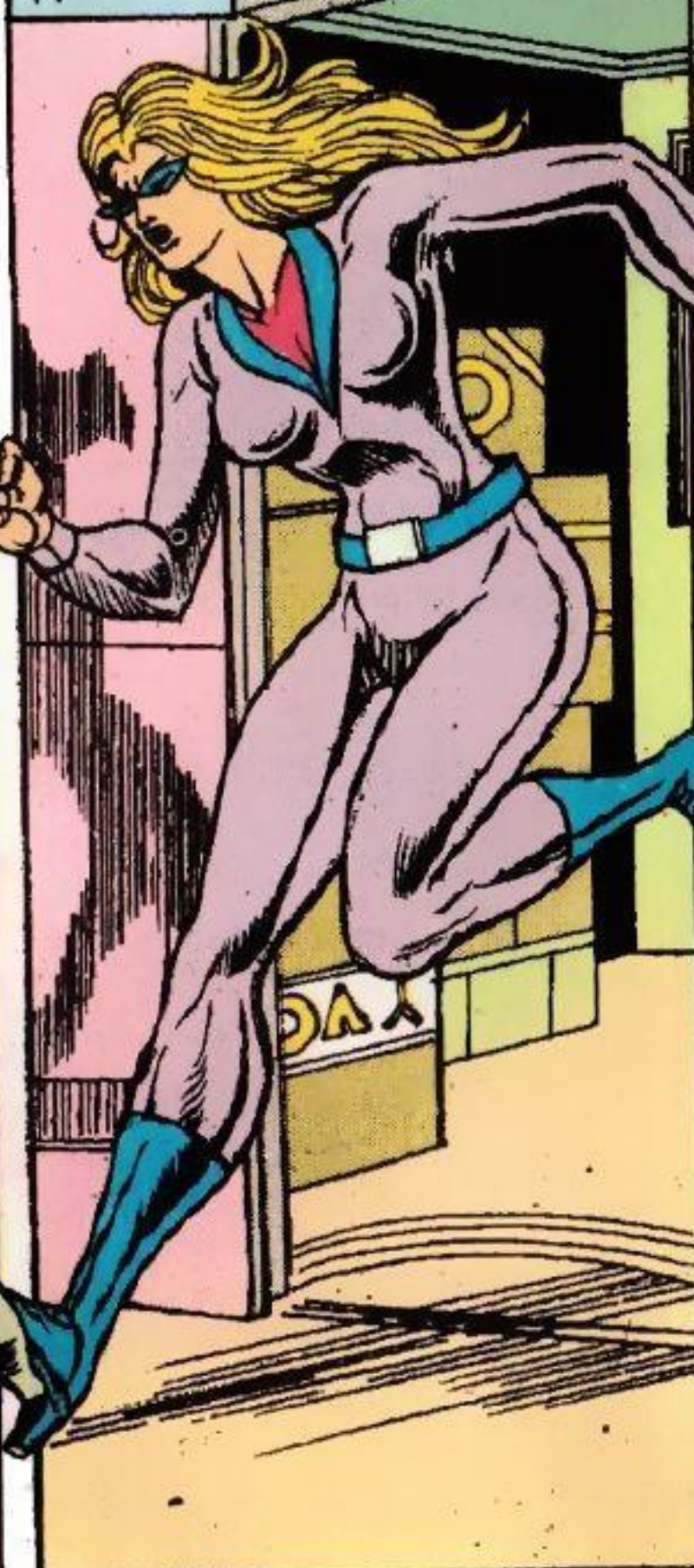
छलनी कर दो इसके बदन को!

तड़ तड़ तड़ तड़

हा ऽऽऽ ह! एक तो हारून भाई की यॉट पर बिना इजाजत आता है, और फिर पैसे मांगता है? तू हमसे पैसे निकलवाने आया था... और हमने तेरी जान निकाल ली!
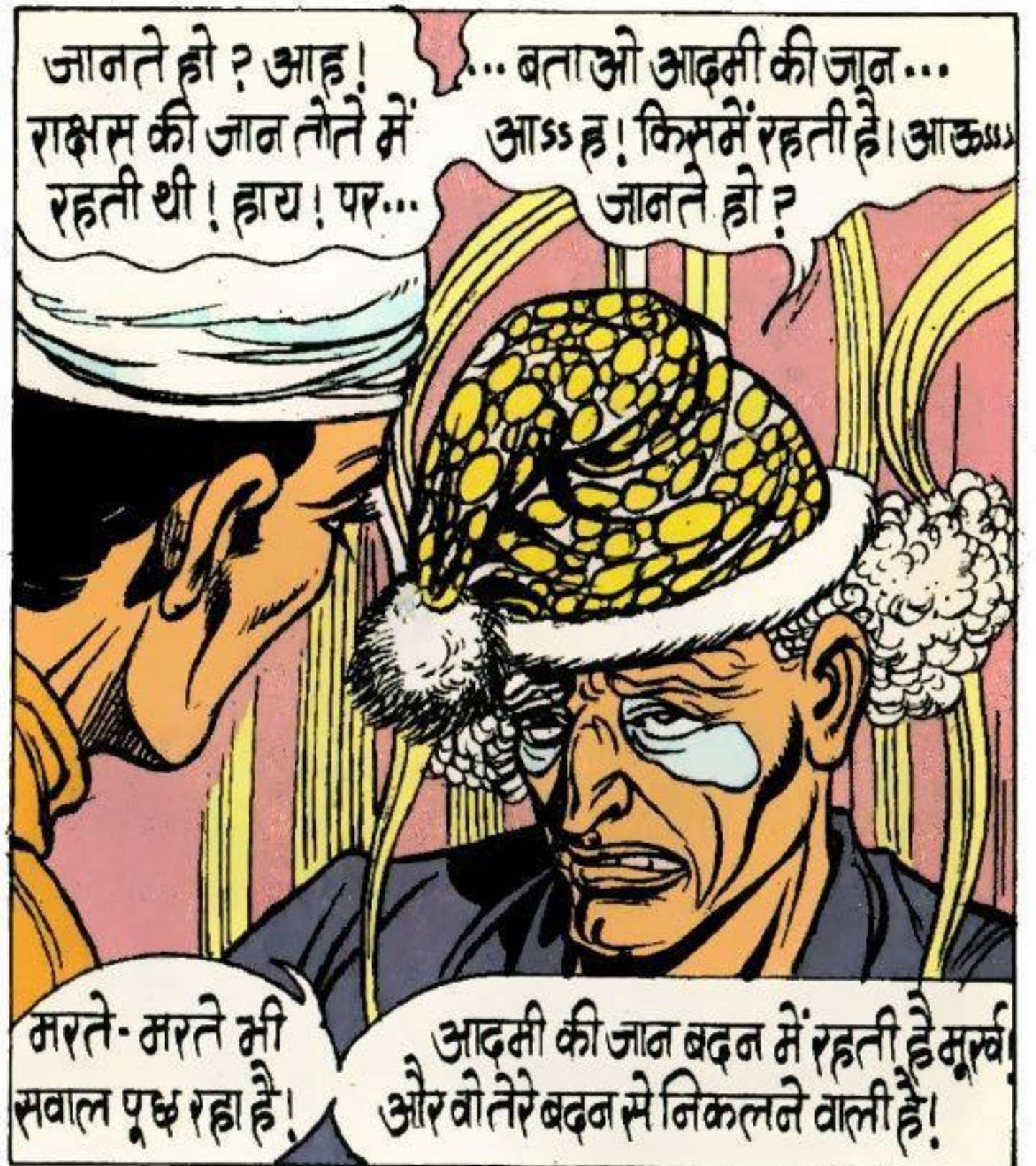
जानते हो? आह! राक्षस की जान तोते में रहती थी! हाय! पर...
...बताओ आदमी की जान... आऽऽ ह! किसमें रहती है। आऊऽऽ जानते हो?
मरते-मरते भी सवाल पूछ रहा है!
आदमी की जान बदन में रहती है मूर्ख! और वो तेरे बदन से निकलने वाली है!

गलत! नहीं निकलेगी! क्योंकि इन्सान की जान रहती है... बुलेटप्रूफ जैकेट में!
देखो! मैं बुलेटप्रूफ जैकेट पहने हूं तो मेरी जान नहीं निकली। नहीं निकली न?
?
पर तुम लोगों की इतनी गोलियां खाकर मेरे गैस बन रही है...
...और तुम लोगों ने जो छेद कर दिए हैं उससे निकल रही है...

...निकल रही है न?
ही ही ही ही!
ईस्स्स्स्स्स
ही ही ही हि ह ह ह हि हि हि!
ही ही ही हि हि!

देखा, हारून इनको कितना मजा आ रहा है! अब ये लाफिंग गैस इनको एक मिनट के अन्दर हंसा-हंसाकर मार देगी। मेरे हाथों मरने वाले हंसते हुए मरते हैं!
लेकिन अगर तूने मुझे दो करोड़ रुपए नहीं दिए तो मैं तुझे हंसा-हंसाकर नहीं, बल्कि रुला-रुलाकर मारूंगा!
तु...तुम समझने की कोशिश क्यों नहीं करते विदूषक! मैं डॉक्टर पारिख हूं। हारून शाह नहीं!
तू ऐसे नहीं मानेगा! तुझे एक ट्रेलर दिखाना ही पड़ेगा!
ये ब्लेड सी धार वाले रिकार्ड तेरा बाजा बजा देंगे!
पहले मैं तेरे दोनों हाथ काटूंगा और फिर...
और फिर कुछ नहीं, विदूषक! क्योंकि चंडिका के रहते हाथ तो क्या, नाखून तक नहीं कटेंगे!
तड़.
तड़ाक.
चंडिका! चंडिका कौन?
वाऊ!
राजनगर में रहकर चंडिका को नहीं जानते?...
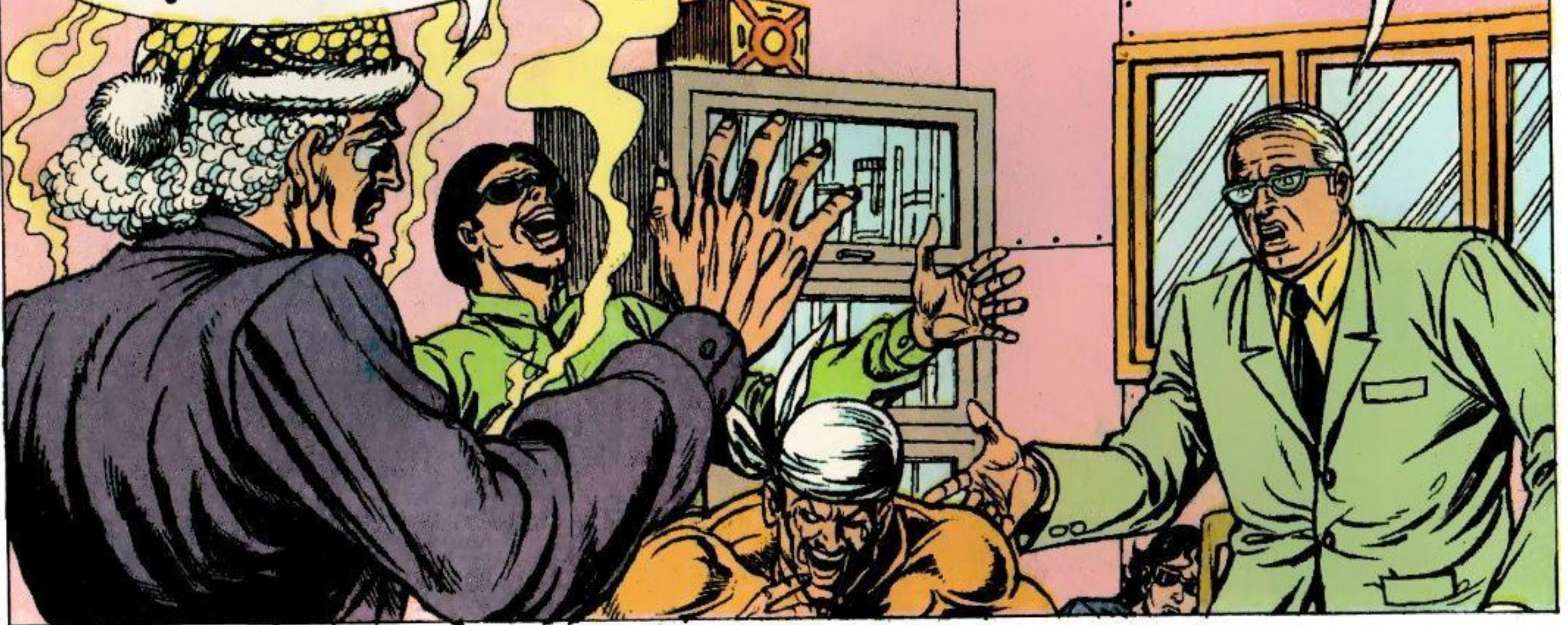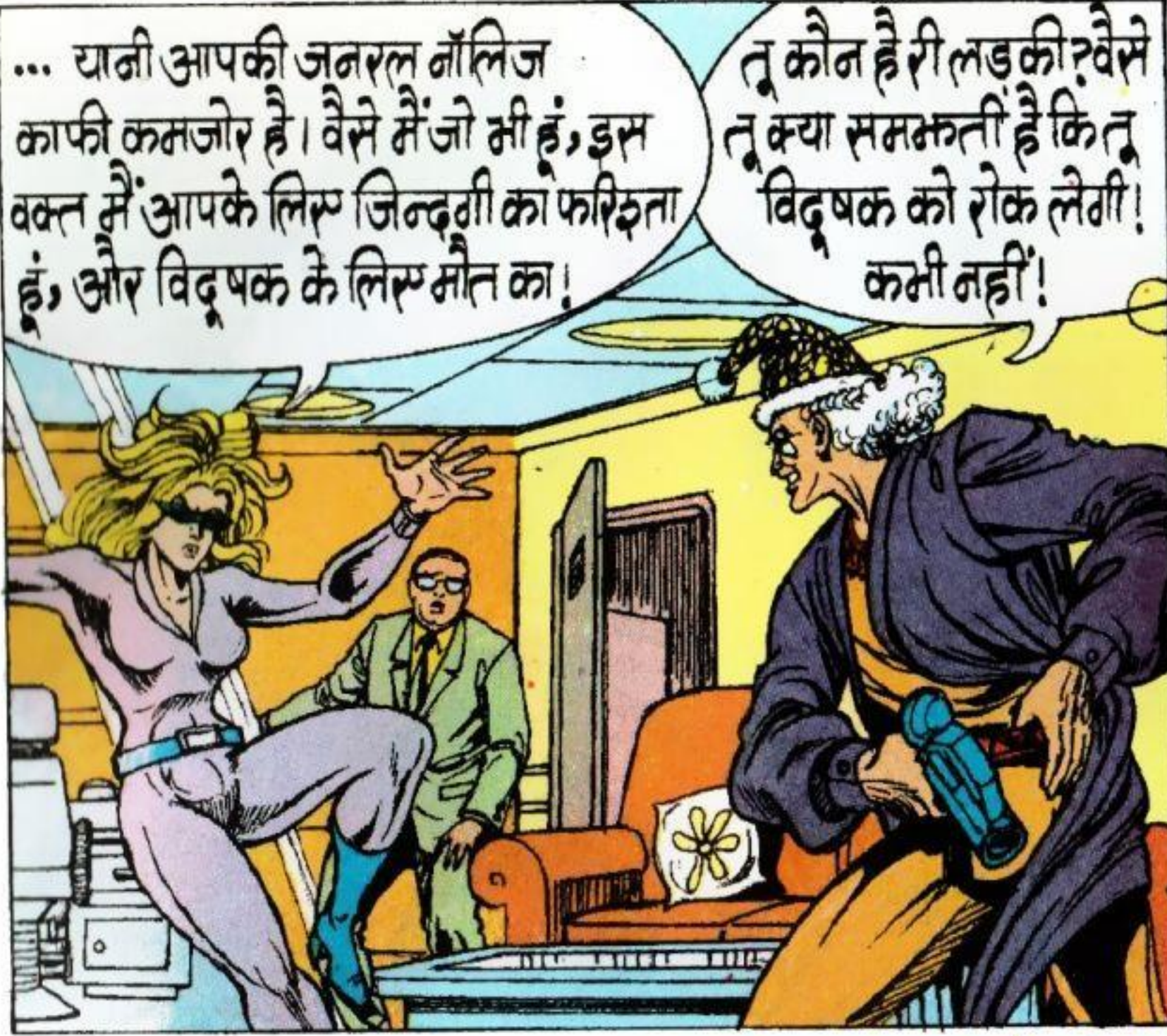
... यानी आपकी जनरल नॉलिज काफी कमजोर है। वैसे मैं जो भी हूं, इस वक्त मैं आपके लिए जिन्दगी का फरिश्ता हूं, और विदूषक के लिए मौत का।

तू कौन है री लड़की? वैसे तू क्या समझती है कि तू विदूषक को रोक लेगी! कभी नहीं!

विदूषक तो वह दो करोड़ की पेंटिंग लेकर ही जाएगा!

पिट पिट पिट पिट

चाहे इसके लिए मुझे तुम सबको टालाना ही क्यों न पड़े!
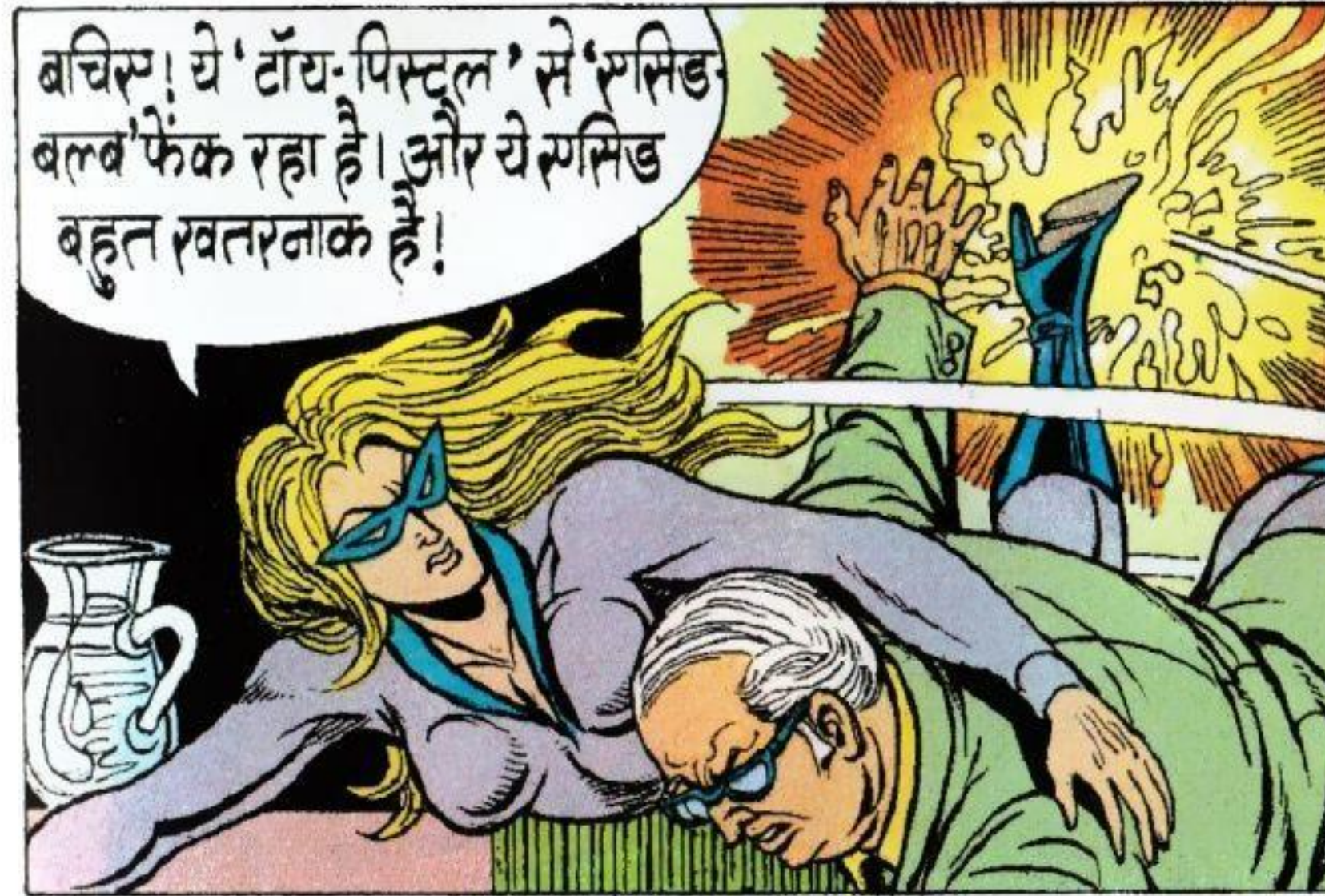
बचिए! ये 'टॉय-पिस्टल' से 'एसिड-बल्ब' फेंक रहा है। और ये एसिड बहुत खतरनाक हैं!

फ़टच

फ़टाक

और अब मैं इस एसिड बल्ब को पानी से निकालकर...
...विदूषक को उसी के एसिड का स्वाद चखवा सकती हूं!
इ या या या! जल गया रे!
चटाक
धाड़
अभी तो तुझे अपनी ही चीज से जलन हो रही है विदूषक! पर अब तुझे मेरे घूंसे से सूजन होगी!

क्योंकि उसके सामने एक अजीबो-गरीब और भयंकर आकृति खड़ी थी-
?
ही ही ही ही! अच्छा है न? ये मुझे बरसों पहले एक मेले में मिला था। तब ये बच्चा था, और एक आदमी इसको दिखा-दिखाकर पैसे कमाता था...
...मैंने उस आदमी को इस संसार से मुक्ति दिलाकर, उस बच्चे को अपनी ममता की छांव में ले लिया, तब से ये अपने 'विदूषक-पापा' से बहुत प्यार करता है!...
...और अपने पापा पर पड़ा एक भी घूंसा यह बर्दाश्त नहीं कर पाता है! ही ही ही!
इसको देखकर तुम्हारी घिग्घी बंध गई न? देखा, देखा, इसीलिए तो मैंने इसका नाम 'घिग्घा' रखा है।
चंडिका यानी श्वेता एक बड़ी मुसीबत में फंस गई थी-
अब तुम पिटो, और मैं चला हारून शाह के पास।

लेकिन मदद, रास्ता तय करती हुई उसके पास आ रही थी-
यॉट पर गड़बड़? मुझे जल्दी से रास्ता दिखाओ! श्वेता भी एक यॉट पर ही गई है! कहीं यह गड़बड़ उसी यॉट पर तो नहीं हो रही है?
गड़बड़ उसी यॉट पर हो रही थी। लेकिन जिनके कारण यह गड़बड़ हो रही थी वे यॉट से बचकर भाग निकले थे-
डैडी, श्वेता को भी साथ में ले लेते।
हमने उसे यॉट पर कितना ढूंढ़ा था शांतनु!...
... अरे, उसको खुद हमारे साथ ही रहना चाहिए था। अब उसे ढूंढ़ने के चक्कर में हम भी मारे जाते।
श्वेता तो पारिख साहब को कहीं मिलनी भी नहीं थी। क्योंकि इस वक्त वह चंडिका के रूप में थी-
और वह विदूषक का रास्ता रोकने की सजा भुगत रही थी-
इस घिग्घा से शारीरिक शक्ति का प्रयोग करके जीता नहीं जा सकता। दिमाग का इस्तेमाल करना होगा। यह घिग्घा वास्तव में एक जानवर है। और कई जानवरों की तरह यह भी पराध्वनितरंगें सुन सकता होगा!
और अगर ऐसा है तो मेरे 'बेल्ट बकल' में लगे 'अल्ट्रासोनिक यंत्र से निकलती तरंगें इसके दिमाग में जरूर खलबली मचा देंगी!
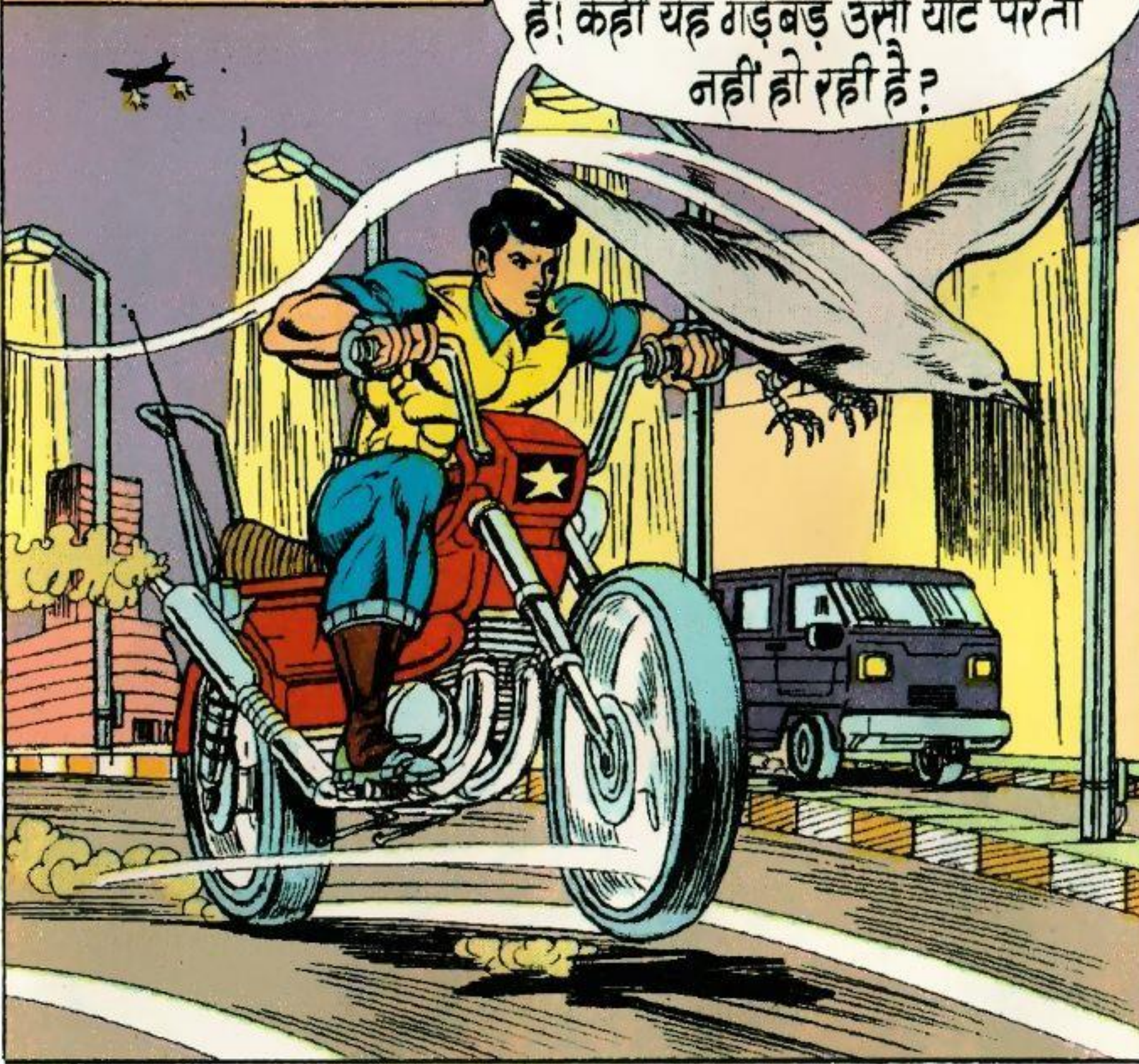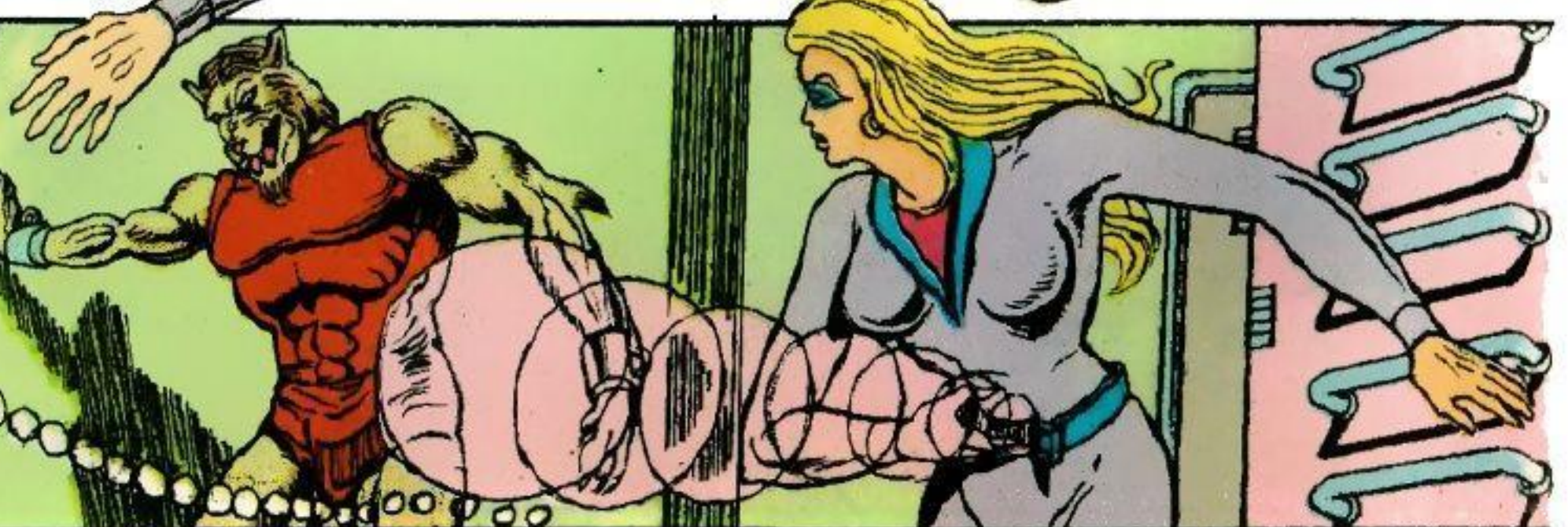
अल्ट्रासोनिक तरंगों के कानों से टकराते ही घिग्घा चीख उठा-
चियांया यांयां
उसका पूरा शरीर पानी से बाहर निकली मछली की तरह तड़पने लगा-
अगर चंडिका की खराब किस्मत उस लहर को वहां न खींच लाती, जिसने यॉट को ऐन वक्त पर टेढ़ा कर दिया-
तो घिग्घा, अल्ट्रासोनिक तरंगों की कैद से कभी आजाद न हो पाता-
कड़ड़ाक
ओह! मेरा अल्ट्रासोनिक सर्किट टूट गया है!
अगले ही पल चंडिका, घिग्घा की कैद में तड़फड़ा रही थी-
आऽऽऽह!

ध्रुव, राजनगर तट तक पहुंच चुका था-
ठीक उसी जगह पर जहां पर डॉक्टर पारिख और शांतनु भी मोटरबोट से उतर रहे थे-
अरे! तुम तो वही हो, जिसके साथ श्वेता को लांच पर जाना था। पर श्वेता कहां है? और तुम लोग मोटरबोट से क्यों आ रहे हो?
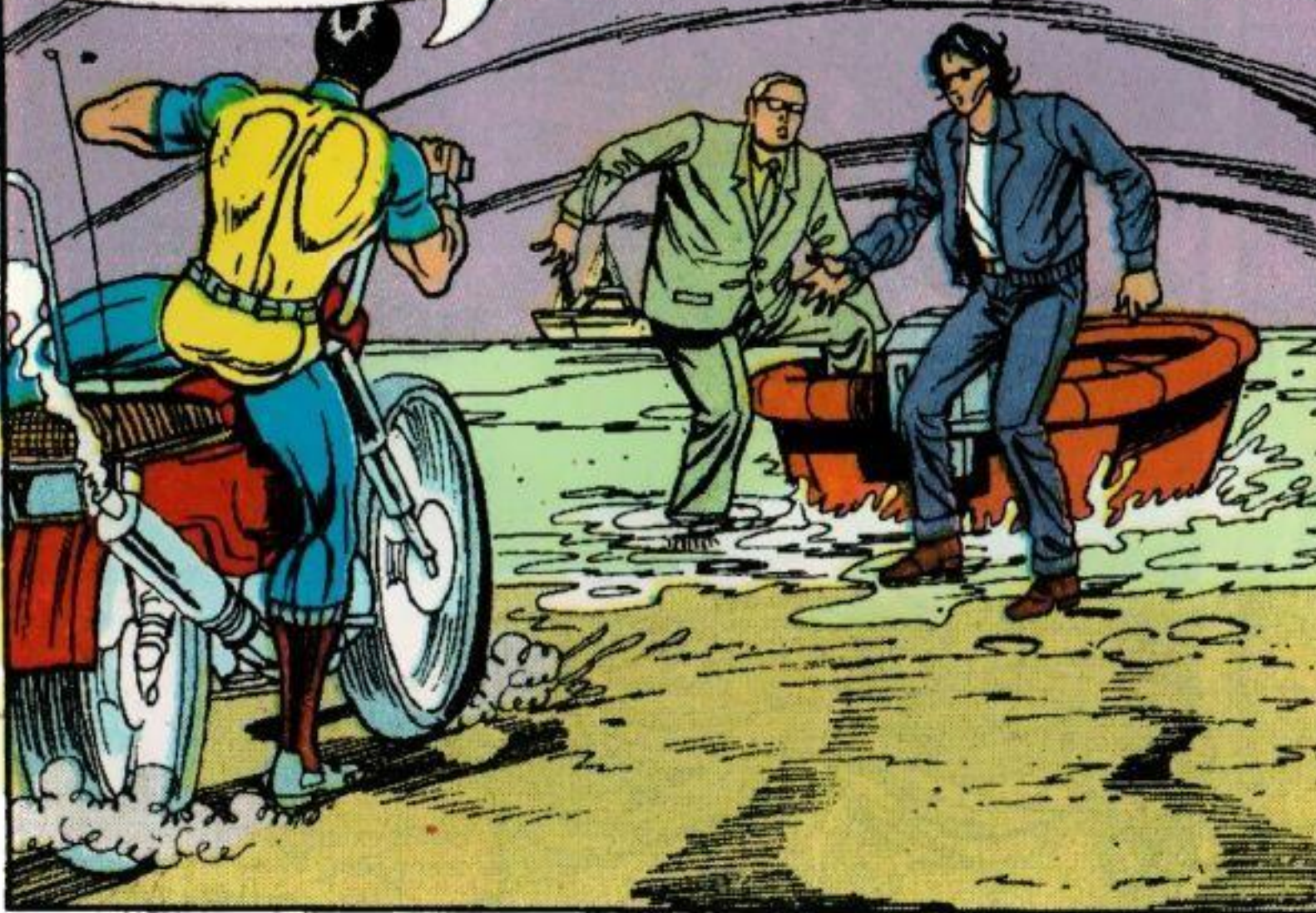
ध्रुव के सवाल के जवाब में शांतनु पूरा घटनाक्रम सुनाता चला गया-
श्वेता भागकर कहां छिप गई यह हमको भी नहीं पता चला! हमने उसको काफी ढूंढा...
...पर वह नहीं मिली। हम भी विदूषक और उस घिग्घा के डर से ज्यादा देर तक नहीं रुके...
...सच पूछो तो अगर वह चंडिका ऐन वक्त पर वहां न पहुंचती तो हम भी बचकर निकल नहीं पाते!

ओह! यह मोटरबोट मैं ले जा रहा हूं। श्वेता को ढूंढकर वापस लाऊंगा!
तुम लोग कमिश्नर साहब को खबर करके लांच में भेज देना!
घर्रर्र

कुछ ही पलों बाद ध्रुव यॉट की तरफ बढ़ रहा था-
उस यॉट पर बीच समुद्र में जहां मुसीबत आई, वहां श्वेता गायब हो गई और चंडिका प्रकट हो गई! ऐसा कई बार हो चुका है। श्वेता गायब होती है और चंडिका आ जाती है। अब मेरा शक विश्वास में बदल गया है! यह हर बार संयोग नहीं हो सकता!
श्वेता ही चंडिका है! और ऐसा करके वह बार-बार अपनी जान को खतरे में डालती है!
मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा!

श्वेता, ध्रुव के इन विचारों से अच्छी तरह से अवगत थी। इसीलिए उसने ध्रुव के ऊपर कभी इस रहस्य को खुलने नहीं दिया था कि श्वेता ही चंडिका है। क्योंकि ध्रुव यह रहस्य जानने के बाद कभी भी चंडिका की मदद लेना स्वीकार नहीं करता-
पर इस वक्त तो चंडिका को मदद देने के बजाय, मदद लेने की जरूरत थी-
आक् !
क्योंकि घिग्घा के पंजे के नीचे दबकर उसकी घुटती सांसें अब दम तोड़ रही थीं-
गर्रर्रर्र !

और चंडिका को अपनी सांसों से बहुत प्यार था-
तड़ाक
चंडिका की उस किक ने, घिग्घा के पूरे शरीर में दर्द की लहर दौड़ा दी-

चंडिका आजाद तो हो गई, लेकिन बाजी अभी भी उसके हाथों में नहीं थी-
क्योंकि घिग्घा ने अपने आपको बहुत जल्दी संभाल लिया था-
घड़ाक
कनपटी पर भीषण वार पड़ते ही चंडिका के होश डूबने शुरू हो गए-

और घिग्घा का गला, चंडिका के खून से तर होने के लिए बेचैन होने लगा-
हर्रर्रर्र्रम्फ

लेकिन इससे पहले कि उसके दांत चंडिका की गर्दन में धंस पाते-

घिग्घा को चंडिका को छोड़ देने के लिए मजबूर हो जाना पड़ा-

आह!
तड़ाक
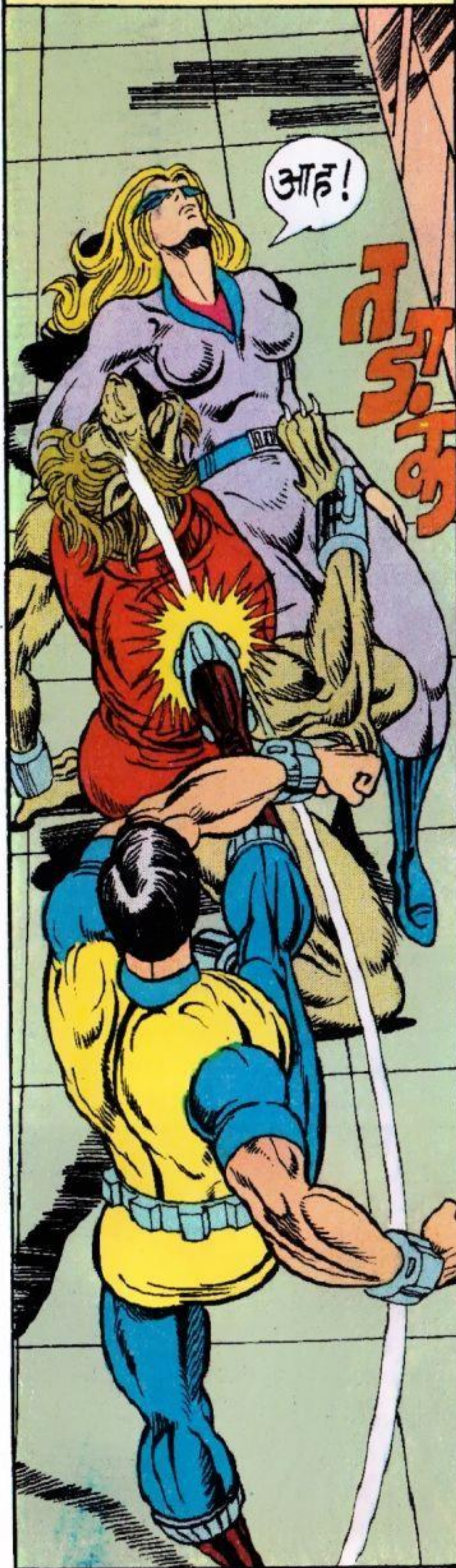
आह, ध्रुव! तुम एकदम सही समय पर... आए! अब हम दोनों मिलकर इस घिग्घा को चिड़ियाघर पहुंचा देंगे!
नहीं, चंडिका! बिलकुल नहीं! मैं अब जान गया हूं कि तुम कौन हो! अब तुमसे मदद लेना तो दूर, उल्टे ये चंडिका बनने की हरकत करने पर तुम्हारी पिटाई करने वाला हूं!
वैसे भी इस जानवर से निपटने के लिए मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत नहीं पड़ेगी!

सबसे पहले तो मैं फ्लैशबम की मदद से इसे अंधा कर दूंगा!

और फिर स्टारलाइन से इसे बांधकर...

... आह! यह रोशनी की चमक से अंधा हो जाने के बाद भी अपनी सूंघने की शक्ति से मेरी स्थिति का पता लगा रहा है!
और इसके वार हथौड़े जैसे जोर से पड़ रहे हैं!
तड़ाक

चंडिका, ध्रुव की मदद के लिए उठी और फिर चकराकर गिर पड़ी-
आऽऽऽ ह! मैं अपने होशो-हवास कायम नहीं रख पा रही हूं! मुझे तुरन्त फिर से श्वेता के रूप में आना पड़ेगा!...
...क्योंकि भेड़िया का यह शक अब विश्वास में बदल गया है कि श्वेता ही चंडिका है!
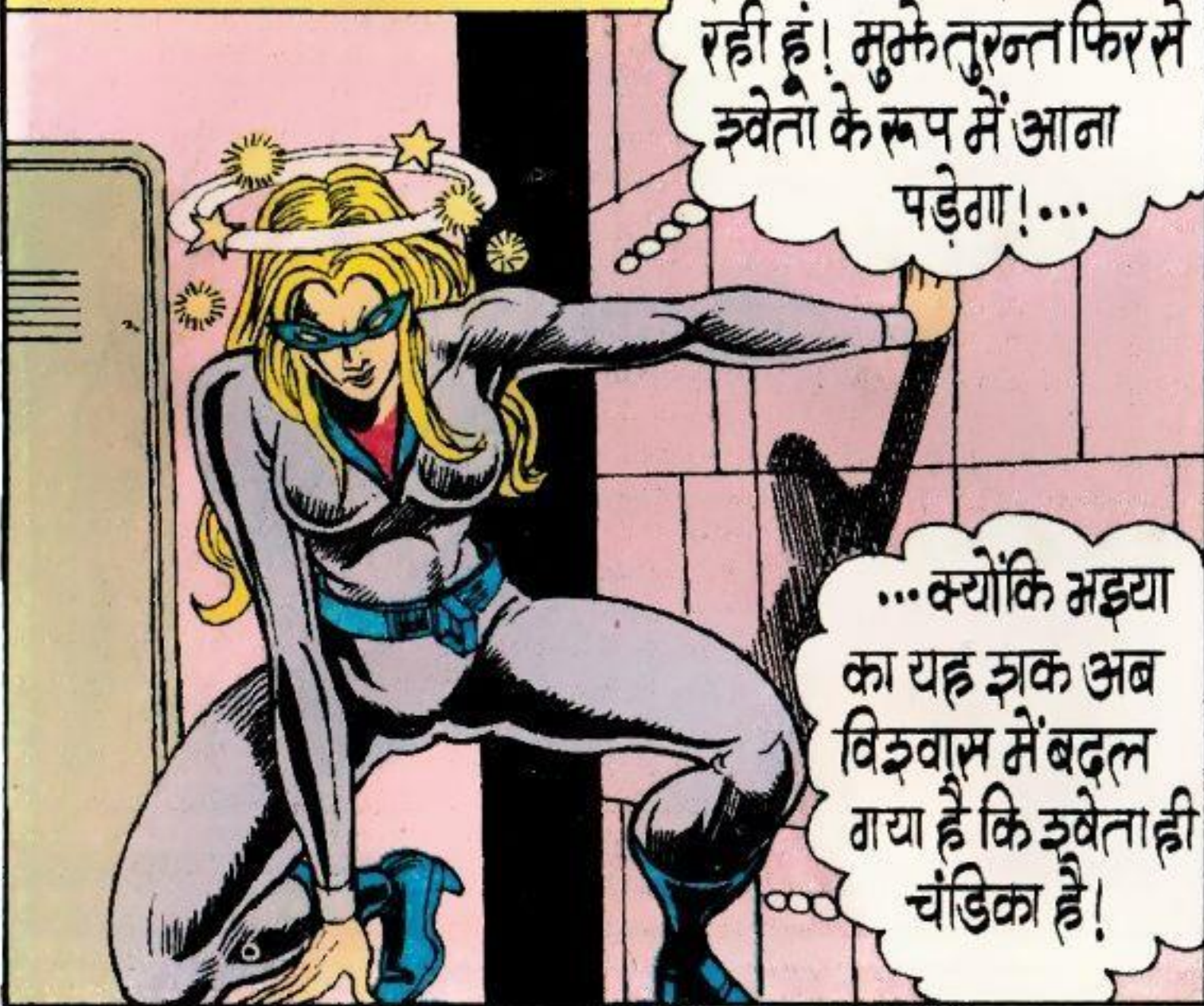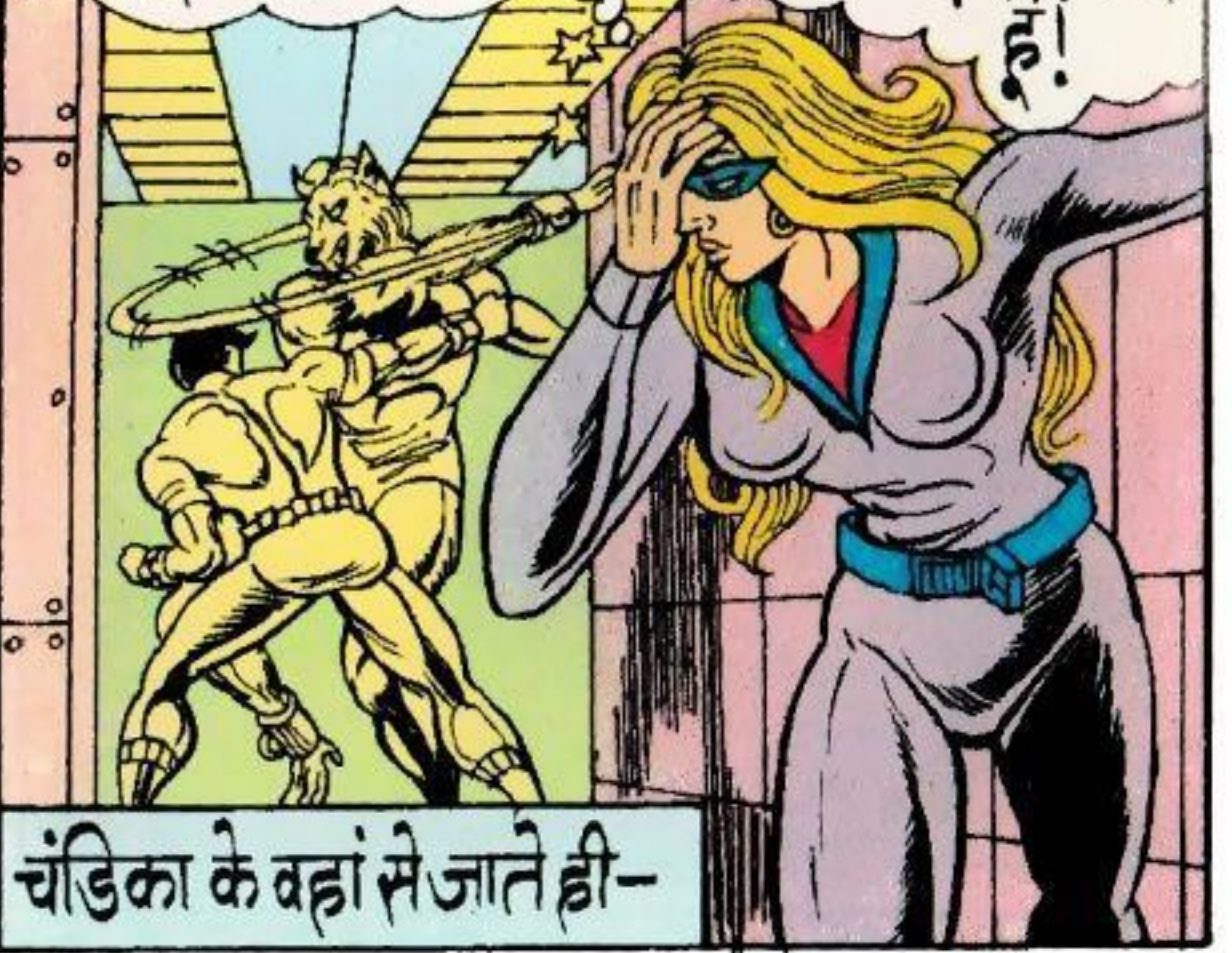
अगर मैं यहीं पर बेहोश हो गई और भेड़िया ने मेरा मास्क उतार कर मेरा चेहरा देख लिया तो फिर मेरे पास कोई भी बहाना बचा नहीं रह जाएगा!
मुझे उसी केबिन में जाना पड़ेगा जहां पर मैं चंडिका बनते वक्त श्वेता के कपड़े छोड़ आई हूं!
चंडिका के वहां से जाते ही-

दूसरी तरफ से विदूषक घटनास्थल पर आ पहुंचा-
हारून शाह तो पूरी यॉट में कहीं नहीं मिला! न जाने वह कहां निकल... अरे! वाहवा! फिर से दर्शन हो गए ध्रुव तारे के! पर वह चंडिका कहां गई? खैर छोड़ो...
...लड़ो, लड़ो! मैं भी देखता हूं कि इस लड़ाई में कौन जीतता है?
ध्रुव ने घिग्घा को स्टारलाइन से बांधने की चेष्टा की-

पर घिग्घा ने उसकी इस चाल को सफल होने नहीं दिया-
गर्रर्र!
चट
चटाक
ओफ! इसने तो स्टारलाइन के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इसको बेबस करने के लिए कोई और तरीका सोचना पड़ेगा!

आहा!
लंगर की यह चेन...

...यह मेरी मदद कर सकती है!
जब तक कोई कुछ समझ पाता तब तक ध्रुव ने लंगर चेन की एक के ऊपर एक कुंडलियां बना दी थीं-

ये चेन भी घिग्घा का कुछ नहीं बिगाड़ पाएगी! घिग्घा इसकी भी घिग्घी बंधवा दे!
हर्र्र्र्म्फ!
घिग्घा बिना सोचे समझे ध्रुव की तरफ लपका

वह कुंडलियों के बीच ठीक वहीं पर जा उतरा जहां पर ध्रुव खड़ा था-
पर उसी एक पल में ध्रुव अपनी जगह छोड़कर लंगर की लिपटी चेन की तरफ लपक चुका था-
ध्रुव ने एंकर चेन का लीवर खींचने में एक पल का भी वक्त नहीं लगाया-
लीवर खिंचते ही एंकर पर लगा अवरोध हट गया-
और एंकर तेजी से नीचे गिरने लगा-
एंकर के गिरते ही लोहे की मोटी चेन खिंची, और कुंडलियां घिग्घा के पैरों पर आ कसीं-

जब तक घिग्घा कुछ समझ पाता वह इस्पाती शिकंजे में जकड़ा हुआ उल्टी तरफ लटक रहा था-
और एंकर के वजन को ऊपर उठाकर शिकंजा खोलना उसके बूते से बाहर की बात थी-

ध्रुव, विदूषक की तरफ मुड़ा-

अब तुम्हारी बारी है विदूषक!
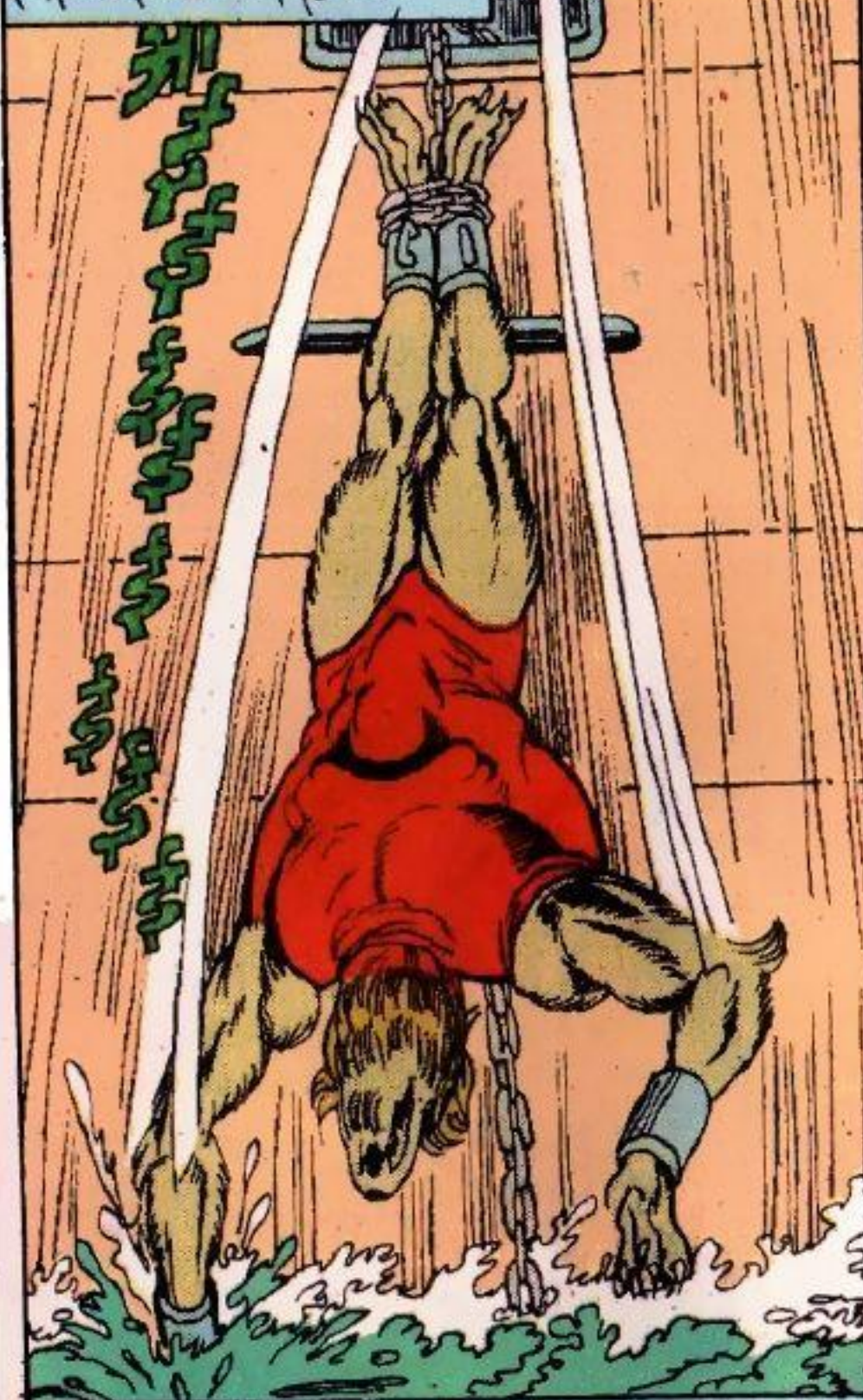
मेरी बारी? अरे, मैं तो विदूषक हूं। हर आइटम के बाद मेरी बारी फिर से आ जाती है!

तेरा आइटम खत्म हो गया! अब तेरी नहीं...

...अब मेरी बारी है बच्चे!

ओह! एक्सप्लोसिव रिंग! लेकिन ये वार भी तेरे काम नहीं आएगा, विदूषक!

धड़ाम

धाड़ड़ड़

क्योंकि मैं तेरे एक्सप्लोसिव रिंग्स अपने तक पहुंचने से पहले ही उड़ा दूंगा!

पिटट

धड़ाममममममम

तू कुछ भी कर ले ध्रुव! जीतेगा तो सिर्फ विदूषक!

तू जीतेगा नहीं, सिर्फ पिटेगा! बस एक बार तू मेरे हाथ आ जाए!

इस ध्रुव पर मैं न जाने कितने तरीके आजमा चुका हूं, पर ये है कि रुकने का नाम ही नहीं लेता! अब मैं इससे निपटूं या, हारून शाह से पैसे वसूल करूं! इस केबिन में छिपकर एक-दो सांस मार लूं, फिर कोई तरीका सोचता हूं!
विदूषक की किस्मत अवश्य ही बहुत तेज थी-

वरना वह उसी केबिन में न घुसता, जिसमें घुसकर श्वेता ने कपड़े बदले थे, और इस वक्त वह बेहोश पड़ी हुई थी-
अरे! यहां बेहोश कौन?...
...आहा! यह लड़की तो वही है! इससे पता चल सकता है कि हारून शाह कहां पर है! ...नहीं, नहीं! इस वक्त ध्रुव से पीछा छुड़ाना ज्यादा जरूरी है!

समझ गया! अब ऐसा काम करूंगा कि ध्रुव से पीछा भी छूट जाएगा, और हारून शाह से पैसे भी वसूल हो जाएंगे! हीहीही विदूषक अगर तू कॉमेडियन न होता तो पॉलीटीशियन होता!

ध्रुव विदूषक को तलाश कर रहा था-
विदूषक इधर ही आया था! यहां पर तो छिपने की कोई जगह नहीं है! इन केबिनों के अलावा! वह जरूर इसमें से ही किसी केबिन में है! पर किस केबिन में?
ढूंढ़ने की जरूरत नहीं है ध्रुव! मैं यहां हूं इस लड़की के साथ! और इसके शरीर पर मेरी एक्सप्लोसिव रिंग्स कसी हुई हैं! जिसको सिर्फ मैं ही उतार सकता हूं! अगर किसी और ने इनको उतारने की कोशिश की...
...तो इसके चिथड़े उड़ जाएंगे!
श्वेता!
तू जानता है इस लड़की को? वेरी गुड! तब तो तू मेरी बात जरूर मानेगा! ध्यान से सुन!

अब तू मुझे हारून शाह से वह दो करोड़ की पेंटिंग लाकर देगा, जिसे वह अभी- अभी स्मगल करके इस यॉट पर लाया था। मैं तुझे तीन घंटे की मोहलत देता हूं!

तीन घंटे बाद इस लड़की के बदन पर कसी 'एक्सप्लोसिव रिंग्स' फट जाएंगी। और हां, यह रिंग्स निकालने की कोशिश मत करना। वरना यह रिंग्स फट पड़ेंगी और इस लड़की के चिथड़े उड़ जाएंगे!

अब जाओ! ढूंढो हारून शाह को और हासिल करो उससे वह पेंटिंग! फिर वह पेंटिंग लेकर मेरे पास आओ, और वह भी अकेले। फिर मैं तुमको बताऊंगा ये एक्सप्लोसिव रिंग्स निकालने का तरीका! अब मैं चलता हूं। ठीक दो घंटे बाद मैं तुमको फोन करूंगा ... और बताऊंगा कि तुमको कहां आना है! अकेले!

बॉय, ध्रुव! फिर हंसेंगे!

ओह! इसने श्वेता को बंधक बनाकर मुझे बेबस कर दिया है। अब मैं इसको चुपचाप भागते देखने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता!...

... पर इसने मुझे सिर्फ तीन घंटे का वक्त दिया है। इतने कम समय में मैं हारून शाह जैसे माफिया डॉन को कैसे ढूंढूंगा, और उससे वह तस्वीर कैसे हासिल करूंगा! विदूषक ने तो मुझे कोई चाल चलने तक का वक्त नहीं दिया है!

ध्रुव! तुमने मुझे खबर क्यों भेजी थी? क्या हो रहा था यहां पर?

और... और श्वेता को क्या हुआ है?

ओह, पापा!
और फिर ध्रुव कमिश्नर राजन को सारी देखी-सुनी कहानी सुनाता चला गया-
ओह समझा! पर उस तस्वीर का क्या चक्कर है? और ये भी समझ में नहीं आया कि वह चंडिका बीच समुद्र में आ कहां से गई और फिर एकाएक कहां चली गई?
चंडिका न कहीं से आई थी और न ही कहीं गई! चंडिका यहीं है। श्वेता ही चंडिका है पापा!
क्या बात कर रहे हो ध्रुव?
श्वेता चंडिका कैसे हो सकती है?
मुझे यह शक तो बहुत पहले से था पापा! पर आज यह शक यकीन में बदल गया है। डॉक्टर पारिख के अनुसार उस जानवर घिग्घा के आते ही श्वेता भाग गई थी, और फिर चंडिका आ गई थी। अचानक घिग्घा ने चंडिका पर हमला किया था, लेकिन ये देखिए श्वेता के चेहरे पर पंजों के निशान हैं जबकि ये घिग्घा के सामने आई ही नहीं!
हे भगवान! इतना बड़ा रहस्य हमको आज तक पता नहीं चला!
वह इसलिए क्योंकि यह रहस्य कभी था ही नहीं!
कौन?
चंडिका! असंभव! यह नहीं हो सकता! तुम चंडिका नहीं हो सकती!
क्योंकि... क्योंकि चंडिका तो श्वेता है!
चिल्लाने से क्या होगा ध्रुव?
सच तो तुम्हारी आंखों के सामने खड़ा है!

और रही श्वेता के चंडिका होने की बात तो चंडिका तो एक भावना है। अपने आपको अत्याचारियों से कमजोर महसूस न करने की भावना! यह भावना जिस कन्या या स्त्री के दिल में जागृत हो जाए तो वह अपने आप ही चंडिका बन जाती है!
ओह! मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है। पर... अगर तुम श्वेता नहीं हो तो तुम कौन हो?
चंडिका! ही ही ही!
ओफ! मैं भी किससे बहस कर रहा हूं! खैर, तुम यहां पर हमसे पहले आई थी चंडिका!

विदूषक किसी पेंटिंग की बात कर रहा था। तुम जानती हो कि वह किस पेंटिंग की बात कर रहा था!
सर! ये दोनों यॉट के इंजिन रूम में छिपे बैठे थे!

ये दोनों जरूर हारून शाह के ही आदमी होंगे! बताओ, इस यॉट पर कोई पेंटिंग लाई गई है या नहीं?
हम दोनों ड्राइवर और मेन्टेनेन्स वाले हैं सर! हमको न तो हारून शाह के बारे में पता है और न ही किसी पेंटिंग के बारे में!
उहूं! क्यों झूठ बोल रहे हो? पेंटिंग है और इसी यॉट में है!
और संयोग से इसी केबिन में है!

चंडिका के हाथ एक तरफ की दीवार पर फिसलने लगे-
और उसने न जाने किस चीज को दबाया-

कि दीवार एक तरफ से दरवाजे की तरह खिसकती चली गई! अंदर एक अलमारी सी बनी हुई थी। और उसी अलमारी के एक खाने में रखी हुई थी-
पेंटिंग! यह रही वह पेंटिंग!

इनकी बात सही है चंडिका! मैं भी यह जानना चाहता हूं कि तुमको यह कैसे पता लगा कि यहां पर एक अलमारी है और पेंटिंग उसी अलमारी में है!

इस पर दिमाग लगाने के बजाय, श्वेता को तुरंत अस्पताल पहुंचाओ!
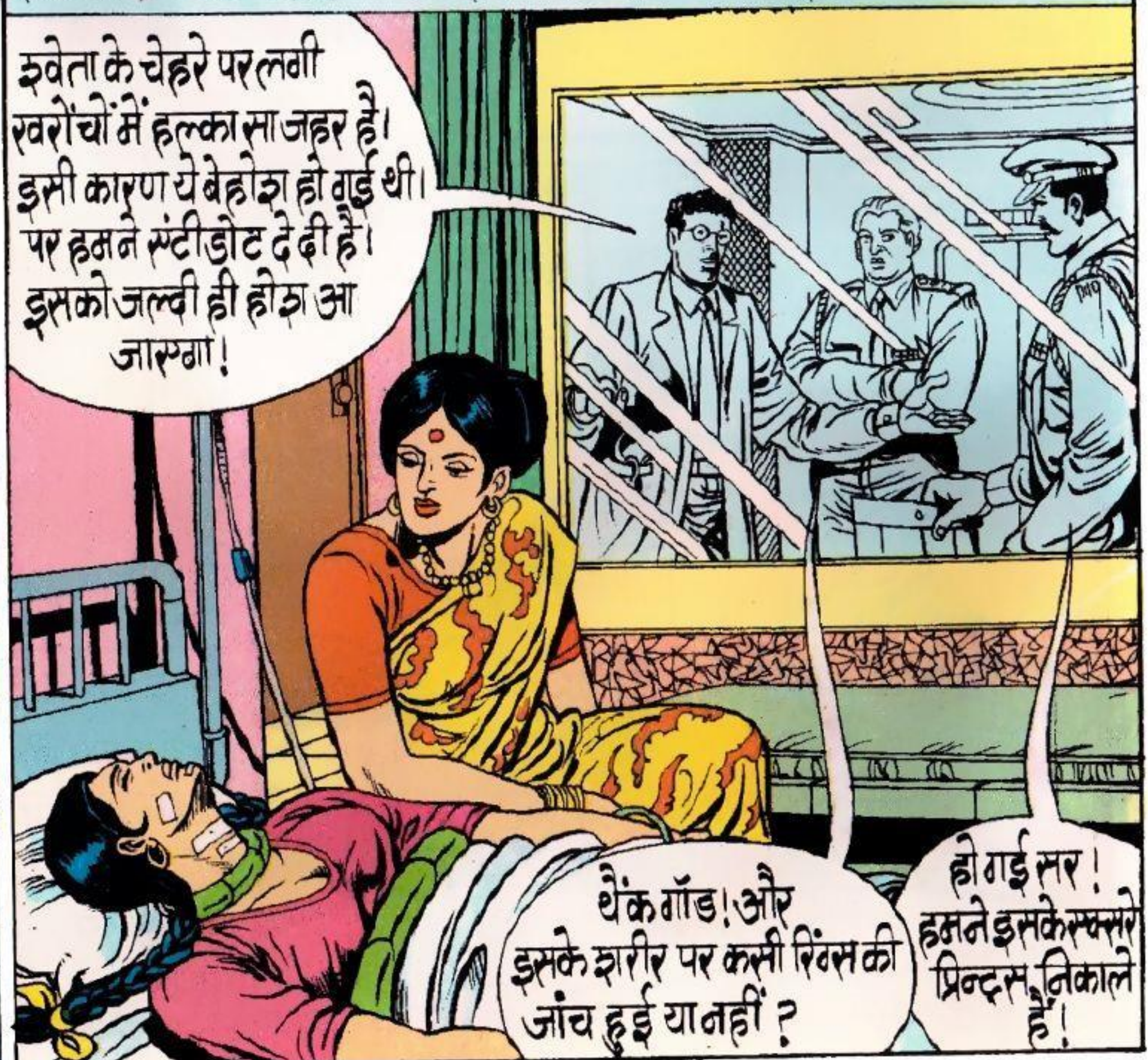
ब्लैकपियर तो दक्षिणी राजनगर के समुद्र तट पर है! वहां पर पहुंचने में मुझे ज्यादा वक्त नहीं लगेगा। यानी मैं जो योजना बना रहा हूं, उसे पूरा करने के लिए मेरे पास काफी वक्त है।

किस सोच में पड़ गए ध्रुव? कहां चलना है? चलो, मैं तो बेताब हो रही हूं!
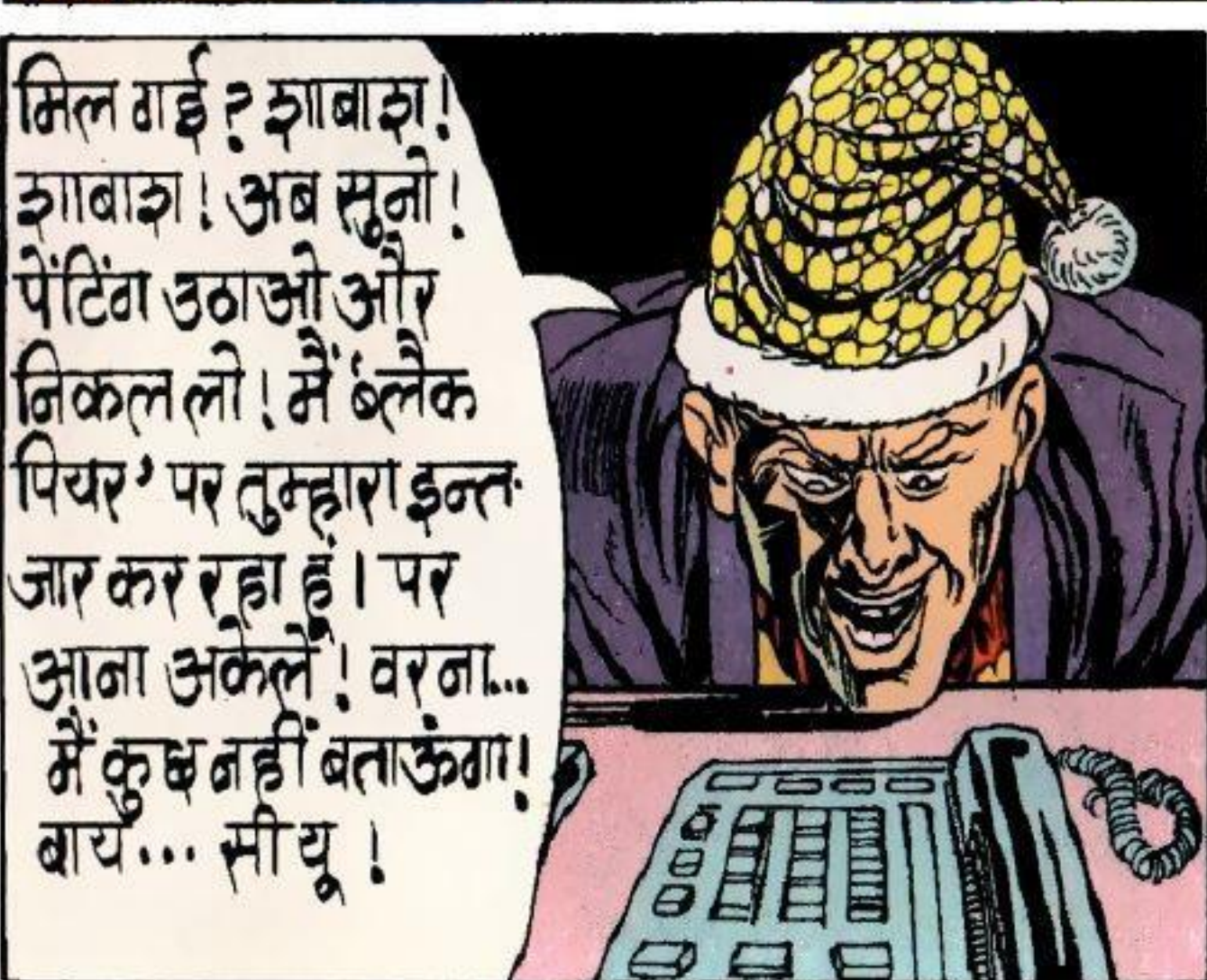
यानी मैं खामखाह इन्तजार कर रही थी! तुमको मैं विदूषक के पास अकेले जाने नहीं दूंगी!

'हम' नहीं सिर्फ 'मैं' जाऊंगा चंडिका! तुम मेरे साथ नहीं जाओगी!

कहीं विदूषक तुमसे यह पेंटिंग हासिल करने में कामयाब हो गया तो तुम भी एक अपराध में शामिल हो जाओगे। क्योंकि यह पेंटिंग तस्करी द्वारा लाई गई पेंटिंग है। मैं ये पेंटिंग तुम्हारे हवाले नहीं करूंगी। या तो तुम खाली हाथ जाओगे या मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी!
ऐसा नहीं हो सकता! चंडिका! विदूषक ने मुझसे अकेले आने को कहा है, और मैं अकेला ही जाऊंगा...
...और वह भी ये पेंटिंग लेकर!
कभी नहीं ध्रुव! विदूषक से मुझे भी हिसाब चुकाना है! और चंडिका अपना हिसाब पूरा किए बगैर नहीं रुकती!
ओऽऽऽह!
आई एम सॉरी चंडिका!
इस बार अपना हिसाब उधार खाते में लिख लो!
क्योंकि इस बार तो मैं अकेले ही जा रहा हूं!
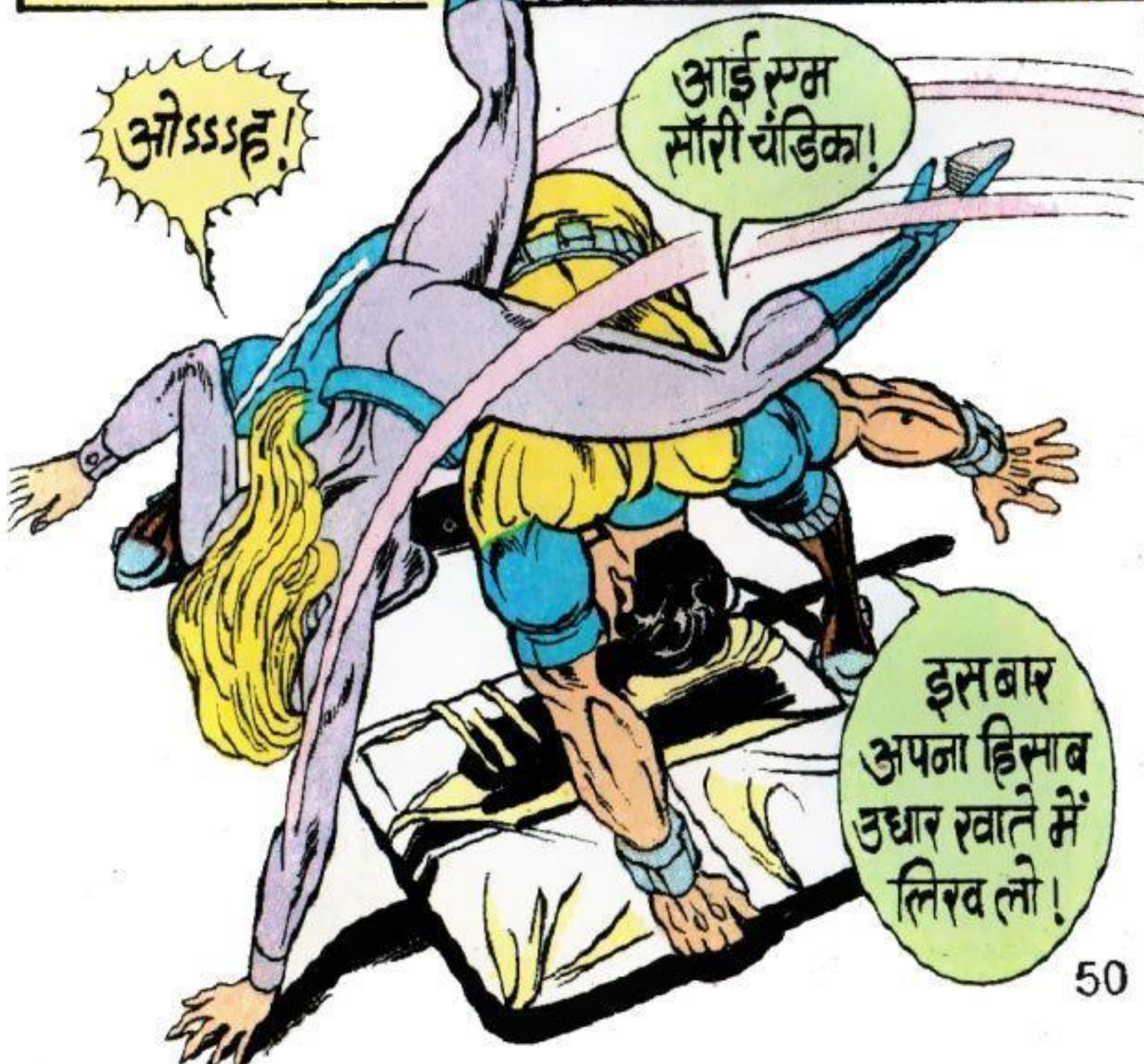
ब्लैक पियर तक पहुंचने में ध्रुव ने ज्यादा समय नहीं लगाया-
यह रहा ब्लैक पियर! सामने लकड़ी का एक मकान बना दिख रहा है। जरूर यही विदूषक का अड्डा होना चाहिए!
वेलकम, ध्रुव!

यह कौन? ओह! एक खिलौना बिल कुल विदूषक जैसा!
हां! इसकी आंख में लगे कैमरे की मदद से मैं तुमको देख रहा हूं। और इसके अन्दर लगे स्पीकर की मदद से तुमसे बात कर रहा हूं। इसके पीछे-पीछे चले आओ!

ऊंचे-नीचे रास्तों को कुशलता से पार करता हुआ वह खिलौना-
ठक ठक ठक

ध्रुव को विदूषक तक ले आया-
आओ, आओ ध्रुव भइया! पेंटिंग लाने के लिए मेरी बधाई ले लो, और यह पेंटिंग मुझे दे दो!
इतनी जल्दी क्या है, विदूषक! पहले मुझे श्वेता के शरीर पर कसे बमों को निष्क्रिय करने का तरीका बताओ!
उसके बाद मैं यह पेंटिंग तुमको सौंप दूंगा!
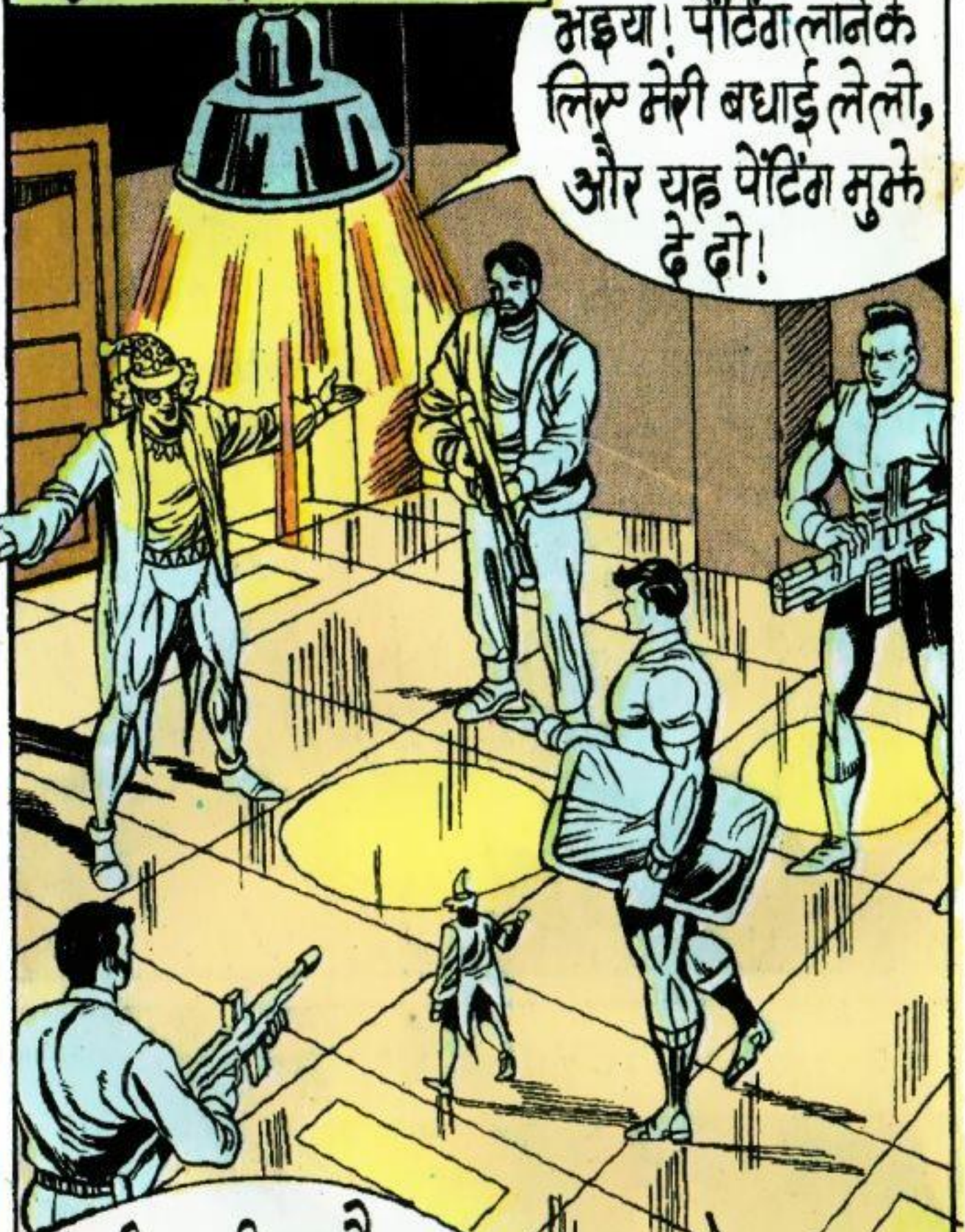
अरे, नहीं, नहीं! मुझे पागल समझा है क्या? पहले मैं यह पेंटिंग देखूंगा इसे टेस्ट करूंगा कि कहीं ये नकली तो नहीं है और फिर तुमको बताऊंगा 'बम-छल्ले' उतारने का तरीका!
मुझे तुम्हारा भरोसा नहीं है विदूषक! इसीलिए पहले तरीका बताओ। फिर मैं वह तरीका स्टार ट्रांसमीटर द्वारा डॉक्टरों को बताऊंगा। और जब वे श्वेता के शरीर से बम उतार लेंगे तब मैं तुमको यह पेंटिंग दूंगा!
आहा! तूने तो मुझे सचमुच में पागल समझ लिया!
छीन लो इससे यह पेंटिंग!
अगले ही पल ध्रुव पर गोलियों की बौछार शुरू हो गई-
हम इसका बदन छलनी बना देंगे बॉस!
तड़
तड़ तड़
तड़
चलाओ, चलाओ! मेरा क्या नुकसान होगा, लेकिन इस पेंटिंग का सत्या-नाश जरूर हो जाएगा!
अरे मूर्खों, गोलियां मत चलाओ! वरना यह दो करोड़ की पेंटिंग दो कौड़ी की रह जाएगी!
गोलियों की बौछार रुकते ही ध्रुव का काम काफी आसान हो गया-
धाड़
उन तीन मामूली गुंडों के लिए—
तड़ाक
ध्रुव के एक-एक वार ही काफी थे-
अब विदूषक?
म... मेरे पास मत आना! नहीं तो मैं कुछ नहीं बताऊंगा! दूर रहो दूर!
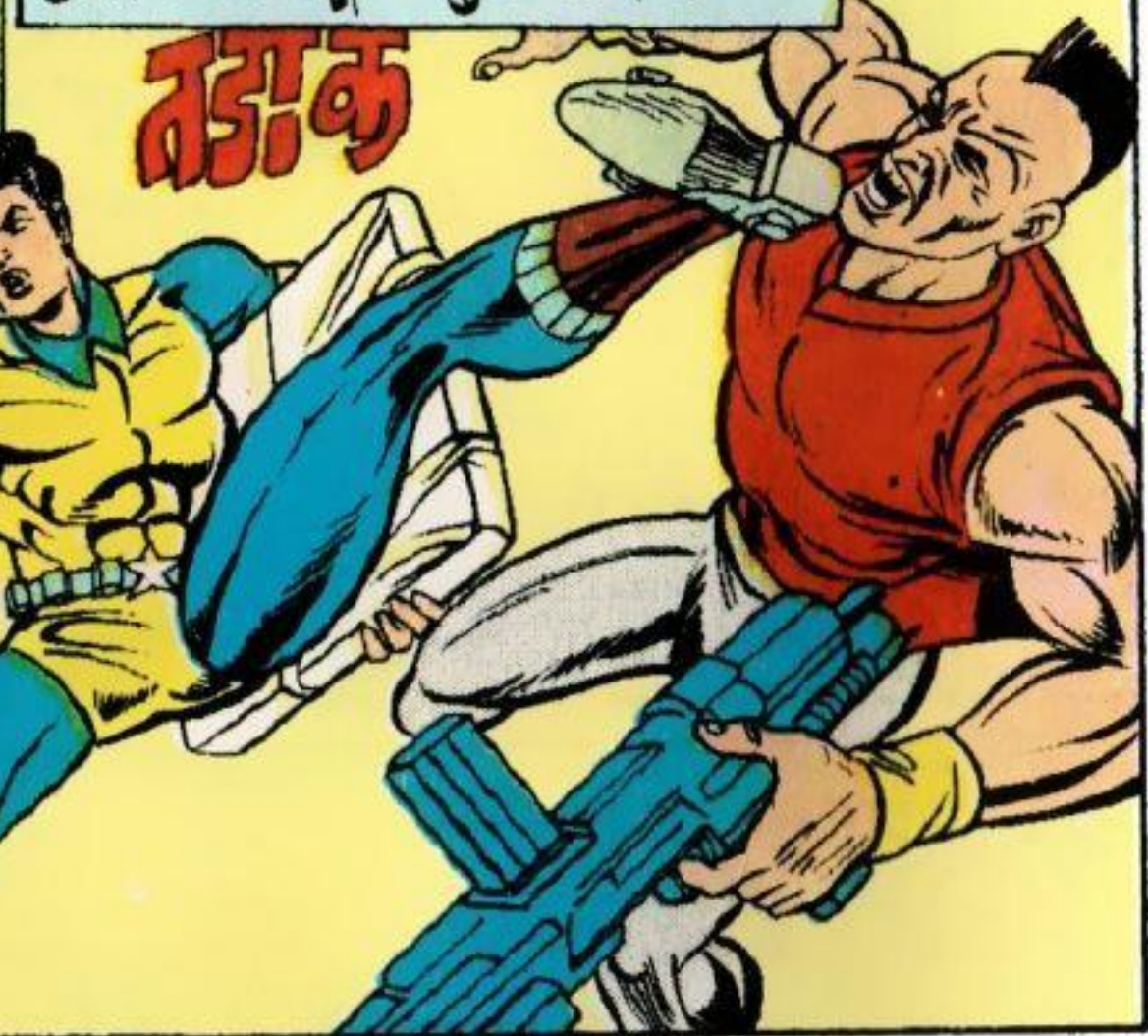
ध्रुव समझ गया कि विदूषक को दबोचने का यही मौका है-
?
वह आगे बढ़ा और उसी पल विदूषक ने भी आगे लपककर पेंटिंग को थाम लिया-
इससे पहले कि ध्रुव कुछ समझ पाता उसके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई-
और पेंटिंग, विदूषक के हाथ में रह गई-
हा हा हा हा! देखा विदूषक की चाल! मैं जानता था कि मेरे आदमी तुझे नहीं हरा पाएंगे, पर उनको हराकर तू यह जरूर समझेगा कि तू जीत गया! और फिर तू मुझे बेबस समझकर मुझे पकड़ने के लिए आगे बढ़ेगा, और ठीक उसी जगह पर पैर रख देगा, जहां मैं चाहता था!
अब बुलेटप्रूफ शीशे से बने गोले में लॉफिंग गैस भरेगी, और तू हंस-हंसकर मर जाएगा!

... और तेरे पास इस मौत के गोले से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है।...
... अब तो भई तुम्हारे अगले जन्म में ही हमारी मुलाकात होगी!
ध्रुव को विदूषक की बात की सत्यता का एहसास हो रहा था-
शीशे की इन दीवारों पर मैं बगैर 'सक्शन कैप' के नहीं चढ़ सकता!...
... और दुर्भाग्यवश इस वक्त मेरी बेल्ट में 'सक्शन कैप' नहीं है!
गैस आने वाले रास्ते से बाहर निकलने की कोशिश करना बेकार है। क्योंकि यह जाली काफी मजबूत लगती है। एसिड कैप्सूल भी इस जाली को जलाने में काफी समय लेगा। और गैस भरने की स्पीड देखकर लग रहा है कि मेरे पास इतना वक्त नहीं है!
बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता वही है जहां से मैं नीचे गिरा हूं! पर वहां तक मैं पहुंचूंगा कैसे ?...
... मैं वहां तक स्टारलाइन फेंक तो सकता हूं, पर उसे अटकाने के लिए कोई जगह नहीं है!
इधर ध्रुव एक कशमकश में उलझा था-

और उधर विदूषक का रास्ता साफ हो चुका था-
आहा! बड़ा इन्तजार करवाया इस पेंटिंग ने! अब मैं इसे जी भरकर देखूंगा! अरे, जल्दी खुल!

क्या करेगा पेंटिंग को खोलकर विदूषक?
ताड़.
आऽऽह!

क्योंकि तेरी किस्मत का ताला तो बन्द हो चुका है। बस, अब तो तेरे बन्द होने की बारी है!
तू! क्या नाम है तेरा... हां, चंडिका! मेरे पीछे क्यों पड़ गई है, चुड़ैल? मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है?
तूने मेरा जो कुछ भी बिगाड़ा है, उसे तो मैं सुधार लूंगी। पर मैं तेरा हुलिया इतना बिगाड़ दूंगी कि पूरी दुनिया के प्लास्टिक सर्जन मिलकर भी तेरा हुलिया सुधार नहीं पाएंगे!
तड़ाक

ध्रुव को पेंटिंग मैंने ही दी थी! और वह इसलिए ताकि उसके जरिए मैं तुझ तक पहुंच सकूं। अब तुझे यह पेंटिंग नहीं, बिजली के झटके मिलेंगे। तेरा दिमाग ठिकाने लगाने के लिए!
तू बहुत गुस्से में बात कर रही है!

और ध्रुव भी विदूषक की चाल से बाहर निकलने की सोच रहा था–

इस गोले से बाहर निकलने का तरीका मुझे समझ में आ गया है। विदूषक ने इसको मौत का गोला नाम देकर मेरी बड़ी मदद कर दी है!

मैं अपने 'स्केटस शूज' की मदद से इस गोले में वैसे ही घूम सकता हूं जैसे सर्कस में मोटर साइकल सवार 'मौत के कुएं' में घूमते हैं 'मौत का गोला' याद आते ही मुझे मौत के कुएं की याद आ गई थी!

अब सिर्फ इतनी स्पीड पकड़नी बाकी है...

...कि मैं इस मौत के गोले में गोल-गोल घूमकर...

...उस छेद तक पहुंच सकूं जहां से मैं नीचे गिरा था!

गति पकड़ते ही ध्रुव ने अपने बदन को एक कलाबाजी दी–

ता ड़.

और छेद पर लगे ढक्कन के टुकड़े-टुकड़े हो गए–

ध्रुव आजाद हो चुका था-
अरे! य... यह क्या? तुझ पर मेरी 'लॉफिंग गैस' का असर नहीं हुआ?
मैं जानती थी कि तू इस गैस का उपयोग जरूर करेगा विदूषक!
इसीलिए मैं पहले से ही नाक में फिल्टर पहनकर आई थी!

आऽऽह! धोखा! और यह ध्रुव भी बच गया! अब मैं मारा गया! हंड्रेड परसेंट मारा गया!
नहीं विदूषक! अब तुम बच गए!

क्योंकि मैं चंडिका को तुम्हें पीटने नहीं दूंगा!
आऽऽह! यह क्या कर रहे हो, ध्रुव? अब विदूषक हमारे चंगुल में है। फिर भी तुम इसे बचने का मौका देना चाहते हो?
तड़ाक
बचने का नहीं, बल्कि पेंटिंग देखने का मौका देना चाहता हूं चंडिका! मैंने इससे वादा किया था।
और ध्रुव अपना वादा कभी नहीं तोड़ता!

ऐसा है तो अब मुझे ही तुमको रोकना पड़ेगा ध्रुव!
ध्रुव और चंडिका आपस में उलझ पड़े-
धाड़
और विदूषक को पेंटिंग उठाने का मौका मिल गया-

आहा! यह तो वही पेंटिंग है! और एकदम असली है। वाह वा! अब जब तक ये दोनों आपस में ही झगड़ रहे हैं, मैं आराम से यहां से निकल...
... आऽऽऽह! य... यह मुझे क्या हो रहा है? मेरे बदन में एकाएक तेज जलन क्यों हो रही है?
बस, बस चंडिका! टाइम आउट! मेरा काम हो गया!
मैं चाहता था कि विदूषक ये पेंटिंग पकड़कर देखे और वह इसने देख लिया।
मैं कुछ समझी नहीं!
आऽऽऽईईई
अभी समझ जाओगी! आओ!
मैं जब तुमसे पेंटिंग छीनकर भागा था, तो बीच में थोड़ी देर के लिए मैं कमांडो हैडक्वार्टर में रुका था। वहां पर मैंने फ्रेम पर एक तेज जहर का पेंट कर दिया था!
और विदूषक के हाथों के रोम छिद्रों से होता हुआ वह जहर अब इसके शरीर में पहुंच चुका है!
समझ गई!
हाय! तब तो मैं मर गया! अब मैं नहीं बचूंगा! सुनो, मेरे मरने के बाद...
अभी नहीं! आधे घंटे में मरोगे विदूषक! वैसे मेरे पास इस जहर का काट भी है। चलो, एक सौदा कर लेते हैं! तुम मुझे श्वेता के बदन पर कसे बम छल्लों को उतारने का तरीका बताओ, और मुझसे इस जहर का काट लेकर पी लो!
आईऽऽऽ बड़ी तेज जलन हो रही है! अरे! वह कोई बम-वम नहीं है। सिर्फ मैकेनिज्म वाले छल्ले हैं! उनमें कोई विस्फोटक नहीं भरा है! आरी से काटकर उतार लो!
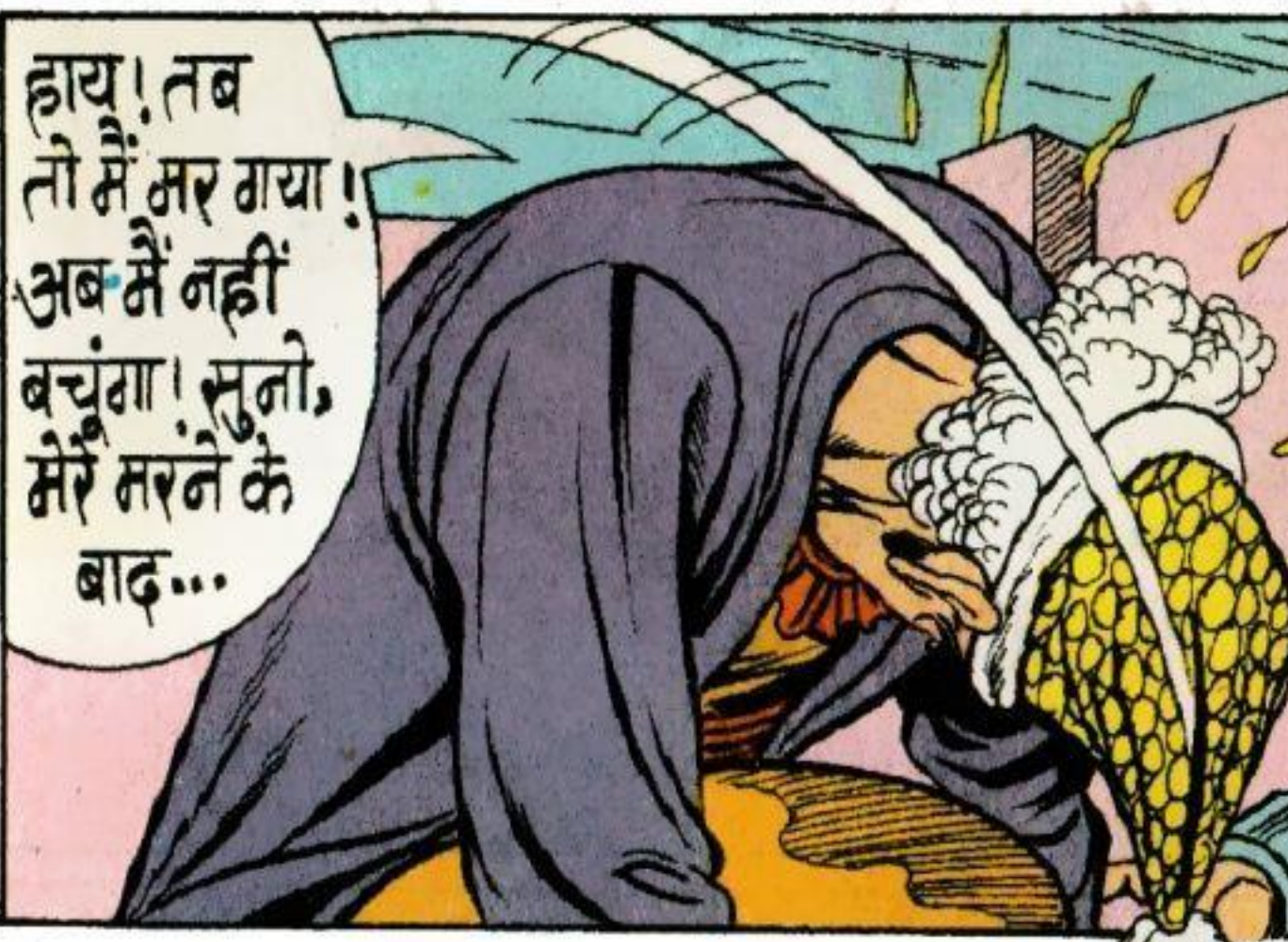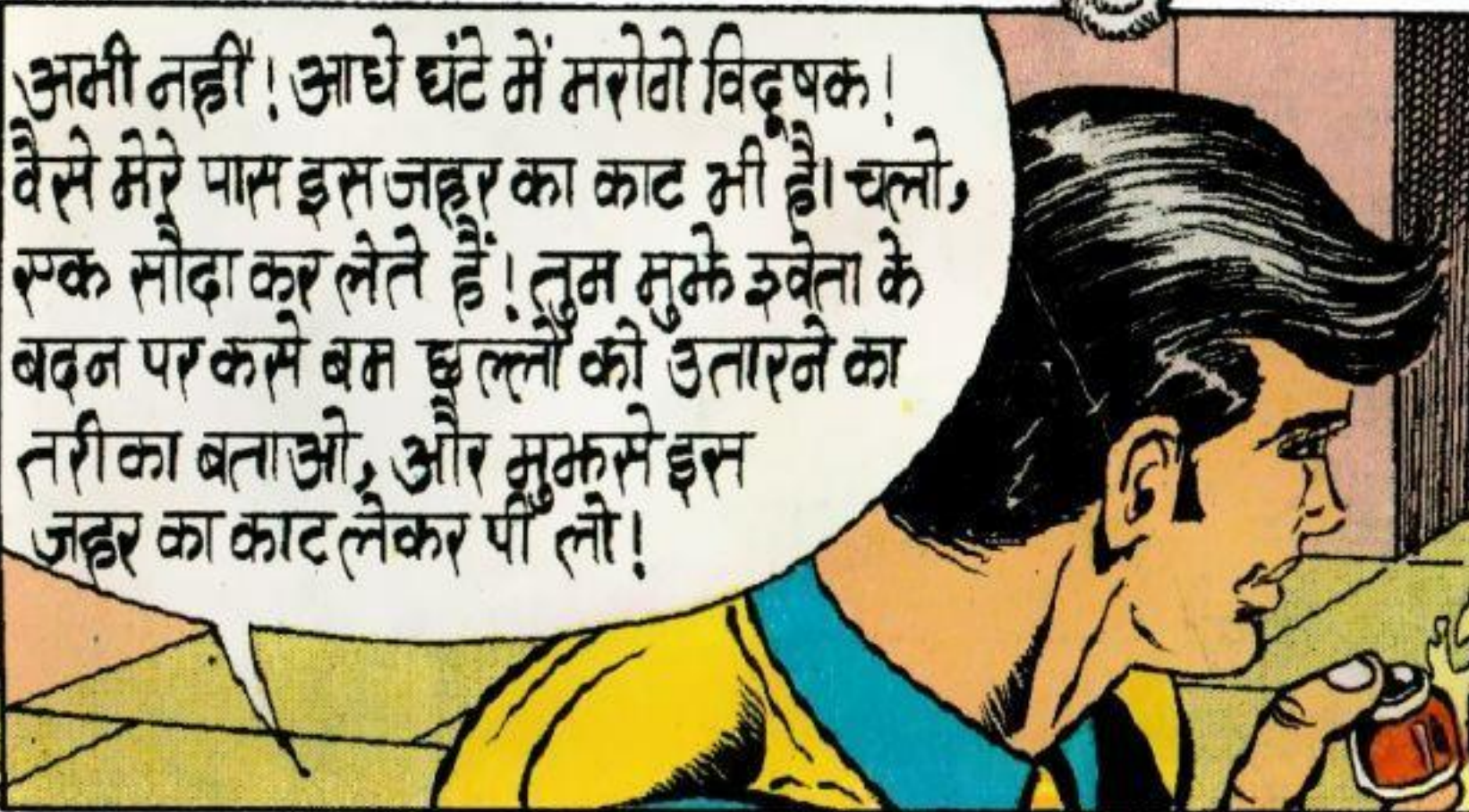
और फिर- अस्पताल में-

बड़ी मुश्किल से तुमसे अकेले में मिलने की इजाजत मिली है श्वेता! मैं यह नहीं चाहती थी कि तुमको असलियत बताए बगैर मैं उड़न छू हो जाऊं!

खर्र्र्र
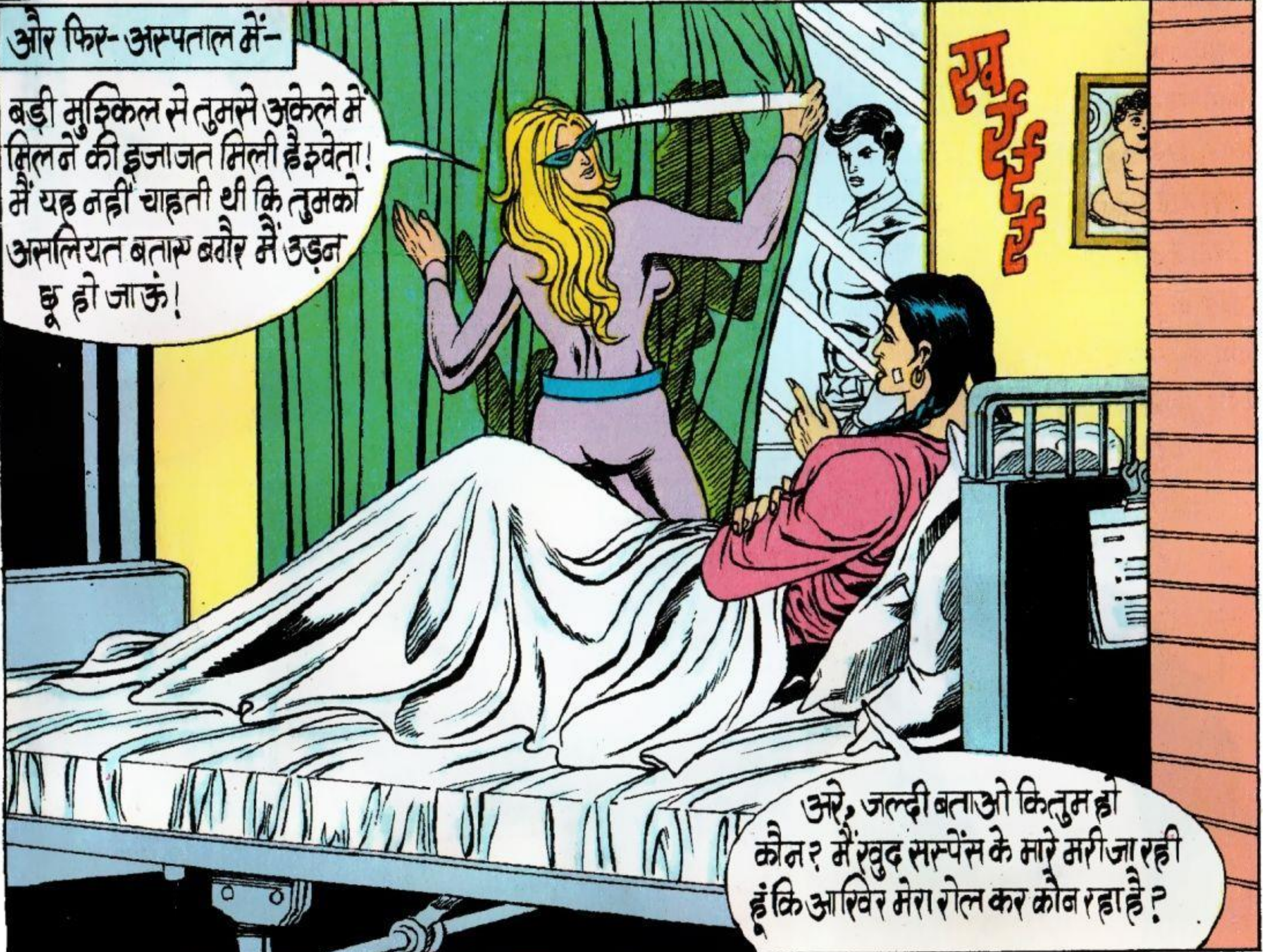
अरे, जल्दी बताओ कि तुम हो कौन? मैं खुद सस्पेंस के मारे मरी जा रही हूं कि आखिर मेरा रोल कर कौन रहा है?

ये मैं हूं, श्वेता!

नताशा!

ओ नताशा! थैंक गॉड, ये तुम हो! अब चिन्ता की कोई बात नहीं है। क्योंकि तुम इकलौती ऐसी शख्स हो जो मेरा रहस्य पहले से जानती हो!

पहले मुझे पता नहीं था कि ये दूसरा गैंग किसका है! पर विदूषक के भागने की खबर सुनते ही मैं समझ गई कि यह विदूषक का ही काम है। मैं विदूषक के बारे में जानती थी। इसीलिये जब याट पर पेंटिंग की डील होने वाली थी तो मैं दूर एक स्टीमर से नाइट विजन बाइनाकूलर द्वारा सारे घटनाक्रम पर नजर रखे हुए थी। क्योंकि मुझे आभास था कि विदूषक इस डील में अड़ंगा जरूर डालेगा। तुमको वहां देख कर मैं चौंक उठी! पर मुझे भरोसा था कि मेरे आदमी स्थिति संभाल लेंगे। पर वे ऐसा नहीं कर पाए। और जब तक मैं वहां पर पहुंचने की सोचती, तब तक ध्रुव वहां पर पहुंच गया!

अब तो वहां पर नताशा के जाने का सवाल ही नहीं था। पर जब विदूषक तुमको रिंग्स में कैद करके भागा तो मैंने एक तीर से दो शिकार करने की सोची। मैं जानती थी कि तुम ही चंडिका हो। और जब मैं चुपचाप यॉट पर पहुंची तो मुझे तुम्हारा 'पर्स' एक केबिन के फर्श पर गिरा हुआ मिल गया! बस योजना बन गई। मैं चंडिका के रूप में ध्रुव के सामने पहुंच गई। और उसी के हाथों अपने दुश्मन विदूषक को पागलखाने पहुंचा दिया!...

समाप्त.

GREEN PAGE-71
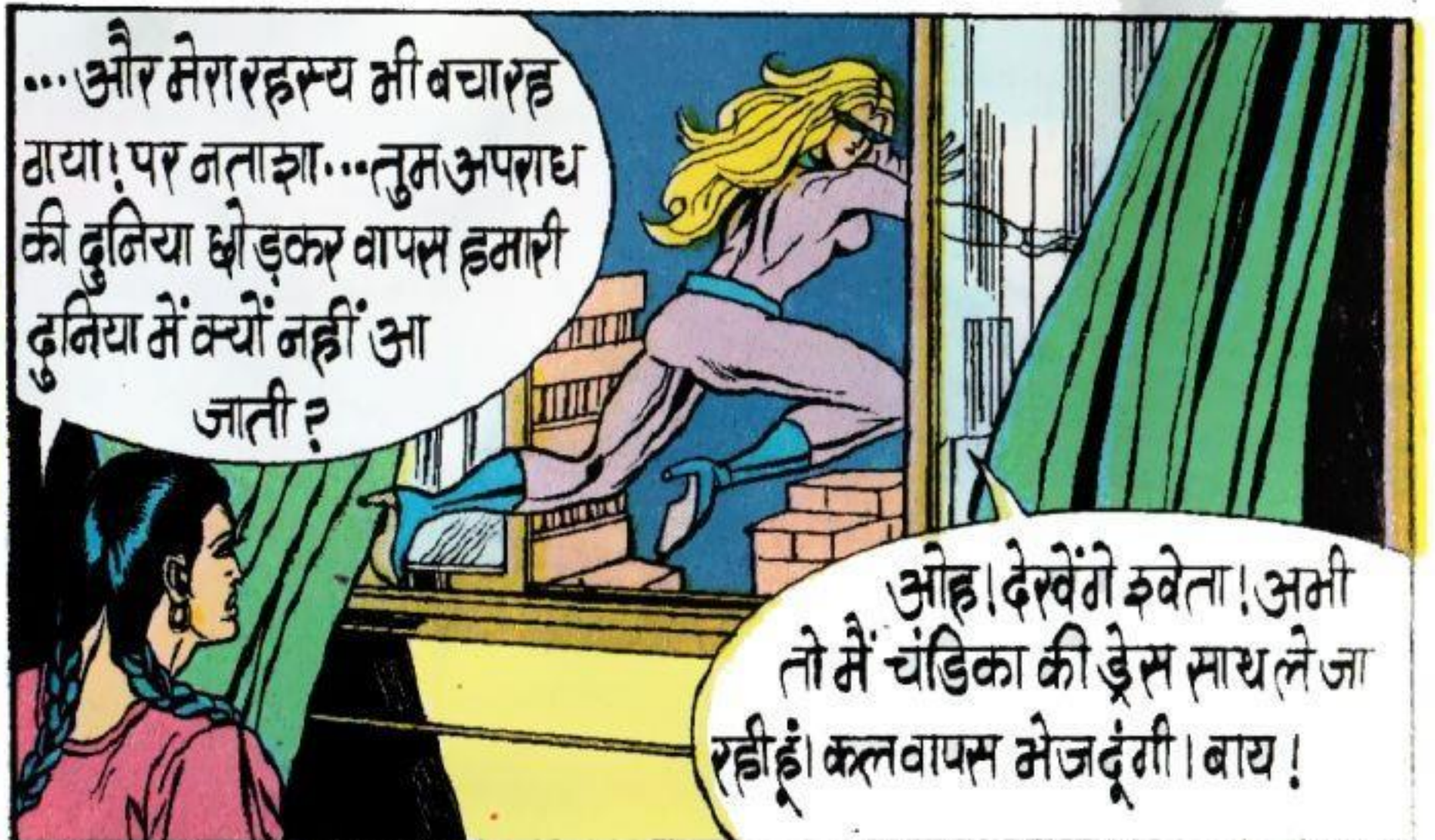
प्रिय पाठको, नमस्कार!

होली की शुभकामनाएं। यूं तो रंगों के इस पर्व से जुड़ी कई कहानियां व आस्थाएं हैं लेकिन एक खास बात इस पर्व की यह है कि रंगों में रंगे सभी चेहरे एक जैसे लगते हैं, ना गोरे-काले का भेद रहता है, ना जात-पात का, इंसान सिर्फ इंसान नजर आता है। रंगों के इस आदान-प्रदान में दुश्मन भी दोस्त बन जाते हैं और एक दूसरे पर रंग लगाकर सभी यह कहते हैं होली है। आपने **दुश्मन** पढ़ा। प्रस्तुत विशेषांक में भी ध्रुव की दुश्मन नताशा उसको विदूषक से बचाती है साथ ही अपनी सहेली श्वेता का भेद खुलने से भी बचाती है। मुझे विश्वास है कि हमारे सभी पाठक भी दुश्मनी में नहीं, दोस्ती में विश्वास रखते हैं, वह दोस्ती जो दोस्त का साथ देने की सीख देती है। यह सही कहा जाता है कि दोस्त की पहचान जरूरत पड़ने पर ही होती है। जो जरूरत में साथ दे वही सच्चा दोस्त होता है और राज कॉमिक्स के पाठक तो सभी के दोस्त हैं। क्योंकि राज कॉमिक्स व राज कॉमिक्स के सभी हीरो हमेशा जरूरत में साथ देने की ही सीख देते हैं। तभी तो राज कॉमिक्स के सभी हीरोज को बच्चों का दोस्त कहा जाता है। भारतवासियों में दोस्ती की भावना कूट-कूट कर भरी है। भारतवर्ष का इतिहास दोस्ती की मिसाल है। हमारा भारत किसी का दुश्मन नहीं है। हम दोस्त हैं और दोस्त रहेंगे। आज हमारे देश में क्रूर राजनीति के चलते कुछ वर्गों में हिंसा फैलाई जा रही है लेकिन हमारा विश्वास है कि हर भारतवासी सर्वधर्म समान भारत में निष्ठा रखते हुए इन गलतफहमियों को दूर करेगा व हमारे राष्ट्रनेता भी जल्द से जल्द दोषियों को दण्ड देकर इन दुर्भावनाओं को समाप्त करके आपसी सदभावना को बढ़ाएंगे। चाहें इसके लिए उन्हें पड़ोसी राष्ट्रों में बस यात्रा करनी पड़े या अपने राष्ट्र में पदयात्रा करनी पड़े। कड़े कदम उठाने पड़ें या सहृदयता दिखानी पड़े। हमें आक्रमण नहीं दोस्ती चाहिए, हमें एटम बम नहीं दोस्ती चाहिए। प्रिय पाठको **दुश्मन** आपको कैसी लगी, हमें अवश्य लिख कर भेजें।

कांटेस्ट के उपहारों के विषय में हमें कई शिकायती पत्र मिलते हैं कि हमारे कुछ कांटेस्ट विजेताओं को उनके पुरस्कार बहुत देर से प्राप्त होते हैं। उनके पीछे हमारे प्रतियोगी पाठकों की भी गल्तियां होती हैं। आप सभी अपने शिकायती, सुझाव या प्रतियोगिता पत्रों में अपने पते साफ-साफ लिखा करें व हर पत्र पर पत्र भेजने की तारीख जरूर लिखा करें। कुछ पाठक पत्र तो भेज देते हैं पर उस पर उनका पता ही नहीं होता। इसके अलावा हमारे देश की डाक सेवा के विषय में सभी जानते हैं। आपके भेजे पत्र ही जब हमें दस, पंद्रह या तीस दिन बाद मिलेंगे और फिर हमारे भेजे पत्र भी आपको इतने ही दिन बाद मिलेंगे तो वक्त तो लगेगा ही, साथ ही कुछ देरी हमारे कार्यालय की कार्यवाही में भी होती ही है। फिर भी हम हमेशा आपके सभी पत्रों का जवाब जल्दी से जल्दी देने की हर संभव कोशिश करते हैं।

प्रिय पाठको, इन कांटेस्टों व पुरस्कारों के पीछे हमारी भावना केवल यही है कि हम अपने पाठकों की बौद्धिक क्षमता व बौद्धिक स्तर बढ़ाना चाहते हैं व साथ ही उनके दिल में यह भावना विकसित करना चाहते हैं कि उनकी अपनी राज कॉमिक्स अगर पुरस्कारों की घोषणा करती है तो ईमानदारी से देती भी है। यानी राज कॉमिक्स पढ़ने वाले प्रत्येक पाठक में ईमानदारी करने का व ईमानदारी चाहने का जज्बा हो। अगर हम आपको बार-बार सच्चाई व ईमानदारी की शिक्षा देते हैं तो हम खुद पुरस्कार न देकर कैसे ईमानदारी से पीछे हट सकते हैं। 87 प्रतिशत से ऊपर अंक लाने वाले वे पाठक जो हमें अपने प्रमाणपत्र स्कूलों से सत्यापित करवा कर भेज चुके थे व जिनको हमने पत्र द्वारा पुरस्कार के लिए चुने जाने के लिए सूचित किया था और साथ ही पुरस्कार के लिए सूची पत्र भेजा था उनमें से सभी विजेताओं को हम पुरस्कार भेज चुके हैं जो रह गए हैं वे डाक में विलम्ब के कारण या उनमें से कुछ के पते ही हमारे पास पूरे नहीं हैं इस कारण। नागराज फैन क्लब के सभी सदस्य जिन्होंने अभी तक वर्ष 1999 के लिए अपनी सदस्यता रिन्यू नहीं कराई है वे अतिशीघ्र 50 रुपये का मनीआर्डर भेजकर अपनी सदस्यता रिन्यू कराएं। कहीं आप इस अनोखे क्लब की सदस्यता से वंचित ना रह जाएं। पत्रव्यवहार इस पते पर करें: **ग्रीन पेज नं. 71, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084.**